



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 137]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 5, 2016/वैशाख 15, 1938

No. 137]

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 5, 2016/VAISAKHA 15, 1938

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी और संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 मई, 2016

(अंतिम जांच परिणाम)

**विषय :** इंडोनेशिया और विएतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "6 मि.मी. और उससे अधिक मोटाई के प्लेन मीडियम डेंसिटी फाईबर बोर्ड (एमडीएफ)" के आयातों पर पाटन-रोधी जांच – प्रकटन विवरण।

**फा.सं.14/23/2014-डीजीएडी.**—समय-समय पर यथा-संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथा-संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियम भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

1. यतः मेसर्स ग्रीनप्लाई इंडस्ट्रीज लिमिटेड और मेसर्स मंगलम टिम्बर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (आवेदकों) ने उपरोक्त अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन पत्र (जिसे याचिका भी कहा गया है) प्रस्तुत करके उनसे अनुरोध किया है कि वे इंडोनेशिया और विएतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "6 मि.मी. और उससे अधिक मोटाई के प्लेन मीडियम डेंसिटी फाईबर बोर्ड (जिसे आगे संबद्ध वस्तुएं अथवा एमडीएफ भी कहा गया है)" के आयातों पर पाटन-रोधी जांच शुरू करें।

2. यतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर दिनांक 7 मई, 2015 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी, जो कि भारत के राजपत्र आसाधारण में प्रकाशित हुई थी, जिसमें नियमावली के नियम 6 के उप-नियम (1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच की शुरुआत करने तथा आरोपित आयात के विद्यमान होने, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने तथा ऐसे पाटन-रोधी शुल्क का निर्धारण करने, जिसे यदि लगाया जाता है, तो क्या वह घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा, की सिफारिश करने का उल्लेख किया गया था।

**क. क्रिया-विधि**

3. इस जांच के संबंध में निम्नोक्त निर्धारित क्रिया-विधि का अनुसरण किया गया है :-

- (1) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 5 (5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले घरेलू उद्योग से ऐसा आवेदन पत्र प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित कर दिया है, जिसमें उसने पाटन-रोधी जांच शुरू करने का अनुरोध किया है।
- (2) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली नियम 6 (2) के अनुसार जांच शुरू करने के बारे में नई दिल्ली में संबद्ध देशों के दूतावासों को भी सूचित कर दिया था।
- (3) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध सूचना के अनुसार दिनांक 7 मई, 2015 की जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों से ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के साथ-साथ घरेलू उद्योग को भेज दी थी। साथ ही घरेलू उद्योग को भी जांच शुरू किए जाने के बारे में सूचित कर दिया गया था। इस जांच से संबंधित पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्राधिकारी को प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत कर दें और अपने लिखित विचारों से अवगत करा दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की प्रतियां, संबद्ध देशों के दूतावासों को ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ इस अनुरोध के साथ भेज दी गई थी कि वे संबद्ध देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को यह सलाह दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत कर दें।
- (4) उपरोक्त नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई याचिका के अगोपनीय वृत्तांत की प्रतियां, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को उपलब्ध करा दी गई थी। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाणों के अगोपनीय वृत्तांत, हितबद्ध पक्षकारों की जांच के लिए सार्वजनिक फाईल के रूप में खुले उपलब्ध करा दिए थे।
- (5) कुछ हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 22 जून, 2015 के पत्र द्वारा सभी हितबद्ध पक्षकारों के लिए प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत करने की समय-सीमा को बढ़ा कर 12 जुलाई, 2015 कर दिया था।
- (6) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को उनसे संबद्ध सूचना मंगाने के लिए निर्यातक की प्रश्नावलियां भेज दी थीं :-
  - (क) मेसर्ज अंडालन करया बरसामा पीटी
  - (ख) मेसर्ज ला मोबिला पन्नेल्ली पीटी
  - (ग) मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड
  - (घ) मेसर्ज एवरग्रीन फाईबर बोर्ड बरहाड (ईएफबी)
  - (ङ) मेसर्ज पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड
  - (च) मेसर्ज हांग डुयांग बम्बू एंड रेट्टन कंपनी लिमिटेड
  - (छ) मेसर्ज विएतानाम वुडन बोर्ड
  - (ज) मेसर्ज विटरनेक्सो लिमिटेड कंपनी
  - (झ) मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ लिमिटेड
  - (ञ) मेसर्ज किम टिन ग्रुप जेएससी लिमिटेड

- (7) संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करने वाले निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने प्रश्नावलियों के उत्तर प्रस्तुत किए हैं :-
- (क) मेसर्ज किम टिन एमडीएफ स्टॉक कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
  - (ख) मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
  - (ग) मेसर्ज पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड
  - (घ) मेसर्ज बीआरजी डोंगभा एमडीएफ लिमिटेड, विएतनाम
  - (ङ) मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड, इंडोनेशिया
  - (च) मेसर्ज एमडीएफ बीआरजी क्युयांग ट्रि वुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम
- (8) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (4) संबद्ध सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :-
- (क) मेसर्ज प्लाई प्वाईट, केरल
  - (ख) मेसर्ज लेबल सेल्स कोर्पोरेशन, केरल
  - (ग) मेसर्ज श्रीवरी ट्रेडर्स, तमिलनाडु
  - (घ) मेसर्ज कृष्णा पोलीवुड्स, तमिलनाडु
  - (ङ) मेसर्ज थामरापल्ली ब्रोदर्स, केरल
  - (च) मेसर्ज जैकसन्स विनीर्स एंड पेनल प्राईवेट लिमिटेड, केरल
  - (छ) मेसर्ज कालिंगा इम्पोर्टर्स एंड एक्सपोर्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, केरल
  - (ज) मेसर्ज विकटरी पोलीवुड डिस्ट्रीब्यूटर्स, केरल
  - (झ) मेसर्ज मेथ्यूसन्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट प्राईवेट लिमिटेड, केरल
  - (ञ) मेसर्ज फेरोक बोर्ड्स लिमिटेड, केरल
  - (ट) मेसर्ज आर. जे. मेटल्स, केरल
  - (ठ) मेसर्ज सी. एल. गुप्ता एक्सपोर्टर्स लिमिटेड, इंडिया
  - (ड) मेसर्ज वेनुगोपाला स्टेट इंडस्ट्रीज, आंध्र प्रदेश
  - (ढ) मेसर्ज स्पेसवुड फर्नीचर्स प्राईवेट लिमिटेड, नागपुर
  - (ट) मेसर्ज कुट्टी फलशडोर्स एंड फर्नीचर्स कंपनी प्राईवेट लिमिटेड
  - (ठ) मेसर्ज ऐसोसिएशन ऑफ फर्नीचर्स मेन्युफेक्चरर्स आफ इंडिया (एएफएमआई)
  - (ड) मेसर्ज इंडियन मोल्डिड पेनल शटर्स मेन्युफेक्चरर्स ऐसोसिएशन, नई दिल्ली
  - (ढ) मेसर्ज बालाजी इम्पेक्स, महाराष्ट्र
  - (ट) मेसर्ज कोटेश्वरी स्लेट वर्क्स, आंध्र प्रदेश
  - (ठ) मेसर्ज सेईकरूपा स्टेट वर्क्स, आंध्र प्रदेश
  - (ड) मेसर्ज विश्वमित्रा स्टेट वर्क्स

- (9) संबद्ध वस्तुओं के किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं। तथापि, निम्नलिखित पक्षकारों ने प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत किए बिना अथवा मामले के संबंध में कोई सार्थक सूचना दिए बिना जांच शुरू करने पर संक्षिप्त आपत्ति की है :-
- (क) मेसर्स ऐसोसिएशन ऑफ फर्नीचर्स मेन्युफेक्चरर्स आफ (इंडिया), मुंबई
- (ख) मेसर्स शोभा लिमिटेड, बंगलौर
- (10) ऐसोसिएशन ऑफ पेनल बोर्ड मेन्युफेक्चरर्स, अहमदाबाद ने अपने संक्षिप्त निवेदन में याचिका का और प्राधिकारी द्वारा की जा रही जांच का समर्थन किया है।
- (11) आवेदक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की अनुकूलतम लागत और निर्माण की लागत तथा बिक्री की लागत का पूर्वकलन, सामान्य स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएपीपी) के आधार पर पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अनुसार किया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटन-रोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (12) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के संबंध में उनके द्वारा किए गए गोपनीयता के दावों की जांच की गई है। ऐसी सूचना को जो कि प्रकृति से गोपनीय है अथवा जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उसके अगोपनीय वृत्तान्त के साथ गोपनीयता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, इस परिणाम में \*\*\* किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की परिचायक है और प्राधिकारी ने इसे नियमावली के अंतर्गत गोपनीय माना है।
- (13) पाटन-रोधी शुल्क नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को 03.02.2016 को हुई मौखिक सुनवाई के दौरान अपने विचारों को मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया था। हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें। जांच की कार्यवाही के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों और सार्वजनिक सुनवाई के बाद उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए लिखित निवेदनों का निदान, उनके प्रासंगिक होने और प्रमाणों के समर्थन से जितना संभव हो सका है, इस परिणाम में किया गया है।
- (14) सहभागी घरेलू उत्पादकों के साथ-साथ प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और आंकड़ों की जितना आवश्यक समझा गया है और व्यवहारिक हुआ है, जांच की गई है।
- (15) जहां कहीं भी यदि किसी हितबद्ध पक्षकार ने मौजूदा जांच की प्रक्रिया के दौरा आवश्यक सूचना का अभिगमन करने अथवा उसे अन्यथा प्रदान नहीं करने से मनाही की है अथवा जांच में विशेष रूप से अडचन पैदा की है, प्राधिकारी ने "उपलब्ध उत्तम सूचना" के आधार पर उसे इस अंतिम निर्णय में अनिवार्य तथ्यों के रूप में रिकार्ड किया है तथा ऐसे हितबद्ध पक्षकारों को असहयोगी माना है।
- (16) नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी ने 26 अप्रैल, 2016 को जारी किए गए प्रकटन विवरण द्वारा मामले के अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन कर दिया था। इस प्रकटन विवरण पर निम्नलिखित पक्षकारों ने अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं और जितना प्रासंगिक समझा गया है और इस विषय पर उनके द्वारा पहले व्यक्त किए गए विचारों की पुनरावृत्ति नहीं होने पर, उनकी टिप्पणियों पर विचार किया गया है :-
- (1) घरेलू उद्योग की ओर से टीपीएम परामर्शदाता
  - (2) मेसर्स वीआरजी डोंगभा एमडीएफ लिमिटेड ज्वाईंट स्टॉक कंपनी, विएतनाम की ओर से एपीजे एसएलजी ला एसोसिएट्स
  - (3) मेसर्स किम टिन एमडीएफ स्टॉक कंपनी लिमिटेड, विएतनाम की ओर से मेसर्स पोथल एंड एसोसिएट्स
  - (4) मेसर्स किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, विएतनाम की ओर से मेसर्स पोथल एंड एसोसिएट्स
  - (5) मेसर्स पीटीएच हिजाऊ, इंडोनेशिया की ओर से मेसर्स एएनएम ग्लोबल इंक
  - (6) मेसर्स एमडीएफ वीआरजी क्युयांग ट्रि वुड ज्वाईंट स्टॉक कंपनी, विएतनाम की ओर से मेसर्स एएनएम ग्लोबल इंक

- (17) यह जांच 1 अक्टूबर, 2013 से शुरू करके 30 सितंबर, 2014 तक (12 महीनों के लिए) की गई थी। तथापि, क्षति की सूचना अवधि में अप्रैल, 2011 से मार्च, 2012, अप्रैल, 2012 से मार्च, 2013, और अप्रैल, 2013 से मार्च, 2014 तक की अवधि और जांच अवधि भी शामिल है।
- (18) निर्यातक देशों में मुद्राओं के परिवर्तन के प्रयोजनार्थ सहयोगी निर्यातकों के प्रश्नावली के उत्तरों में यथा-सूचित जांच अवधि के दौरान प्रचलित दैनिक विनिमय दर पर विचार किया गया है। रूपयों को परिवर्तन करने के लिए इस जांच अवधि के लिए अपनाई गई औसत विनिमय दर, 1 संयुक्त राज्य अमरीकी डालर = 61.65 रूपए होने पर विचार किया गया है।

#### ख. विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"

4. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद, "6 मि.मी. और उससे अधिक मोटाई के प्लेन मीडियन डेंसिटी फाईबर बोर्ड (एमडीएफ)" है। एमडीएफ को बाजार की शब्दावली में प्लेन एमडीएफ बोर्ड अथवा कस्टम-बुड अथवा क्राफ्ट-बुड भी कहा जाता है। प्लेन मीडियन डेंसिटी फाईबर बोर्ड अथवा प्लेन एमडीएफ बोर्ड सम्मिश्रित लकड़ी का उत्पाद होता है, जो कि लकड़ी के अपशिष्ट फाईबर को गोंद से एक साथ जोड़ कर, यूरिया फोरमलडिहाईड रेसिन या मेलेमाईन रेसिन से ताप के अंतर्गत और दबाव से निर्मित किया जाता है। इसका व्यापक उपयोग पार्टीशन, मॉड्यूलन फर्नीचर, केबिनेट आदि के लिए किया जाता है। इस उत्पाद का उत्पादन, नामतः प्लेन और लेमिनेटिड दो किस्मों में किया जाता है। एमडीएफ बोर्ड को आगे पेंटिड, विनीर द्वारा लेमिनेटिड आदि से और संसाधित किया जाता है, ताकि लेमिनेटिड एमडीएफ बोर्ड प्राप्त किया जा सके। वर्तमान याचिका के उत्पाद का कार्य-क्षेत्र में लेमिनेटिड एमडीएफ बोर्ड शामिल नहीं है।

5. प्लेन मीडियन डेंसिटी फाईबर बोर्ड को सामान्यतया मानक आकारों में बनाया और बेचा जाता है और इसका उपयोग, आकार के अनुसार उसको काट कर तथा प्रयोक्ता के डिजाइन की आवश्यकता अनुसार किया जाता है। इसे 1.2 मि.मी. से 25 मि.मी. की मानक मोटाई में बनाया और बेचा जाता है और इसका मानक आकार 8 x 4 मि.मी. है। उपभोक्ता की आवश्यकता अनुसार इसकी मोटाई को संशोधित किया जा सकता है। विचाराधीन उत्पाद, केवल 6 मि.मी. से अधिक मोटाई का है। उद्योग की शब्दावली में बोर्डों को "मोटे" और "पतले" दो भागों में विभाजित किया जाता है। विचाराधीन उत्पाद, "मोटा" एमडीएफ है।

6. आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा बनाई और बेची जाने वाली संबद्ध वस्तुएं और संबद्ध देशों से आयातित वस्तुएं, उनके भौतिक और रासायनिक लक्षणों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यो और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों वस्तुओं का एक दूसरे के स्थान पर उपयोग कर रहे हैं तथा इसलिए ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन करने योग्य हैं। इसलिए घरेलू उत्पाद और आयातित संबद्ध वस्तुएं, नियमावली के अंतर्गत दी गई परिभाषा के भीतर समान उत्पाद हैं।

7. प्रतिवादी पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के कार्य-क्षेत्र के संबंध में कोई संबद्ध निवेदन नहीं किए हैं। इसलिए प्राधिकारी का विचाराधीन उत्पाद के कार्य-क्षेत्र की "6 मि.मी. और उससे अधिक मोटाई के प्लेन मीडियन डेंसिटी फाईबर बोर्ड (एमडीएफ)" के रूप में संपुष्टि करने का प्रस्ताव है।

8. विचाराधीन उत्पाद सीमा शुल्क वर्गीकरण के अध्याय 44 के अंतर्गत आता है, जो कि "बुड और बुड की वस्तुएं, बुड चार्कोल" और अधिक स्पष्ट रूप से शीर्ष 4411 में "फाईबर बोर्ड ऑफ बुड अथवा अन्य लिग्नुअस मेटेरियल्स, भले ही वे रेसिन से जुड़े हैं अथवा अन्य आर्गेनिक पदार्थों से जुड़े हैं" नाम से जाने जाते हैं। विचाराधीन उत्पाद को आईटीसी मुख्य शीर्ष के अंतर्गत 44111300 और 44111400 में 8 अंकों में समाहित किया गया है। चूंकि इस उत्पाद का सीमा शुल्क का कोई निश्चित वर्गीकरण नहीं है, इसलिए सीमा-शुल्क का ऐसा वर्गीकरण निर्देशात्मक मात्र है और यह वर्तमान जांच के कार्य-क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

#### ग. घरेलू उद्योग और आधार

9. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच को शुरू करने के लिए आवेदन पत्र, संयुक्त रूप मेसर्ज ग्रीनप्लाई इंडस्ट्रीज लिमिटेड और मेसर्ज मंगलम टिम्बर प्रोडक्ट्स लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जो कि भारत में प्लेन मीडियन डेंसिटी फाईबर बोर्ड (एमडीएफ) के प्रमुख घरेलू उत्पादक हैं और याचिकादाताओं द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में जिनका अंशदान लगभग 40% है। उपरोक्त आवेदक घरेलू उत्पादकों के अतिरिक्त भारत में संबद्ध वस्तुओं के अन्य उत्पादक भी हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं : मेसर्ज रूशील डेकोर लिमिटेड, मेसर्ज शिरडी इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मेसर्ज न्यू केम लिमिटेड और मेसर्ज बजाज एक्शन बिल्डवेल। मेसर्ज रूशील डेकोर लिमिटेड, जिसका कुल उत्पादन में अंशदान, लगभग 20 % है, ने आवेदन पत्र/याचिका का समर्थन किया है।

10. याचिकादाता द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के अनुसार मेसर्स न्यूकेम लिमिटेड (जो कि न्यूवुड एमडीएफ ब्रांड का विनिर्माता है) ने फरवरी, 2011 से अपना उत्पादन बंद कर दिया है। मेसर्स बजाज ईको-टेक प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने वर्ष 2009 से समान उत्पाद का उत्पादन करना बंद कर दिया था। मेसर्स शिरडी इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने काफी लंबे समय से अपने उत्पादन को कम कर दिया है और अब उसका मामला बीआईएफआर को भेजा गया है। इसलिए मेसर्स ग्रीनप्लाई इंडस्ट्रीज लिमिटेड और मेसर्स मंगलम टिम्बर प्रोडक्ट्स लिमिटेड का अंशदान, अपने समर्थक घरेलू उत्पादक, मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड के साथ कुल घरेलू उत्पादन का लगभग 60 % बनता है और क्षति की जांच करने के लिए जांच शुरू करने के समय इन आवेदकों को घरेलू उद्योग माना गया था।

11. तथापि, जांच शुरू किए जाने के बाद याचिकादाताओं ने प्राधिकारी के ध्यान में यह लाया है कि मेसर्स मंगलम टिम्बर प्रोडक्ट्स लिमिटेड जो कि एक याचिकादाता है, ने अत्यधिक वित्तीय घाटे होने तथा उसके परिणामी प्रशासनिक मुद्दों के कारण क्षति और क्षति के मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित व्यापक अनुपूरक सूचना प्रस्तुत करने में असमर्थता व्यक्त की थी। साथ ही यह भी निवेदन किया गया था कि उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस कंपनी को पहले हाल ही में पूरी की गई अंतिम निर्णायक समीक्षा में घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र से पहले बाहर रखा गया था। आवेदक घरेलू उत्पादक की ओर से यह अभिवेदन किया गया है कि प्राधिकारी घरेलू उद्योग के रूप में मेसर्स ग्रीनप्लाई इंडस्ट्रीज लिमिटेड के साथ जांच की आगे की कार्यवाई कर सकते हैं, क्योंकि संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादन में इसका प्रमुख अंशदान है। तथापि, यदि प्राधिकारी अन्य घरेलू उत्पादकों को शामिल करके इसकी सहभागिता बढ़ाना चाहते हैं, तो अन्य उत्पादकों के संबंध में आंकड़े प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

12. इस तथ्य के बावजूद कि कुल घरेलू उत्पादन में मेसर्स ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लिमिटेड का अंशदान 33% है, जो कि संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पाद का प्रमुख अंशदान है और उसके साथ उसके समर्थक, मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड का कुल घरेलू उत्पादन में अंशदान 50 % से अधिक है, क्षति विश्लेषण को और अत्यधिक प्रतिनिधिक बनाने के लिए समर्थक घरेलू उत्पादक से कहा गया था कि वे याचिका में शामिल हो जाएं और उसकी लागत और क्षति संबंधित आंकड़े प्रस्तुत करें। तदनुसार मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड ने अपनी लागत और क्षति से संबंधित आंकड़े प्रस्तुत कर दिए हैं और उसे इस जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के एक भाग के रूप में माना गया है।

13. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों सहित अपने विभिन्न निवेदनों में यह तर्क दिया है कि आवेदक घरेलू उद्योग ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को भ्रमित किया है, क्योंकि वे सभी भली भांति जानते हैं कि मेसर्स मंगलम टिम्बर प्रोडक्ट्स सह-भागी नहीं है और जांच शुरू किए जाने के समय इस तथ्य को प्राधिकारी से छिपाया गया है। यदि प्राधिकारी जांच शुरू किए जाने के समय इस तथ्य को जान जाते कि जांच की जा सकने वाली सूचना प्रस्तुत करने वाले घरेलू उत्पादकों का अंशदान, कुल घरेलू उत्पादन में 33 % है, तो वे जांच की कार्यवाई शुरू ही नहीं करते। यह इस तथ्य को ध्यान में रखे बिना है कि प्राधिकारी को यह अधिकार प्राप्त है कि वह कुल घरेलू उत्पादन में 25 % से अधिक का अंशदान होने पर जांच शुरू कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी तर्क दिया गया है कि मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड ऐसे विलंबित चरण में घरेलू उद्योग के एक भाग के रूप में नहीं माना जा सकता था, क्योंकि मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड की सूचना जांच शुरू किए जाने का आधार नहीं थी। यह तर्क दिया गया है कि नियम 5 (3) के अनुसार जांच शुरू करने के लिए आधार का निर्धारण किया जाना एक पूर्वपेक्षा है और इसलिए मंगलम का सहयोग नहीं किए जाने के बाद जांच में "घरेलू उद्योग" के भागों और/अथवा कार्य-क्षेत्र की स्थिति स्पष्ट नहीं है और आवेदक, नियम 5 (3) के अंतर्गत यथा अपेक्षित पर्याप्तता और परिशुद्धता की जांच में विफल रहा है।

14. घरेलू उद्योग ने अपने निवेदनों में प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचारों का खंडन किया है और अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- (1) हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क कि एक सुसंगत पद्धति के अनुसार याचिकादाताओं का अकेला अंशदान, कुल घरेलू उत्पादन का 50% होना चाहिए, निराधार है। वास्तव में जांच शुरू किए जाने के चरण में याचिकादाता कंपनियों का अंशदान 39% था, जबकि इस समय सहभागी कंपनियों का अंशदान 55% है जो कि इस अवधि के दौरान याचिकादाता कंपनियों के अंशदान में वृद्धि दर्शाता है।
- (2) घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र को परिभाषित करने की शक्ति निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्राप्त है और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच के प्रत्येक चरण में कार्य-क्षेत्र को निर्धारित किया जाता है। जांच शुरू करने और अंतिम जांच परिणाम के चरण में घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र में अंतर हो सकता है। यह तर्क करते हुए कि बाद के चरण में मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड को घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र में शामिल नहीं किया जा सकता है, हितबद्ध पक्षकार यह तर्क देने का प्रयास कर रहे हैं कि घरेलू उद्योग का कार्य-क्षेत्र, जांच शुरू किए जाने के चरण में स्थिर हो गया है, जो कि वास्तविकता नहीं है।

- (3) किए गए आयातों के संबंध में मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड द्वारा कुछ नहीं कहने से, यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि वे अपात्र घरेलू उद्योग हैं। घरेलू उत्पादक द्वारा किए गए आयातों और उसके निर्यातक और आयातक के साथ संबंध होने का प्रश्न एक प्राचल है, जो कि न केवल याचिकादाता से बल्कि समर्थक कंपनियों और सभी अन्य घरेलू उत्पादकों से भी संबद्ध है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह गलत अवधारणा बनाई है कि संबंध होने का मुद्दा केवल याचिकादाता कंपनियों तक सीमित है। इस प्रकार यदि मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड ने जांच शुरू करने के चरण में याचिका का समर्थन कर दिया होता और यदि उनके उत्पादन को, जांच शुरू करने के चरण में याचिकादाता की पात्रता और घरेलू उद्योग की कार्य-क्षेत्र का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ गिन लिया जाता, तो ऐसा केवल यह पता लगाने के बाद ही संभव हो पाता कि घरेलू उत्पादकों को सभी पात्र घरेलू उत्पादकों के प्रयोजनार्थ शामिल कर लिया गया है। इस संबंध में नियम 2 (ख) और नियम 5 (3) में यह स्पष्ट उल्लेख है कि घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र का निर्धारण, पात्र घरेलू उत्पादकों में से किया जाए। तथापि, सार्वजनिक फाईल के लिए मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड से संबद्ध प्रमाण पत्र पृथक रूप से प्रदान किया गया है।

15. प्रकटन पश्चात अपने निवेदनों में कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि सुनवाई से पहले हितबद्ध पक्षकारों को घरेलू उद्योग की संरचना के बारे में सूचित कर दिया जाना चाहिए था ताकि वे प्रभावशाली ढंग से अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकें। तथापि, ऐसा पहली बार हुआ है कि घरेलू उद्योग की संरचना के बारे में प्रकटन विवरण के माध्यम से सूचित किया गया है, जिससे इस विषय पर प्रभावशाली ढंग से अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने का अधिकार प्रभावित हुआ है। दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने ऐसी टिप्पणी की है कि प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार यह सही माना है कि मेसर्स ग्रीनप्ले इंडस्ट्रीज और मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड घरेलू उद्योग हैं।

16. इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की संरचना में परिवर्तन करने से संबंधित पत्र को सार्वजनिक फोल्डर में रख दिया गया था और यह हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध करा दिया गया था, जिसके आधार पर सार्वजनिक सुनवाई में इस मुद्दे पर व्यापक रूप से तर्क दिए गए थे और इसे पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर दिया गया था। हालांकि बाकी घरेलू उद्योग नामतः ग्रीनप्ले निरंतर घरेलू उद्योग बना रहा है, फिर भी अधिक प्रतिनिधियों को शामिल करने के लिए प्राधिकारी ने उसके समर्थक नामतः रूशील डेकोर लिमिटेड को घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र के भीतर शामिल कर लिया है। इसलिए इस चरण में पक्षकारों के तर्क वैध नहीं हैं।

17. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में यह प्रावधान है कि – “‘घरेलू उद्योग’ का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में ‘घरेलू उद्योग’ पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है”।

18. जैसा कि पहले नोट किया गया है प्रारंभ में आवेदन पत्र संयुक्त रूप से मेसर्स ग्रीनप्ले इंडस्ट्रीज और मेसर्स मंगलम टिम्बर द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिनका कुल घरेलू उत्पादन में अंशदान लगभग 40% है तथा याचिका के समर्थक, मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड का अंशदान, कुल घरेलू उत्पादन में लगभग 60% है। यदि प्रारंभिक चरण में मेसर्स मंगलम टिम्बर को याचिका में एक भागीदार नहीं माना जाता है, तो अकेले मेसर्स ग्रीनप्ले इंडस्ट्रीज का अंशदान, कुल घरेलू उत्पादन में 25% से अधिक बनता है और उसके समर्थक मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड के साथ उनका अंशदान कुल घरेलू उत्पादन का 50% से भी अधिक हो जाता है। इसलिए प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क की जांच शुरू किया जाना अमान्य था, वैध नहीं है।

19. प्राधिकारी आगे यह भी नोट करते हैं कि इस तथ्य के बावजूद कि कुल घरेलू उत्पादन में मेसर्स ग्रीनप्ले इंडस्ट्रीज का अंशदान 33% है, जो कि संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पाद का प्रमुख अंशदान है और उसके साथ उसके समर्थक, मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड का कुल घरेलू उत्पादन में अंशदान 50 % से अधिक है। क्षति विश्लेषण को और अत्यधिक प्रतिनिधिक बनाने के लिए समर्थक घरेलू उत्पादक से कहा गया था कि वे याचिका में शामिल हो जाएं और उसकी लागत और क्षति संबंधित आंकड़े प्रस्तुत करें। इसलिए घरेलू उद्योग की संरचना के संबंध में कोई असंगति नहीं है और किसी भी तरीके से अन्य हितबद्ध पक्षकारों के हितों को जोखिम में नहीं डाला गया है। तदनुसार प्राधिकारी का यह मानना है कि मेसर्स ग्रीनप्ले इंडस्ट्रीज और मेसर्स रूशील डेकोर लिमिटेड इस जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग बनते हैं।

#### घ. नामित देश, आयातों की मात्रा और न्यूनतम सीमाएं

20. याचिकादाता उद्योग ने अपनी याचिका में आंकड़ों के निजी स्रोत नामतः मेसर्स आईबीआईएस से प्राप्त किए गए आयात के आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। तदनंतर प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से कारोबार-वार आयात के आंकड़े प्राप्त किए हैं। विभिन्न स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं की मात्रा और आयात कीमत का निर्धारण करने के लिए इन आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इन आंकड़ों के अनुसार

संबद्ध देशों के अतिरिक्त मलेशिया, श्रीलंका और न्यूजीलैंड से आयात, न्यूनतम सीमा से अधिक हैं। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य, मलेशिया, थाईलैंड और श्रीलंका के खिलाफ शुल्क लगे हुए हैं। जिन अन्य देशों से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक है, वे केवल हैं, इंडोनेशिया (14.8 %), विएतनाम (41.0 %) और न्यूजीलैंड (11.4. %)।

21. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों सहित विभिन्न निवेदनों में न्यूजीलैंड से अत्यधिक आयात किए जाने के बावजूद भी उसे जांच के कार्य-क्षेत्र से बाहर रखे जाने का मुद्दा उठाया है। याचिकादाताओं ने निवेदन किया है कि हालांकि न्यूजीलैंड से एमडीएफ के निर्यात न्यूनतम से अधिक हैं, वे विभिन्न किस्म के हैं और उनका प्रयोग विभिन्न अंत प्रयोक्ताओं द्वारा किया जाता है तथा इसकी संपूर्ति घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पादों द्वारा नहीं की जाती है और इसलिए वे उन्हें प्रभावित नहीं कर रहे हैं। इसलिए याचिका में जांच के लिए न्यूजीलैंड को शामिल नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त याचिकादाताओं ने यह भी स्पष्ट किया है कि विगत जांच में प्रारंभ में इस देश के खिलाफ शुरू की गई विगत जांच में अन्य देशों के साथ न्यूजीलैंड को शामिल किया गया था, लेकिन अंतिम जांच परिणाम में इस देश के खिलाफ जांच को, घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध पर इन्हीं आधार पर समाप्त कर दिया गया था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि दिनांक 26 अगस्त, 2009 के अंतिम जांच परिणाम में इस मुद्दे का निदान कर दिया गया है, जो कि निम्नानुसार है :-

*“प्राधिकारी ने नोट किया है कि घरेलू उद्योग ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि न्यूजीलैंड से आयात मुख्यतया ऐसे बाजार क्षेत्र में विद्यमान थे, जिसमें घरेलू उद्योग अत्यधिक मात्रा में सामग्री की पेशकश नहीं कर रहा था, इसलिए घरेलू उद्योग ने न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने आवेदन पत्र को वापिस ले लिया था। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि घरेलू उद्योग ने यह स्वीकार किया है कि न्यूजीलैंड से होने वाले आयात उन्हें क्षति नहीं पहुंचा रहे थे, जबकि पहले उन्होंने यह तर्क दिया था कि न्यूजीलैंड से होने वाले आयात भी उन्हें क्षति पहुंचा रहे हैं। मेसर्स एपीजे एसएलजी ला आफिसिज इस आशय का कोई प्रमाण प्रस्तुत करने में विफल रहे हैं कि संबद्ध देशों से आयातों के कारण क्षति नहीं हो रही है। तदनुसार प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 14 के अंतर्गत न्यूजीलैंड के संबंध में आवेदन पत्र को वापिस लेने के अनुमति दे दी है और न्यूजीलैंड को बाहर कर देने के बाद चीन जनवादी गणराज्य, मलेशिया, थाईलैंड और श्रीलंका ... से 6 मि.मी. और उससे अधिक मोटाई के प्लेन मीडियम डेंसिटी फाईबर बोर्ड (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जांच प्रतिबंधित कर दी है”।*

22. उपरोक्त विश्लेषित आंकड़ों के अनुसार न्यूजीलैंड से आयातों का कीमत स्तर, इंडोनेशिया और विएतनाम में कीमतों से क्रमशः लगभग 5 से 10 % अधिक है। घरेलू उद्योग ने इस देश के खिलाफ पाटन का कोई आरोप नहीं लगाया है। इसलिए प्राधिकारी इस जांच में से न्यूजीलैंड को बाहर निकालने के संबंध में प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों में कोई बल नहीं पाते हैं।

#### **ऊ. इस जांच के हितबद्ध पक्षकार**

23. उपरोक्त पैरा 3 के उप-पैरा (7) में सूचीबद्ध प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों और आयातकों के साथ-साथ इस जांच में निर्दिष्ट देशों की सरकारों और भारत में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तरों और किए गए अन्य निवेदनों के आधार पर उन्हें इस जांच में हितबद्ध पक्षकारों के रूप में माना गया है।

#### **च. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे**

##### **च. 1 गोपनीयता**

24. घरेलू उद्योग के गोपनीयता के दावों के संबंध में प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने निवेदनों में दिए गए तर्क निम्नानुसार हैं :-

- (1) याचिकादाताओं द्वारा अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया गया है और आईबीआईएस से प्राप्त किए गए मूल/विधि कारोबार-वार आयात के आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। कारोबार-वार छांटे गए आयात के आंकड़ों की एक्सल फाईल की सॉफ्ट कॉपी, अपरिष्कृत/मूल आयात के आंकड़े और आईबीआईएस से बाहर निकाले गए कारोबार की सूची प्रस्तुत नहीं की गई है।
- (2) कंपनी-वार क्षमता, उत्पादन, बिक्रियों, मात्रा, घरेलू उद्योग और अन्य उत्पादकों के बाजार के हिस्से को गोपनीय रखा गया है।
- (3) सरंचित सामान्य मूल्य के साथ-साथ सामान्य मूल्य के मद-वार ब्यौरों को गोपनीय रखा गया है।
- (4) याचिकादाताओं ने समायोजन के दावों का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है।
- (5) लाभ/घाटे और आरओसीई के प्रतिशत को और माल सूची को गोपनीय रखा गया है।



25. घरेलू उद्योग के निवेदनों में दिए गए तर्क निम्नानुसार हैं:-

- (1) घरेलू उद्योग ने केवल उसी सूचना को गोपनीय रखा है जो कि विधि के अंतर्गत संरक्षित है।
- (2) आईबीआईएस के आंकड़ों की गोपनीयता के संबंध में किसी भी विधि में अथवा निर्धारित प्रपत्र में ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। याचिकादाताओं द्वारा प्राप्त किए गए आंकड़े, अपरिष्कृत/मूल आंकड़े नहीं, बल्कि ये संसाधित आंकड़े हैं।
- (3) कंपनी-वार व्यौरों को प्रकट करना कोई निर्धारित आवश्यकता नहीं है। पृथक कंपनी विशिष्ट सूचना, मध्यवर्ती सूचना का एक भाग होती है, जो कि प्राधिकारी को ऐसी सूचना के सत्यापन के प्रयोजनार्थ आवश्यक होती है, जो कि प्राधिकारी का अधिकार-क्षेत्र होता है, न कि हितबद्ध पक्षकारों का।
- (4) संरचित सामान्य मूल्य और सामान्य मूल्य गोपनीय होते हैं और इनको प्रकट नहीं किया जा सकता है।
- (5) समायोजन के व्यौरे भी गोपनीय होते हैं और इन्हें भी प्रकट नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त याचिकादाता ने कुछेक व्यौरों के लिए उचित प्राक्कलन करने की प्रक्रिया अपनाई है, जिनके व्यौरे याचिका में सुगमता से उपलब्ध हैं।

26. गोपनीयता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जितना संभव और व्यवहारिक हो सका है, सूचना प्रस्तुत करने वाले विभिन्न पक्षकारों के गोपनीयता के दावों की जांच की गई है और पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई सूचना की प्रकृति के आधार पर गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया गया है। जहां तक निर्यातकों के निवेदनों का संबंध है, जितनी सीमा तक ये प्रदाता पक्षकारों के व्यवसाय की संवेदी नहीं हैं, इसे सार्वजनिक फाईल में उपलब्ध कराया गया है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए गोपनीयता के दावों के संबंध में सभी पक्षकारों की उपरोक्त आपत्तियों का निराकरण कर दिया गया है।

## च. 2 पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे

27. जांच के संबंध में प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा अपने निवेदनों में उठाए गए मुद्दे निम्नानुसार हैं:-

- (1) आयात की मात्रा के बारे में याचिकादाता द्वारा दी गई सूचना भ्रामक है, क्योंकि अत्यधिक आयातों को दर्शाने के लिए अनुचित भार पर विचार किया गया है। उदाहरण के लिए घरेलू उद्योग ने 6 मि.मी. एमडीएफ के लिए 650 कि.ग्रा./मी.3 माना है, लेकिन वास्तविक भार 700 कि.ग्रा./मी.3 से अधिक है।
- (2) छांटे गए आयातों के आंकड़ों का सत्यापित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उचित कॉपी अथवा मूल के साथ-साथ छांटे गए आयात के आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।
- (3) याचिकादाताओं की ओर से सूचना की कमी होने और उसको प्रस्तुत किए जाने में बिलंब किए जाने से प्रतिवादी पक्षकारों को उचित समय पर उपयुक्त और पर्याप्त रूप से खंडन करने के उनके हित विकृत हुए हैं।

28. घरेलू उद्योग ने अपने निवेदनों में हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों का खंडन किया है और अन्य बातों के साथ-साथ यह निवेदन किया है कि -

- (1) घरेलू उद्योग ने आयातों की मात्रा और मूल्य से संबंधित सूचना प्रस्तुत की है और विचाराधीन उत्पाद के आयातों की उत्तम रूप से संभावित पहचान करने के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना के स्रोत के बारे में भी बताया है और ऐसे कारोबार का संपूर्ण प्रकटन किया गया है, जिन्हें याचिकादाताओं द्वारा आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने के लिए शामिल किया गया है।
- (2) अधिक भार पर किसी प्रकार का विचार करने के फलस्वरूप कम आयात कीमत होगी। किसी भी स्थिति में यह अंतर इतना विशेष महत्व नहीं रखता है कि इसके कारण निष्कर्ष में कोई अत्यधिक अंतर हो।
- (3) छांटे गए आयातों के आंकड़ों की जांच करना, प्राधिकारी का विशेषाधिकार है और न कि हितबद्ध पक्षकारों का।
- (4) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्धारित किए गए समय के भीतर संबद्ध सूचना उचित समय प्रस्तुत कर दी गई है।

29. उपरोक्त अनुसार पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों को प्राधिकारी नोट करते हैं। संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के प्रमुख उत्पादकों/निर्यातकों ने उन देशों से निर्यातों की मात्रा और मूल्य के पर्याप्त सूचना प्रस्तुत की है। प्राधिकारी ने भी डीजीसीआईएंड एस से

कारोबार-वार आयात के आंकड़े प्राप्त किए हैं, जिनका विश्लेषण संबद्ध देशों से सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के साथ किया गया है, जिसके लिए उनमें प्रदत्त वास्तविक प्राचलों को ध्यान में रखा गया है। इसलिए पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों का पर्याप्त रूप से निदान किया गया है।

30. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य सभी मुद्दों का निराकरण, जितना प्रासंगिक है और उनके प्रमाणों के समर्थन से, इस प्रकटन विवरण में संबंधित भागों में कर दिया गया है।

#### छ. पाटन का मूल्यांकन और पाटन मार्जिन का निर्धारण

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों ने अपनी प्रश्नावलियों के उत्तर प्रस्तुत किए हैं, जिनमें उन्होंने सामान्य मूल्यों, निर्यात कीमतों और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने से संबंधित सूचना प्रस्तुत की है।

##### विएतनाम

- (क) मेसर्ज किम टिन एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम के साथ मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, विएतनाम।
- (ख) मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम
- (ग) मेसर्ज एमडीएफ वीआरजी कुआंग ट्रि बुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम

##### इंडोनेशिया

- (घ) मेसर्ज पीटी हिजाऊ लेस्टेरी राया फाईबर बोर्ड (पीटीएच), इंडोनेशिया
- (ङ.) मेसर्ज सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड, इंडोनेशिया

32. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तरों पर अपनी टिप्पणियों में प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा सूचित की गई लागतों और कीमतों के कुछ पहलुओं के संबंध में किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (क) मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम के संबंध में उनके द्वारा एकत्र की गई सूचना के अनुसार ने जांच अवधि तक के विगत तीन वर्षों के दौरान अपने कारोबार प्रचालन में अत्यधिक वृद्धि की है और कंपनी का लगभग 15% प्रचालन, निर्यात बाजार में होता है जिससे कंपनी के अत्यधिक निर्यातोन्मुख होने का पता चलता है।
- (ख) इस अवधि के दौरा कंपनी की लाभप्रदता में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जो कि इस उद्योग को सरकार से सहायता प्राप्त होने पर ही संभव हो सकती है। कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट से स्पष्ट पता चलता है कि कंपनी विचाराधीन उत्पाद को, भारत में निर्यात की जा रही संबद्ध वस्तुओं की कीमतों की तुलना में अत्यधिक गृह बाजार कीमत पर बेच रही है।
- (ग) अत्यधिक संतुलित अनुमान से कारखाना-गत निर्यात कीमत संयुक्त अमरीकी डालर 200 प्रति सीबीएम आएगी। यदि निर्यातक बिक्रियों पर 25% लाभ अर्जित करते हैं, तो इससे स्पष्ट होता है कि निर्यातक लगभग संयुक्त अमरीकी डालर 150-160 प्रति सीबीएम का दावा कर रहे हैं अथवा इसके विकल्प के रूप में तृतीय देशों को उनके निर्यात अथवा घरेलू कीमतें वास्तविक रूप से भारत को उनके निर्यात की कीमत से अधिक हैं। जहां तक कि यदि ये निर्यातक सरकार से अच्छी सहायता अथवा आर्थिक सहायता प्राप्त करते हैं, तो उनके उत्पादन की लागत, संयुक्त अमरीकी डालर 150 प्रति सीबीएम जितनी कम नहीं हो सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि निर्यातक विचाराधीन उत्पाद को, भारत में निर्यात की कीमत की तुलना में गृह बाजार में काफी अधिक कीमत पर बेच रहे हैं। इस प्रकार यह सुस्पष्ट होता है कि निर्यातक भारी पाटन करने पर लगे हुए हैं।
- (घ) हालांकि कंपनी अन्य उत्पादों का भी उत्पादन कर रही है, वास्तविकता यह है कि विचाराधीन उत्पाद, इन कंपनियों के प्रचालनों का बहुताधिक भाग बनते हैं। इस प्रकार यह तथ्य मात्र कि कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट विभिन्न प्रचालनों से संबंधित है से स्वतः यह स्पष्ट नहीं होता है कि विचाराधीन उत्पाद, वास्तव में अन्य उत्पादों से संबंधित निष्पादन से भिन्न होगा।

- (ड) याचिकादाताओं द्वारा किए गए परिकलन से पता चलता है कि कंपनी ने लगभग 800 बिलियन उधार ली गई निधि पर लगभग 40 बिलियन (स्थानीय मुद्रा) का ब्याज व्यय किया है जिससे लगभग 5% की ब्याज लागत का स्पष्ट पता चलता है। यह ब्याज लागत होता इंडोनेशिया में प्रचलित ब्याज की दर से काफी कम है। इस प्रकार यह सुस्पष्ट होता है कि निर्यातक ब्याज पर कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त कर रहे हैं अथवा उनको अत्यधिक सहायित दरों पर ऋण दिए गए हैं। प्राधिकारी कृपया इन तथ्यों की आगे जांच कर सकते हैं।
- (च) कंपनी में अत्यधिक शेयर धारिता की ईक्विटी है। ऋण ईक्विटी का केवल 0.60 गुना है जबकि वर्तमान ऋण केवल 0.37 गुना है। ईक्विटी और दीर्घवधिक ऋण ईक्विटी का केवल 0.24 गुना है। ईक्विटी प्रवर्तकों से आई है। प्राधिकारी कृपया इसकी जांच करें कि क्या प्रवर्तकों ने निधियां उधार पर ली हैं और उन्हें कंपनी को ईक्विटी के रूप में अंतरित कर दिया है। यदि प्रवर्तकों द्वारा ईक्विटी सहभागिता, उधार पर ली गई निधियों में से है, तो प्राधिकारी कृपया उत्पादन की लागत का निर्धारण करने से पहले ऐसी निधियों पर उपयुक्त ब्याज प्रभारित कर सकते हैं।
- (छ) कंपनी अपना ग्लू बना रही है। कंपनी की प्रश्नावली के उत्तर में यह तथ्य उपयुक्त रूप से नहीं बताया गया है। प्राधिकारी कृपया इसकी जांच कर सकते हैं।
- (ज) कंपनी अधिक, मध्यम और कम डेंसिटी के फाईबर बोर्ड तथा प्लेन और लेमिनेटिड दोनों प्रकार के बोर्ड बना रही है। इसके अतिरिक्त कंपनी पाईन वुड, प्लाईवुड, रबड वुड और अन्य वुड्स में भी प्रचालन कर रही है। इन उत्पादों के प्रचालन, परिणामी लाभप्रदता की दृष्टि से बहुत भिन्न नहीं हैं। इसलिए वार्षिक रिपोर्ट में सूचित किया गया निष्पादन, स्पष्ट रूप से विचाराधीन उत्पाद के निष्पादन का सूचक है।
- (झ) ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक निर्यातकों ने संबंधित पक्षकारों से कच्चे माल की खरीद की है अथवा उसे केप्टिव रूप से उत्पादित किया है। याचिकादाता का प्राधिकारी से अनुरोध है कि कृपया इन अंतर निविष्टियों के मूल्यांकन की जांच की जाए।

33. उपरोक्त के अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने निर्यात बिक्री पर प्रोत्साहन और संवितरण के माध्यम तथा उत्पाद के विनिर्देशन के बारे में कुछ विवरणों का प्रकटन नहीं किए जाने के कारण मेसर्स पीटी सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड, इंडोनेशिया के प्रश्नावली के उत्तर में कुछ कमियों का भी जिक्र किया है।

34. प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने अपने निवेदनों में यह तर्क दिया है कि सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन, उनसे संबंधित प्रश्नावली के उत्तरों में प्रस्तुत किए गए उनकी वास्तविक लागत/कीमत संबंधी आंकड़ों पर आधारित होना चाहिए।

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसके पाटन-रोधी जांच होने के नाते यदि संबंधित देशों की सरकारों द्वारा कोई आर्थिक सहायता दी गई है, तो वह इस जांच के अधिकार-क्षेत्र से बाहर है। अन्य मुद्दों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि संबंधित देशों में प्रतिवादी उत्पादकों और निर्यातकों की प्रश्नावलियों के उत्तरों की जांच की गई थी और जितना आवश्यक समझा गया था इन पक्षकारों से अनुपूरक सूचना मांगी गई थी। उपरोक्त नामित उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की यथा संभव स्थल पर जांच की गई है और पक्षकारों द्वारा उठाए गए उपरोक्त मुद्दों की जांच की कार्रवाई के दौरान जितना प्रासंगिक और व्यवहारिक हुआ है, जांच की गई है। इन उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्यों, निर्यात कीमतों और पाटन मार्जिन का निर्धारण, सत्यापित आंकड़ों/सूचना के आधार पर किया गया है।

36. इस जांच में भाग लेने वाले कुछेक उत्पादकों/निर्यातकों ने यह निवेदन किया है कि हालांकि प्राधिकारी ने पाटन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए समान वस्तु की समान रूप से तुलना करने के वास्ते उत्पाद कोड संख्या अधिसूचित नहीं की है, इसलिए तुलना पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ भारत में निर्यातित उत्पादों की किस्मों तक सीमित होनी चाहिए। इस संबंध में प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में यह नोट किया है कि उत्पाद, मानक आकारों में लेकिन विभिन्न मोटाई में निर्मित किया जाता है और बेचा जाता है। उत्सर्जन मानक अर्थात् परिणामी फॉर्मलडिहाईड की मात्रा को ग्राहकों द्वारा वर्णीत किया जाता है। विभिन्न देशों में विभिन्न उत्पादकों की जांच के दौरान उत्पादकों ने बताया है कि विभिन्न मोटाईयों के बीच लागत में मामूली अंतर होता है, लेकिन ऐसे अंतर को प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि घरेलू उद्योग सहित कोई भी उत्पादक मोटाई के लागत के आंकड़े अथवा किस्म-वार उत्पाद के विवरण नहीं रखता है और केवल उत्पादन की औसत लागत को ही बना कर रखा जाता है। इसलिए समग्र उत्पाद जिसमें बाहर किए गए उत्पादों की किस्में भी शामिल हैं, की औसत लागत के आधार पर कुछ किस्मों के उत्पादों की औसीटी जांच करना उपयुक्त नहीं होगा। प्राधिकारी ने आगे यह भी नोट किया है कि ऐसी कोई स्पष्ट कीमत प्रवृत्ति नहीं है, जिससे ऐसा पता चले कि किस्म-वार उत्पाद की कीमत में अंतर के लिए अलग-अलग किस्म के उत्पाद की तुलना करने की आवश्यकता है। वास्तव में सहयोगी निर्यातकों के

आंकड़ों की जांच करने से मोटाई/उत्पाद किस्मों में भिन्नता को सहयोजित करने के लिए बिना किसी स्पष्ट पैटर्न अथवा प्रवृत्ति के उनकी कीमत में व्यापक अंतर होने का पता चला है। इसलिए संबद्ध देशों में अधिकतर अन्य उत्पादकों ने उत्पाद की किस्म पर आधारित तुलना के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण करने का दावा नहीं किया है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि इस मामले के वास्तविक सांचे में समग्र उत्पाद के लिए भारित औसत तुलना विधि से भारित औसत उपयुक्त है। तदनुसार प्राधिकारी का यह प्रस्ताव है कि समग्र उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन का निर्धारण किया जाए और न कि इसे केवल वास्तविक किस्म के उत्पाद की तुलना करने तक ही सीमित रखा जाए। यह भी देखा गया था कि सहयोगी निर्यातकों की घरेलू बिक्रियों में बहुत कम कीमत के कारोबार निहित हैं, जिनसे पता चलता है कि घरेलू बाजार में ऑफ स्पेश/पुरानी सामग्री की बिक्री की गई है। प्रकटन विवरण में यह बताया गया है कि उन ऑफ स्पेश सामग्री को सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ घरेलू बिक्रियों से बाहर रखे जाने का प्रस्ताव था।

37. जब कि विएतनाम और इंडोनेशिया के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा प्रस्तावित उपरोक्त कार्य-प्रणाली का विरोध नहीं किया है, मेसर्स वीआरजी डोगवाहा ने अपने प्रकटन पश्चात निवेदनों में यह तर्क दिया है कि पीसीएन की पीसीएन के साथ तुलना करना एक मानक कार्य-प्रणाली है, जिससे “एक वस्तु की समान वस्तु” के साथ तुलना करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 6 और पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2.4 के प्रावधान प्रभावी होंगे। यह तर्क दिया गया है कि ऐसे सभी मामलों में पीसीएन की पीसीएन के साथ तुलना करने की कार्य-प्रणाली अपनाई जाती है, जहां विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न ग्रेड, किस्में अथवा मॉडल होते हैं। पीसीएन में ऐसे विभिन्न कारकों के अंतर को ध्यान में रखा जाता है, जो कि कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करते हैं, जिनमें वास्तविक लक्षणों में अंतर आदि शामिल हैं। उदाहरण के लिए यदि निर्यातक निर्यात बाजार में 18 मि.मी. मोटाई के उत्पाद बेचता है, तो उसकी कीमत की तुलना अनिवार्यतः घरेलू बाजार में बेचे गए केवल 18 मि.मी. मोटाई के एमडीएफ के साथ ही की जाएगी। मोटाई-वार तुलना को आगे उत्सर्जन स्तर पर विभाजित किया जा सकता है क्योंकि ये दोनों कारक कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करते हैं। यह तर्क दिया गया है कि ऐसे सभी मामलों में पीसीएन की पीसीएन के साथ तुलना करने की कार्य-प्रणाली अपनाई जाती है, जहां विभिन्न ग्रेड, किस्में अथवा मॉडल बेचे जाते हैं। इसलिए प्रस्तावित कार्य-प्रणाली, पैरा 6 और अनुच्छेद 2.4 के प्रावधानों की पूर्णतया उपेक्षा करती है।

38. इसके अतिरिक्त यह भी निवेदन किया गया है कि यह निर्यातक का अधिकार है कि वह पीसीएन की पीसीएन के साथ तुलना करने का दावा कर सकता है, जैसा कि अपीलीय निकाय ने अर्जेन्टीना सिरेमिक टाइलों के मामले में निर्णय दिया था, जिसमें यह नोट किया गया था कि –

*“अनुच्छेद 2.4 के अनुसार यह दायित्व जांच प्राधिकारी का है कि वह प्रत्येक मामले में उसके गुणावगुण, जिसमें भौतिक लक्षणों में अंतर शामिल हैं, के आधार पर ऐसे अंतर के लिए व्यवस्था करेंगे, जिनसे कीमत की तुलनीय क्षमता प्रभावित होती है। अनुच्छेद 2.4 का अंतिम वाक्य में ऐसी व्यवस्था है कि प्राधिकारी संबंधित पक्षकारों को यह सूचित करेंगे कि उचित तुलना करने के लिए कौन सी सूचना आवश्यक है। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक मामले में उसके गुणावगुण के आधार पर ऐसे अंतर के लिए उचित व्यवस्था करने की आवश्यकता है, जिसका अभिप्राय यह है कि न्यूनतम स्तर पर प्राधिकारी को भौतिक लक्षणों में अभिज्ञात किए गए अंतर का मूल्यांकन करना होगा ताकि यह देखा जा सके कि क्या कीमत की तुलनीय क्षमता को बनाए रखने के लिए समायोजन किए जाने की आवश्यकता है और पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2.4 के अंतर्गत सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना सुनिश्चित हो सके और जहां कहीं भी आवश्यक हो, समायोजन किया जा सके।*

*हम अर्जेन्टीना के इस विचार से सहमत नहीं हैं कि अनुच्छेद 2.4 में योग्य भाषा से ऐसा प्रावधान किया गया है कि प्रत्येक मामले में उसके गुणावगुण के आधार पर उचित व्यवस्था की जाएगी, जांच प्राधिकारी को केवल अत्यंत महत्वपूर्ण वास्तविक अंतरों के लिए समायोजन करने की अनुमति है, हालांकि पक्षकारों की सहमति से किया गया बाकी समायोजन जटिल हो। डीसीडी ने यह वरण किया है कि मॉडल – से – मॉडल की तुलना नहीं की जाए और तब इसे कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करने वाले बाकी वास्तविक अंतरों के लिए अन्य माध्यमों का पता लगाए जाने के लिए छोड़ दिया है। उसने ऐसा नहीं किया था (पैरा 6.113 और 6.116)।”*

39. इसके अतिरिक्त यह भी तर्क दिया गया है कि ईजिप्ट-स्टील रबड के मामले में पेनल ने अनुच्छेद 2.4 को पढ़ा था जिसमें यह स्पष्ट रूप से ऐसा प्रावधान निहित है कि तथ्य के आधार पर और कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करने वाले अंतरों का अलग-अलग मामले में विश्लेषण करना आवश्यक है, जिसका पाठ निम्नानुसार है :

*“हम अनुच्छेद 2.4 को पढ़ते हैं, जिसमें यह स्पष्ट रूप से ऐसा प्रावधान निहित है कि तथ्य के आधार पर कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करने वाले अंतरों का अलग-अलग मामले में विश्लेषण करना आवश्यक है। इस संबंध में हम विशेष रूप*

से अनुच्छेद 2.4 के प्रावधान को नोट करते हैं, जिसमें यह व्यवस्था निहित है कि प्रत्येक मामले में कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करने वाले ऐसे अंतर के लिए उचित व्यवस्था की जाएगी, जो कि उसके गुणावगुण पर आधारित होगी (इस पर बल दिया गया है)। हम नोट करते हैं कि ऐसे अंतरों की संभावित निदर्शी सूची के अतिरिक्त अनुच्छेद 2.4 में ऐसी भी व्यवस्था है कि ऐसे किसी अन्य अंतर के लिए भी व्यवस्था की जाएगी जिनसे कीमत की तुलनीय क्षमता प्रभावित होती दिखाई देती है (इस पर बल दिया गया है)। अतः हम नोट करते हैं कि इस परिप्रेक्ष्य में जांच करने वाले प्राधिकारी पर निश्चयात्मक सूचना एकत्र करने का भार पड़ता है और वह इसके बारे में संबंधित पक्षकारों का सूचित करेगा कि ऐसी कौन सी सूचना आवश्यक है जिससे उचित तुलना करना सुनिश्चित हो सके और वह ऐसे पक्षकारों पर कोई अनुचित भार नहीं डालेगा (इस पर बल दिया गया है)। संक्षेप में यदि किसी विशेष मामले में अथवा किसी एक अथवा अन्य पक्षकार द्वारा यह प्रदर्शित किया गया है अथवा स्वतः आंकड़ों ने ऐसा प्रदर्शित किया है कि दिया गया अंतर, कीमत की तुलनीय क्षमता को प्रभावित करता है, तो उसके लिए समायोजन किया जाना चाहिए। पक्षकारों को जो उन पर विचार करते हैं, आंकड़ों की पहचान कराते समय उनका प्रदर्शन किया जाना आवश्यक होगा। जांच प्राधिकारी को पक्षकारों पर प्रमाण प्रस्तुत किए जाने के लिए कोई अनुचित भार नहीं डालना चाहिए। इस प्रकार उचित तुलना सुनिश्चित करने के लिए पाटन मार्जिन के समीकरण के लिए एक पक्षकार अथवा दोनों पक्षकारों के लिए किस प्रकार का समायोजन किए जाने की आवश्यकता है, इसका निर्धारण करने की प्रक्रिया, हितबद्ध पक्षकारों और जांच प्राधिकारी के बीच संवाद स्थापित करने की है और यह अलग-अलग मामले के आधार पर और वास्तविक प्रमाणों पर आधारित होनी चाहिए" (पैरा 7.352)।

40. इस निर्यातक द्वारा आगे यह भी तर्क दिया गया है कि उसने घरेलू बाजार में 44 पीसीएन को बेचा है जब कि भारत में केवल 19 पीसीएन को बेचा गया है। इनका उत्पाद मिश्रण नितांत भिन्न है। इसके अतिरिक्त एक विशिष्ट प्रकार की पीसीएन की घरेलू बाजार और भारत के बाजार में बेची गई मात्राओं में अत्यधिक अंतर है। ऐसी स्थिति में पीसीएन-वार तुलना को नहीं मानते हुए किसी भी प्रकार की तुलना करने से गलत और विषम परिणाम निकलेंगे।

41. घरेलू उद्योग ने दूसरी ओर यह निवेदन किया है कि प्राधिकारी ने समग्र उत्पाद के लिए भारित औसत तुलना प्रणाली को अपनाने का सही कदम उठाया है जो कि वर्तमान मामले में अधिक उपयुक्त है।

42. डोंगवाहा ने अपने प्रकटन पश्चात विवरण में आगे यह तर्क दिया है कि इस आधार पर ऑफ-स्पेक सामग्री को हटाया जाना कि उनकी कीमतें निम्न हैं, पूर्णतया स्वेच्छाचारी और विधि के अधिकार से सुसंगत नहीं है। विशेष कारोबार का स्वीकार करते समय केवल एक परीक्षण को लागू किया जा सकता है और वह ओसीटी परीक्षण है। यदि ओसीटी परीक्षण को पूरा कर लिया जाता है तो निम्न कीमत के कारोबार के फलस्वरूप सामान्य मूल्य बढ़ता और उसके परिणाम स्वरूप पाटन मार्जिन होता। यह तर्क दिया गया है कि जब तक ऑफ-स्पेक सामग्री को एमडीएफ के रूप में बेच नहीं दिया जाता है, तब तक उसकी अनदेखी करने का कोई प्रावधान नहीं है।

43. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए अपनाई गई कार्य-प्रणाली के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है। जहां तक तुलना करने के लिए अपनाई गई कार्य-प्रणाली का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के साथ पठित पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2.4.2 में उल्लिखित व्यवस्था निम्नानुसार है :-

"पैराग्राफ 4 में उचित तुलना को अधिशासित करने वाले प्रावधानों के अध्यधीन जांच के चरण में पाटन के मार्जिन की मौजूदगी को सामान्यतया, भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना, सभी तुलनीय निर्यात कारोबारों की भारित औसत कीमतों के साथ करके अथवा कारोबार-से-कारोबार के आधार पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों के साथ तुलना करके स्थापित किया जाएगा। भारित औसत के आधार पर स्थापित किए गए सामान्य मूल्य की तुलना, पृथक निर्यात कारोबार की कीमतों से की जा सकती है, यदि प्राधिकारी निर्यात कीमतों के एक ऐसे पैटर्न पाते हैं, जो कि विभिन्न क्रेताओं, क्षेत्रों अथवा समय अवधि में अत्यधिक भिन्न होता है और यदि कोई स्पष्टीकरण दिया जाता है कि ऐसी भिन्नताओं को भारित औसत - से - भारित औसत अथवा कारोबार-से-कारोबार की तुलना करके उपयुक्त रूप से ध्यान में क्यों नहीं रखा जा सकता है"।

44. जब कि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मॉडल से मॉडल" अथवा "समान वस्तु की समान वस्तु" से तुलना करने की कार्य-प्रणाली को तरजीह दी जाती है, बशर्ते कि उत्पाद को स्पष्ट रूप से ऐसे विशिष्ट मॉडल अथवा उत्पाद किस्म में वर्गीकृत किए जा सकता हो, जिसके भौतिक और/अथवा रसायनिक अंतर को उनकी लागत और कीमत पर प्रभाव पड़ता हो और इस प्रकार उनकी तुलनीय क्षमता प्रभावित होती हो। तथापि, मौजूदा मामला, ऐसा मामला प्रतीत नहीं होता है।

45. संबद्ध वस्तुएं विभिन्न मोटाई में विनिर्मित की जाती हैं और जैसे-जैसे उनकी मोटाई कम होने लगती है, उनके उत्पादन की लागत बढ़ने लगती है, क्योंकि उसके लिए अत्यधिक अपशिष्ट होने लगता है तथा कम मोटाई के उत्पादों का विनिर्माण करने में मशीन पर अधिक समय लगता है। हालांकि उत्पाद विभिन्न मोटाई में बेचा जाता है, लेकिन उत्पादकों द्वारा उसकी मोटाई के आधार पर उसकी लागत को

अभिग्रहीत अथवा अनुरक्षित नहीं जाता है। किसी भी उत्पादक ने लागत को मोटाई-वार अथवा उत्पाद के कोड-वार नहीं रखा है, जब कि उनके पास उत्पाद की संहिताकरण - प्रणालियां विद्यमान हैं। कीमत के संबंध में भी यह देखा गया है कि विभिन्न मोटाई के उत्पादों की कीमत यादृच्छिक है और वे किसी पैटर्न का अनुसरण नहीं करती हैं, हालांकि कम मोटाई के उत्पाद अधिक कीमत के होने चाहिए क्योंकि उनकी अधिक लागत होती है। जहां तक कि एक मोटाई के उत्पाद में किसी निश्चित पैटर्न अथवा प्रवृत्ति के बिना उनकी कीमतों में व्यापक अंतर रहता है ताकि यह निर्दिष्ट हो सके कि निर्यातक द्वारा दावा की गई मोटाई अथवा अन्य विशेषताएं कीमत की तुलनीय क्षमता को वास्तविक रूप से प्रभावित करती हैं। संबद्ध देशों में सभी उत्पादकों के घरेलू बाजार के साथ-साथ निर्यात बाजार में कीमतें, मोटाई अथवा उत्सर्जन मानकों पर आधारित किसी विशेष पैटर्न को अनुसरण नहीं करती हैं, जिससे कि यह सिद्ध हो सके कि कीमतें, मोटाई अथवा उत्सर्जन मानकों में भिन्नता से प्रभावित होती हैं, ताकि उन्हें विशिष्ट मॉडल अथवा किस्म के उत्पाद के रूप में पहचाना जा सके। वास्तव में ऊपर उद्धृत विश्व व्यापार संगठन के निर्णय इस बात पर बल देते हैं कि जिन अंतरों से कीमत की तुलनीय क्षमता प्रभावित होती है, उनको ऐसी तुलना का दावा करने वाले पक्षकार को प्रदर्शित किए जाने की आवश्यकता है।

46. इसलिए ऐसी स्थिति में जहां कि उत्पाद में भिन्नता होने से कीमतें प्रभावित हुईं प्रतीत नहीं होती हैं, जैसा कि निर्यातक ने दावा किया है, वहां उत्पादक किस्म पर आधारित तुलना करने का मामला नहीं बनता है। वास्तव में उत्पादक उत्पाद को बहुत मानक और समान उत्पाद मान रहे हैं। सही कारण यही है कि जहां विशिष्ट पीसीएन विद्यमान नहीं हैं, वहां केवल तुलनीय उत्पाद किस्मों तक ही तुलना को सीमित रख कर पीसीएन-वार विश्लेषण किया जाना, इस मामले के वास्तविक सांचे में उपयुक्त नहीं पाया गया है। तदनुसार प्राधिकारी प्रकटन विवरण में अपनाई गई कार्य-प्रणाली की संपुष्टि करते हैं और संबद्ध देशों से सभी सहयोगी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की भारित औसत तुलना करने के लिए भारित औसत के साथ आगे की कार्रवाई करते हैं।

47. जहां तक ऑफ-स्पेक सामग्री के मुद्दे के संबंध में प्राधिकारी ने नोट किया है कि उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान दोष युक्त अथवा पुराने ग्रेड के उत्पाद की कुछ मात्रा सृजित हो जाती है जिसे बहुत कम कीमतों पर बेचा दिया जाता है। संबद्ध देशों में कुछ उत्पादकों ने ऐसे उत्पादों को ऑफ-स्पेक के रूप में स्पष्ट रूप से अभिज्ञात किया है। इस प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक को उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर में ऐसे कारोबार को अभिज्ञात कर लेना चाहिए था। हालांकि डोगबाहा ने ऐसी सामग्री को घरेलू बाजार में उसकी लागत से 50% कम कीमत पर बेचा है, जिससे यह स्पष्ट स्थापित हो जाता है कि ये ऑफ-स्पेक सामग्री है जिसे कंपनी ऑफ-स्पेक सामग्री के रूप में पहचानने में विफल रही है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कहीं भी ऑफ-स्पेक सामग्री/मिल द्वारा खारिज अथवा पुरानी सामग्री की तुलना, मुख्य सामग्री के साथ नहीं की जाती है। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए ऐसी बिक्रियों को शामिल करने से निर्धारण विकृत होता है, क्योंकि ये तुलनीय कारोबार नहीं हैं। इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ बहुत कम कीमत की बिक्रियों वाले ऐसे कारोबार को घरेलू बिक्रियों के कारोबार से हटा लिए जाने की आवश्यकता है।

48. तथापि, जैसा कि उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा उल्लेख किया गया है, उनके निजी आंकड़ों में निर्धारण में कुछ संशोधन किए गए हैं और जितना सही पाया गया है, निर्धारण को उस सीमा तक संशोधित किया गया है।

49. घरेलू उद्योग ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी को निर्यातकों की सत्यापन रिपोर्टों का प्रकटन करना चाहिए। यह तर्क दिया गया है कि सत्यापन रिपोर्टों का प्रकटन करना प्रथमतः इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पाटन-रोधी शुल्क की वर्तमान मात्रा अपर्याप्त है। द्वितीय निर्यातकों ने पाटन मार्जिन के विद्यमान होने से संबंधित मुद्दों के उत्तर नहीं दिए हैं और तृतीय इस कारण से कि निर्यातकों के कम पाटन के दावे संदेहास्पद हैं और इनकी विस्तार से जांच किए जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि सत्यापन रिपोर्ट एक गोपनीय दस्तावेज है जिसे प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है और इसमें निर्यातकों की व्यवसाय के स्वामित्व संबंधी सूचना निहित है। इसलिए एक सुसंगत पद्धति के अनुसार इसे किसी भी अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया जाता है। निर्यातकों की लागत और कीमत संबंधी मुद्दों के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों के संबंध में स्थल पर सत्यापन करने के समय पर्याप्त रूप से जांच की गई है और इनका निदान परिणाम में किया गया है। इसलिए इस संबंध में घरेलू उद्योग के तर्कों का निराकरण कर दिया गया है।

## **छ. 1. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमतों और पाटन मार्जिन का निर्धारण**

### **विएतनाम**

50. विश्लेषित आयात आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि के दौरान विएतनाम से 45,386 सीबीएम मूल्य की संबद्ध वस्तुओं के आयात किए गए हैं। विएतनाम से तीन उत्पादन करने वाले निर्यातकों ने पूरी प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं और उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की जितना संभव हो सका है, जांच की गई है। तदनुसार विएतनाम से उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किए जाने का प्रस्ताव है:-

**(क) मेसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी (उत्पादन करने वाला निर्यातक) के साथ मेसर्स किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (निर्यातक)**

51. मेसर्ज किम टिन एमडीएफ ज्वाईंट स्टॉक कंपनी (जेएससी) जो कि संबद्ध वस्तुओं की उत्पादक होने के साथ-साथ निर्यातक भी है, ने अपनी संबंधित व्यापारिक कंपनी, मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (केटीटी) जो कि उक्त कंपनी द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तुओं की जांच अवधि के दौरान भारत में निर्यातक है, के साथ प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। मेसर्ज किम टिन एमडीएफ ज्वाईंट स्टॉक कंपनी (जेएससी) वस्तुओं की उत्पादक कंपनी है और वह मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (केटीटी) को वस्तुएं बेचती है, जो उसके बदले में ऐसी वस्तुओं को घरेलू बाजार में बेचती है और साथ ही उनका निर्यात मुख्यतया भारत को करती है। जेएससी ने अपने एक संबद्ध वास्तविक प्रयोक्ता को सीधे घरेलू बाजार में बहुत कम मात्रा में उनको बेचा है और साथ ही जांच अवधि के दौरान भारत का कुछ मात्रा में सीधा निर्यात भी किया है। जहां कहीं भी आवश्यक समझा गया था, इन दोनों कंपनियों ने अनुपूरक सूचना मंगाई गई थी और उन्होंने ऐसी सूचना प्रदान कर दी है। इस संयुक्त उत्पादक-निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जितना संभव हो सका है स्थल पर जांच की गई है और ऐसे सत्यापित आंकड़ों को इस निर्धारण के लिए प्रयुक्त किया गया है।

#### सामान्य मूल्य

52. जांच अवधि के दौरान मेसर्ज किम टिन एमडीएफ ज्वाईंट स्टॉक कंपनी (जेएससी) ने मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (केटीटी) के माध्यम से {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की थी, जिनमें से {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री, स्वतंत्र असंबद्ध ग्राहकों को की गई थी और शेष {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री, उसकी संबंधित कंपनी, मेसर्ज किम टिन ग्रीन वुड जेएससी, जो कि फर्नीचर की विनिर्माता है, को की गई थी। इसके अतिरिक्त जांच अवधि में जेएससी ने {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री सीधे मेसर्ज किम टिन ग्रीन वुड जेएससी को की थी। जेएससी - केटीटी के घरेलू कारोबार के \*\*\*% स्वतंत्र घरेलू बिक्रेताओं को किए गए थे। घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में की गई हैं। कंपनी ने विभिन्न मोटाई और उत्सर्जन मानकों में संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन किया है और उन्हें बेचा है। तथापि, कंपनी समग्र उत्पाद के उत्पादन की लागत बनाए रखती है। उत्पादक के उत्पादन की औसत लागत और व्यापारिक कंपनी के एसजीए व्यय का निर्धारण, सत्यापित लागत के आंकड़ों के आधार पर किया गया था और उत्पादक से मंगाई गई अतिरिक्त सूचना, यू.एस. डालर {\*\*\*}/सीबीएम है।

53. चूंकि जेडीसी और केटीटी के बीच किया गया पहला कारोबार, सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ संबंधित पार्टी का कारोबार है, इसलिए स्वतंत्र क्रेताओं को केटीटी की बिक्री कीमत पर विचार किया गया है। घरेलू बाजार में कम मात्रा में आपूर्ति की गई ऑफ-स्पेक सामग्री को हटा लिया गया है और केटीटी के शेष घरेलू बिक्री कारोबार को व्यापारिक जांच की सामान्य कार्रवाई के अध्यक्षीन रखा गया है। उत्पादन करने वाले निर्यातक ने प्रकटन प्रश्नात अपनी टिप्पणियों में सैद्धांतिक परिवहन लागत के निरूपण के संबंध में आसीटी जांच में हुई कुछ गलतियों का उल्लेख किया है। उठाए गए इस मुद्दे की जांच की गई है और अंतिम निर्धारण करने के लिए उन पर विचार किया गया है। चूंकि केटीटी की कीमतें, सुपुर्दगी कीमतें हैं, इसलिए केटीटी द्वारा संबद्ध वस्तुओं की बिक्रियों की सत्यापित औसत लागत के आधार पर इन घरेलू बिक्रियों के कारोबार पर की गई सामान्य व्यापारिक जांच, जेएससी के उत्पादन की लागत पर केटीटी के एसजीसी के व्ययों को जोड़ने के बाद की गई है। घरेलू बिक्रियों का {\*\*\*} % लाभप्रद पाया गया है। तदनुसार इस संयुक्त उत्पादक-निर्यातक के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए केटीटी की केवल लाभप्रद घरेलू बिक्रियों पर विचार किया गया है। स्वतंत्र क्रेताओं को घरेलू कारोबार संवितरित आधार पर किया जाता है। निर्यातक ने सैद्धांतिक आधार पर अंतरदेशीय परिवहन पर हुए व्यय का समायोजन करने का दावा किया है, क्योंकि व्यापारिक कंपनी ने अपने ट्रकों का इस्तेमाल करके परिवहन किया था और यह व्यय, उत्पादक की लेखा बहियों में प्रतिबिंबित नहीं होता है। इसलिए ऐसे समायोजन को स्वीकार नहीं किया गया है। उत्पादन करने वाले निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में अंतरदेशीय भाड़े पर समायोजन करने के अपने दावे को इस आधार पर दोहराया है कि संबंधित व्यापारिक कंपनी ने वस्तुओं का परिवहन अपने निजी ट्रकों द्वारा किया है और इसलिए जैसा दावा किया गया है, उसे सैद्धांतिक समायोजन करने की अनुमति दी जाए। तथापि, प्राधिकारी इस तर्क को यथोचित नहीं पाते हैं, क्योंकि न तो उत्पादक ने और न ही निर्यातक ने इस मद पर हुए हुए वास्तविक व्यय के आधार पर कोई दावा नहीं किया है। निर्यातक द्वारा व्यापारिक कंपनी की घरेलू बिक्री कीमत पर किसी अन्य व्यय का कोई दावा नहीं किया गया है। तदनुसार उपरोक्त उत्पादकों/निर्यातकों के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य का पूर्वाकलन निम्नानुसार है :-

		विनिमय दर	21036
लाभप्रद बिक्रियां सीबीएम	एनईटी बीजक मूल्य की राशि जिसमें वीएटी को शामिल नहीं किया गया है	कारखाना-गत कीमत वीएनडी/सीबीएम	कारखाना-गत निबल मूल्य यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***

**निर्यात कीमत**

54. मेसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाईंट स्टॉक कंपनी (जेएससी) ने उसके द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के {\*\*\*} सीबीएम मूल्य के सीधे निर्यात किए थे और {\*\*\*} सीबीएम मूल्य के निर्यात, उसकी संबद्ध कंपनी, मेसर्स किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (केटीटी) के माध्यम से किए थे। सीधे किए गए निर्यातों में मेसर्स किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड शामिल नहीं थी, सिवाए परिवहन की सेवाओं को छोड़ कर, जिसका भुगतान कर दिया गया है। तथापि, मेसर्स किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (केटीटी) द्वारा किए गए सभी निर्यात, मेसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाईंट स्टॉक कंपनी (जेएससी) द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के थे। इन दोनों संबंधित कंपनियों द्वारा भारत में की गई निर्यात बिक्रियां एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

55. किम टिन जेएससी की निर्यात बिक्रियां सीएफआर/एफओबी/सीएनएफ आधार पर हैं और ये टीटी अथवा एलसी की प्रदर्श शर्तों पर हैं। प्रत्यक्ष बिक्रियों के लिए कोई कमीशन का भुगतान नहीं किया गया है और घरेलू और निर्यात बिक्रियों की पैकिंग दशा में कोई अंतर नहीं है। कंपनी ने जहां कहीं भी समायोजन के लिए लागू होता है, वहां अंतरदेशीय परिवहन और समुद्री भाड़े, पत्तन प्रबंधन प्रभारों, ऋण संबंधी व्ययों और बैंक प्रभारों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है ताकि कारखाना-गत निर्यात कीमत का पूर्वाकलन किया जा सके।

56. जहां तक किम टिन ट्रेडिंग कंपनी का संबंध है, ये भी सीएफआर/एफओबी/सीएनएफ आधार पर हैं और ये टीटी अथवा एलसी की प्रदर्श शर्तों पर हैं। कंपनी ने जहां कहीं भी समायोजन के लिए लागू होता है, वहां अंतरदेशीय परिवहन और समुद्री भाड़े, पत्तन प्रबंधन प्रभारों, ऋण संबंधी व्ययों और बैंक प्रभारों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है ताकि कारखाना-गत निर्यात कीमत का पूर्वाकलन किया जा सके।

57. उत्पादन करने वाले निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में यह तर्क दिया है कि उसने घरेलू के साथ-साथ निर्यात बिक्रियों दोनों में सैद्धांतिक आधार पर अंतरदेशीय भाड़े का समायोजन किए जाने का दावा किया है। इसलिए प्राधिकारी को निर्यात कारोबार के लिए भी अंतरदेशीय परिवहन लागत की उपेक्षा करनी चाहिए, ताकि अंतरदेशीय भाड़े के समान घरेलू बिक्री कीमत और निर्यात कीमत के निरूपण में समानता सुनिश्चित हो सके। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि जब कि घरेलू बिक्रियां सीधे और आंशिक रूप से व्यापारिक कंपनी नामतः केटीटी के माध्यम से की गई हैं, जिसके लिए जेएससी ने केटीटी को बन्दरगाह तक की परिवहन लागत का भुगतान किया है। निर्यात बिक्रियों के कारोबार के मामले में किए गए ऐसे वास्तविक भुगतान का समायोजन, निर्यात कीमत से कर लिया गया है और इसलिए निर्धारण करने की कार्य-प्रणाली में कोई असमानता नहीं है, जैसा कि तर्क दिया गया है।

58. तदनुसार इस संयुक्त उत्पादक-निर्यातक की निर्यात कीमत का निर्धारण निम्नानुसार करने का प्रस्ताव है :-

	मात्रा की राशि सीबीएम	निबल मूल्य की राशि यू.एस. डालर	भारित औसत निर्यात कीमत यू.एस. डालर/ सीबीएम
किम टिम जेएससी	***	***	***
किम टिम ट्रेडिंग	***	***	***

**पाटन मार्जिन**

59. इस प्रकार से निर्धारित किया गया भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना उसी स्तर पर निबल निर्यात कीमत के साथ किए जाने का प्रस्ताव है ताकि पाटन मार्जिन का पता लगाया जा सके जो कि निम्नानुसार है :-

निर्यातक	भारित औसत सामान्य मूल्य यू.एस. डालर/ सीबीएम	भारित औसत निर्यात कीमत यू.एस. डालर/ सीबीएम	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
किम टिम जेएससी	***	***	***	0-10 %
किम टिम ट्रेडिंग	***	***	***	0-10 %



**(ब) मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी, विएतनाम**

60. मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी, जो कि डोंगभा विना कंपनी लिमिटेड, हांगकांग, डोंगभा हांग कांग, डोंगभा हांग कांग इंटरनेशनल लिमिटेड और विएतनाम रबड ग्रुप (वीआरजी) के बीच एक संयुक्त कंपनी है, ने इस मामले में प्रश्नावली के अपने उत्तर प्रस्तुत किए हैं। प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर कंपनी सह अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था जो कि उसने प्रस्तुत कर दी है। कंपनी के पास आधुनिक और स्वचालित संयंत्र हैं, जिसने {\*\*\*} सीबीएम की अपनी वार्षिक क्षमता के साथ मई, 2012 में साथ वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया था। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुएं बेची थीं, जिनमें से {\*\*\*} सीबीएम की वस्तुएं घरेलू बाजार में बेची गई थीं और {\*\*\*} सीबीएम की वस्तुओं के निर्यात भारत को किए गए थे। {\*\*\*} सीबीएम की कम मात्रा के निर्यात अन्य देशों को भी किए गए थे। कंपनी वस्तुओं की सीधी बिक्री घरेलू बाजार के साथ-साथ निर्यात बाजारों को करती है। उत्पादन करने वाले इस निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जितना संभव हो सका है, स्थल पर जांच की गई है। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण, सत्यापित आंकड़ों के आधार करने का प्रस्ताव है, जो कि निम्नानुसार है :-

**सामान्य मूल्य**

61. यह नोट किया गया था कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं, जिनमें विभिन्न मोटाई के उत्पाद शामिल हैं, की {\*\*\*} सीबीएम की कुल मात्रा की बिक्री की है। मोटाई और उत्सर्जन मानकों में बेची गई संबद्ध वस्तुओं की {\*\*\*} सीबीएम की कुल मात्रा में से उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने अपने उत्पाद को उत्पाद की विभिन्न किस्मों में वर्गीकृत किया है और भारत को {\*\*\*} किस्म के उत्पादों को निर्यात किए थे। निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि उचित तुलना के प्रयोजनार्थ भारत को निर्यातित {\*\*\*} किस्म के उत्पादों की घरेलू बिक्रियों के कारोबार पर ही विचार किया जाना चाहिए और सामान्य मूल्य का निर्धारण, केवल उन्हीं बिक्री कारोबार के आधार पर किया जाना चाहिए। तथापि, जैसा कि पहले नोट किया गया है, प्राधिकारी इस मामले में भारित औसत तुलना करने की पद्धति की अपेक्षा भारित औसत को अधिक उपयुक्त पाते हैं।

62. उत्पादन करने वाले निर्यातक द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की औसत लागत का निर्धारण सत्यापित लागत आंकड़ों के आधार पर किया गया था और उत्पादक से अतिरिक्त सूचना मंगाई गई थी, जो कि यू.एस. डालर {\*\*\*}/सीबीएम है। घरेलू बाजार में बहुत कम कीमत पर बेची गई ऑफ-स्पेक सामग्री की कम मात्रा को हटा लिया गया है और जैसा कि कंपनी द्वारा समग्र उत्पाद के लिए बना कर रखा गया है, बाकी घरेलू बिक्रियों के कारोबार को उत्पादन की सत्यापित औसत लागत के आधार पर ओसीटी जांच के अधधीन रखा गया है। यह नोट किया गया था कि घरेलू उद्योग की {\*\*\*} % बिक्रियां लाभप्रद हैं। तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ बहुत कम कीमत पर बेची गई ऑफ-स्पेक सामग्री को छोड़ कर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए समग्र घरेलू बिक्रियों पर विचार किए जाने का प्रस्ताव है।

63. घरेलू बिक्रियां असंबद्ध अंत प्रयोक्ताओं के साथ-साथ स्थानीय वितरकों/व्यापारियों को घर-घर सुपुर्दगी करने के आधार पर और भुगतान की विभिन्न शर्तों पर की जाती हैं। तदनुसार उत्पादक/निर्यातक ने घरेलू परिवहन, जहां ऋण अवधि शामिल है, वहां ऋण लागत और जहां कहीं भी भुगतान बैंक पराक्रमण के माध्यम से किया गया है, वहां बैंक प्रभार के लिए समायोजन किए जाने का दावा किया है। चूंकि घरेलू बिक्रियों और निर्यात बिक्रियों के लिए पैकिंग में कोई अंतर नहीं है, इसलिए पैकिंग लागत का कोई समायोजन लागू नहीं होता है। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए औसत कार्यगत सामान्य मूल्य का पूर्वकालन निम्नानुसार है :-

घरेलू बिक्रियों की मात्रा सीबीएम	निबल बीजक मूल्य की राशि यू.एस. डालर	वसूल की गई निबल बीजक मूल्य की राशि यू.एस. डालर	भारित औसत निर्यात कीमत यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***

**निर्यात कीमत**

64. जांच अवधि के दौरान कंपनी ने {\*\*\*} के कारोबार की तुलना में भारत को {\*\*\*} सीबीएम की कुल मात्रा की बिक्री की है। भारत को निर्यात, असंबद्ध प्रयोक्ताओं को एफओबी अथवा सीएफआर शर्तों पर किए जाते हैं। भारत को निर्यातों के लिए भुगतान की

शर्तों में एल/सी के साथ उपयोग अवधि/साईट एलसी/टीटी भुगतान निहित है। सीएफआर के आधार पर भारत को की गई कुल बिक्रियों के लिए सीएफआर चरण तक के व्यय का वहन, निर्यातक द्वारा किया गया है और सीएफआर पश्चात सभी व्ययों का वहन, आयातक द्वारा किया गया है। इसी प्रकार एफओबी बिक्रियों के मामले में एफओबी के चरण तक के सभी व्यय का वहन निर्यातक द्वारा किया जाता है और बाकी व्यय का वहन आयातक द्वारा किया जाता है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री परिवहन, कमीशन, पैकिंग प्रभारों, समायोजन के लिए ऋण लागत और बैंक प्रभारों के बारे में व्यापक सूचना प्रस्तुत की है ताकि भारत औसत कार्यगत निर्यात कीमत का पूर्वकलन किया जा सके। निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में यह निवेदन किया है कि उसके द्वारा प्रदान की गई सत्यापित ब्याज दर को निर्यात कीमत में समायोजन के लिए प्रयुक्त किया जाना चाहिए था। इसे स्वीकार कर लिया गया है और ऋण लागत को तदनुसार आशोधित कर दिया गया है। निर्यातक ने निर्यात कीमत से समायोजित ब्याज प्रभार का भी खंडन किया है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि कंपनी द्वारा अदा किए गए बैंक प्रभारों को केवल बैंक के माध्यम से किए गए कारोबार के लिए समायोजित किया गया है और न कि सभी कारोबार के लिए।

65. तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए औसत कार्यगत निर्यात कीमत का पूर्वकलन निम्नानुसार है :-

रो लेबिल्स	मात्रा की राशि	निबल बीजक मूल्य की राशि यू.एस. डालर	संशोधित कारखाना-गत निबल मूल्य यू.एस. डालर	भारित औसत निर्यात कीमत यू.एस. डालर/ सीबीएम
कुल योग	***	***	***	***

#### पाटन मार्जिन

66. इस प्रकार से निर्धारित किया गया भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना उसी स्तर पर भारत औसत निबल निर्यात कीमत से करने का प्रस्ताव है, ताकि पाटन मार्जिन प्राप्त किया जा सके, जो कि निम्नानुसार है :-

	यू.एस. डालर/सीबीएम
भारित औसत निबल मूल्य	***
भारित औसत निर्यातक कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन %	5-15 %

#### (ग) एमडीएफ वीआरजी क्यूआंग ट्रि बुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी

67. एमडीएफ वीआरजी क्यूआंग ट्रि बुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी जो कि विएतनाम सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन कंपनी है, ने संबद्ध वस्तुओं के एक उत्पादक और निर्यातक के रूप में प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। कंपनी की अधिकतर शेयरधारिता {\*\*\*%} विएतनाम रबड ग्रुप के स्वामित्वाधीन है, जो कि विएतनाम सरकार की एक कंपनी है। यह कंपनी संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करती है और उन्हें घरेलू बाजार के साथ-साथ निर्यात बाजार में बेचती है तथा उसने प्रश्नावली के विस्तृत उत्तर प्रस्तुत किए हैं। प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर उत्पादन करने वाले इस निर्यातक से अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था जो कि प्रस्तुत कर दी गई है। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जितना आवश्यक समझा गया और संभव हुआ है, विएतनाम में स्थल पर जांच की गई है। तदनुसार इस कंपनी के सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों का निर्धारण, सत्यापित आंकड़ों पर किए जाने का प्रस्ताव है, जो कि निम्नानुसार है :-

#### सामान्य मूल्य

68. जांच अवधि के दौरान कंपनी ने {\*\*\*} के कारोबार की तुलना में विभिन्न मोटाई और उत्सर्जन मानकों की {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की है। घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में की जाती हैं। बिक्रियां असंबद्ध व्यापारियों और अंत प्रयोक्ताओं को कारखाना-

गत कीमत पर अथवा सुपुर्दगी के आधार पर की जाती हैं, जो कि नकद या विभिन्न दिनों के ऋण के भुगतान करने की शर्त पर होती हैं। उत्पादक के उत्पादन की औसत लागत का निर्धारण सत्यापित लागत आंकड़ों के आधार पर किया गया था और उत्पादक से मंगाई गई अतिरिक्त सूचना यू.एस. डालर {\*\*\*} /सीबीएम के रूप में है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऑफ-स्पेक सामग्री की कुछ मात्रा घरेलू बाजार में बेची गई है। तथापि, निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में ऑफ-स्पेक सामग्री को बाहर रखने में कुछ गलतियों का उल्लेख किया है, जिन पर विचार किया गया है और केवल ऑफ-स्पेक सामग्री के रूप में अभिज्ञात किए गए कारोबार को हटा दिया गया है और कंपनी के रिकार्ड के अनुसार उत्पादन की उपरोक्त सत्यापित औसत लागत के आधार पर ओसीटी जांच के अध्यक्षीन रखा गया था। घरेलू उद्योग की केवल {\*\*\*}% बिक्रियों को लाभप्रद पाया गया है। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए केवल लाभप्रद घरेलू बिक्री कारोबार पर ही विचार किया गया है। कंपनी ने निर्यात कीमत पर समायोजन करने के लिए जहां कहीं भी लागू होता है, घरेलू बिक्री कारोबार पर छूट, अंतरदेशीय परिवहन और ऋण लागत पर हुए व्ययों के व्यौरे प्रस्तुत किए हैं ताकि कार्यगत निर्यात कीमत प्राप्त की जा सके। तदनुसार निबल औसत कार्य-गत सामान्य मूल्य का पूर्वकलन निम्नानुसार है :-

रो लेबिल्स	मात्रा की राशि (सीबीएम)	निबल बीजक मूल्य की राशि (वीएनडी)	समायोजित कारखाना-गत मूल्य की राशि वीएनडी	समायोजित कारखाना-गत मूल्य की राशि यू.एस. डालर	भारित औसत निबल मूल्य यू.एस. डालर/सीबीएम
लाभप्रद बिक्रियां	***	***	***	***	***

#### निर्यात कीमत

69. जांच अवधि के दौरान उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने {\*\*\*} के कारोबार की तुलना में भारत को {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं। भारत को निर्यात, असंबद्ध प्रयोक्ताओं को एफओबी/सीएफआर के आधार पर और टीटी/एलसी शर्तों पर किए जाते हैं। कंपनी ने, जहां कहीं भी लागू होता है, समुद्री भाड़े के कारण पर निर्यात कारोबार का समायोजन करने के लिए, अंतरदेशीय भाड़े, सीमा शुल्क प्रबंधन और क्लीयरेंस प्रभारों, समायोजन के लिए ऋण लागत, कमीशन और बैंक प्रभारों के बारे में व्यापक सूचना प्रस्तुत की है ताकि कार्यगत स्तर पर निर्यात कीमत का समायोजन किया जा सके। प्रतिवादी निर्यातक ने निर्यात कीमत का निर्धारण करने में कमीशन की राशि में कुछ अंतर होने का उल्लेख किया है जिसे ठीक कर दिया गया है। इस सूचना के आधार पर उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए निबल भारित औसत कार्यगत निर्यात कीमत निम्नानुसार है :-

मात्रा की राशि (सीबीएम)	निबल बीजक मूल्य की राशि जिसमें वीएटी को शामिल नहीं किया गया है	वसूल किया गया संशोधित कारखाना-गत निबल मूल्य यू.एस. डालर	निबल निर्यात कीमत यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***

#### पाटन मार्जिन

70. इस प्रकार से निर्धारित किया गया भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना उसी स्तर पर भारित औसत निबल निर्यात कीमत से करने का प्रस्ताव है, ताकि पाटन मार्जिन का अक्कलन किया जा सके, जो कि निम्नानुसार है :-

		अमरीकी डालर/सीबीएम
भारित औसत निबल मूल्य	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
भारित औसत निर्यातक कीमत	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन %	%	5-15 %

**(घ) विएतनाम में सभी अन्य निर्यातक**

71. विएतनाम में सभी अन्य असहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण, उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किए जाने का प्रस्ताव है, जिसके लिए सहयोगी निर्यातक के आंकड़ों को ध्यान में रखा गया है, जो कि निम्नानुसार है :-

		अमरीकी डालर/सीबीएम
भारित औसत निबल मूल्य	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
भारित औसत निर्यातक कीमत	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन %	%	30-40 %

**इंडोनेशिया****(क) मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड, इंडोनेशिया**

72. मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबर बोर्ड, इंडोनेशिया, इंडोनेशिया में एमडीएफ और एचडीएफ का प्रमुख विनिर्माता कंपनी है। यह विदेशी निवेशित प्राईवेट लिमिटेड कंपनी है जिसे इंडोनेशिया के कंपनी नियमों के अनुसार निगमित किया गया है। इस कंपनी के अधिकतर शेयर धारिता दो विदेशी निवेशक कंपनियों की है। जांच अवधि के दौरान उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुएं बेची थीं, जिनमें से {\*\*\*} सीबीएम की वस्तुएं घरेलू बाजार में बेची गई थीं और {\*\*\*} सीबीएम की वस्तुओं के निर्यात भारत को और और {\*\*\*} सीबीएम की वस्तुओं के निर्यात अन्य देशों को किए थे। इस कंपनी ने इंडोनेशिया में संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने वाले निर्यातक के रूप में प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। जहां कहीं भी आवश्यक हुआ था, इस कंपनी से अनुपूरक सूचना मंगवाई गई थी और यह सूचना प्रदान कर दी गई है। उत्पादन करने वाले इस निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का जितना संभव हुआ है, ऑन-साईट सत्यापन कर लिया गया है और ऐस सत्यापित आंकड़ों का उपयोग इस निर्धारण के लिए किया गया है।

**सामान्य मूल्य**

73. जांच अवधि के दौरान कंपनी ने विभिन्न मोटाई और उत्सर्जन मानकों की {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री घरेलू बाजार में की थीं और ये बिक्रियां इंडोनेशिया में असंबद्ध ग्राहकों (अंतः प्रयोक्ताओं के साथ-साथ पुनःविक्रेताओं) को की गई थीं। घरेलू बाजार में ये समस्त बिक्रियां सुपुर्दगी के आधार पर की गई थीं, लेकिन केवल {\*\*\*} सीबीएम की बिक्रियां कारखाना-गत स्तर पर की गई थीं। उत्पादक के उत्पादन की औसत लागत का निर्धारण सत्यापित लागत आंकड़ों के आधार पर किया गया था और उत्पादक से मंगवाई गई अतिरिक्त सूचना यू.एस. डालर {\*\*\*} /सीबीएम के रूप में है। कंपनी ने घरेलू बाजार में ऑफ-स्पेक सामग्री नहीं बेची है। घरेलू बिक्रियों के कारोबार को उपरोक्त उत्पादन की सत्यापित औसत लागत के आधार पर व्यापार की जांच की सामान्य प्रक्रिया (ओसीटी) के अध्यक्षीन रखा गया था। कंपनी के रिकार्ड के अनुसार घरेलू उद्योग की {\*\*\*} % बिक्रियों को लाभप्रद पाया गया है। तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के समस्त घरेलू बिक्री कारोबार पर विचार किया गया है। कंपनी घरेलू बिक्रियों में परिवहन लागत को छोड़कर और किसी भी प्रकार का कोई व्यय नहीं करती है। बिक्रियां नकद भुगतान के आधार पर की जाती हैं, जिसके लिए \*\*\*दिनों का उधार दिया जाता है, जिसके लिए कंपनी ने ऋण लागत के समायोजन का दावा किया है। घरेलू और निर्यात बिक्रियों के बीच पैकिंग की दशा में कोई अंतर नहीं है। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए औसत कार्यगत सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नानुसार करने का प्रस्ताव है :-

लाभप्रद बिक्रियों की राशि सीबीएम	निबल बीजक मूल्य की राशि आईडीआर	कार्य-गत निबल मूल्य की राशि आईडीआर	कार्य-गत कीमत आईडीआर/सीबीएम	भारित औसत निबल मूल्य यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***	***

**निर्यात कीमत**

74. जांच अवधि के दौरान कंपनी ने विभिन्न मोटाई और उत्सर्जन मानकों की {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं के निर्यात भारत को किए थे। इनमें से {\*\*\*} सीबीएम के निर्यात, सीधे उनके द्वारा किए गए थे और बाकी निर्यात, सिंगापुर स्थित दो व्यापारिक कंपनियों के माध्यम से किए गए थे, जिनमें से {\*\*\*} सीबीएम के निर्यात, मेसर्ज नाओलिन इंटरप्राइज प्राईवेट लिमिटेड, सिंगापुर और {\*\*\*} सीबीएम के निर्यात, मेसर्ज इटोचू सिंगापुर प्राईवेट लिमिटेड, सिंगापुर के माध्यम से किए गए थे। इन दोनों कंपनियों ने अपनी बिक्रियों के व्यौरे, प्राधिकारी को प्रस्तुत किए हैं।

75. भारत का निर्यात बिक्रियां अंत प्रयोक्ताओं और पुनःविक्रेताओं दोनों को की जाती हैं, जो कि सीएफआर/सीएनएफ आधार पर होती हैं। इनके भुगतान की शर्त, \*\*\*दिनों के उधार पर साईट एलसी/टीटी होती है। कंपनी ने अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़े, कमीशन और बैंक प्रभारों का समायोजन करने के लिए सूचना प्रदान कर दी है। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए औसत कार्यगत निर्यात कीमत का निम्नानुसार निर्धारण करने का प्रस्ताव है :-

मात्रा की राशि	निबल बीजक मूल्य की राशि यू.एस. डालर	कुल समायोजन की राशि यू.एस. डालर	निबल मूल्य की राशि यू.एस. डालर डालर	भारित औसत निर्यात कीमत यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***	***

**पाटन मार्जिन**

76. इस प्रकार से निर्धारित किया गया भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना उसी स्तर पर भारित औसत निबल निर्यात कीमत से करने का प्रस्ताव है, ताकि पाटन मार्जिन का अक्कलन किया जा सके जो कि निम्नानुसार है :-

		अमरीकी डालर/सीबीएम
भारित औसत निबल मूल्य	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
भारित औसत निर्यातक कीमत	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन %	%	20-30 %

77. इस निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपनी टिप्पणियों में यह तर्क दिया है कि घरेलू बिक्रियों में उनकी ऋण अवधि को \*\*\* दिनों के रूप में लिया जाना चाहिए था और निर्यात बिक्रियों के मामले में ऋण अवधि को \*\*\* दिनों के रूप में लिया जाना चाहिए था। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि ऋण अवधि का समायोजन सत्यापित आंकड़ों के आधार पर किया जाता है, जैसा कि इसके बारे में सत्यापन रिपोर्ट में पहले से ही उल्लेख किया गया है। सत्यापन के समय उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए अनुसार कुछ बिक्री पश्चात खर्चों के दावों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये दावे उनके मूल दावों के अंश नहीं थे और इन्हें केवल सत्यापन के समय ही प्रस्तुत किया गया था, जिनको सत्यापित नहीं किया जा सका था। इसलिए इस दावे को स्वीकार नहीं किया गया है। तदनुसार प्राधिकारी उपरोक्त निर्धारण की संपुष्टि करते हैं।

**(ब) पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड**

78. पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड, मलेशिया से मेसर्ज एवरग्रीन फाईबरबोर्ड बरहार्ड और इंडोनेशिया से पीटी हट्रिंडो जाया फाईबरबोर्ड मेन्युफेक्चरिंग कंपनी और पीटी यूफोरिन प्राजेन एडहेसिव इंडस्ट्री के बीच एक विदेशी निवेशित संयुक्त उद्यम है और इसे इंडोनेशिया में एक प्राईवेट कंपनी के रूप में निगमित किया गया है। एवरग्रीन मलेशिया में एमडीएफ की प्रमुख उत्पादक है और मेसर्ज एवरग्रीन फाईबरबोर्ड (निलाल) एसडीएन बीएचडी, मलेशिया और मेसर्ज सिआम फाईबरबोर्ड कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड नामक कंपनियां जो कि संबंधित देशों में संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन और निर्यात भी करती हैं, उसकी संबंधित कंपनियां हैं। उन देशों को इस कंपनी के निर्यातों पर पहले से ही पाटन-रोधी शुल्क लग रहा है।

79. उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की {\*\*\*} सीबीएम की बिक्री की है, जिसमें से {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं के निर्यात भारत को और {\*\*\*} सीबीएम की संबद्ध वस्तुओं के निर्यात अन्य देशों को किए गए हैं। जहां कहीं भी आवश्यक हुआ था वहां कंपनियों से अनुपूरक सूचना मंगाई गई थी और ऐसी सूचना प्रदान कर दी गई है। उत्पादन करने वाले इस निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जितना संभव हुआ था, ऑन-साइट सत्यापन के माध्यम से जांच की गई है और सत्यापित आंकड़ों को इस निर्धारण के लिए प्रयुक्त किया गया है।

#### सामान्य मूल्य

80. जांच अवधि के दौरान कंपनी ने {\*\*\*} के कारोबार की तुलना में घरेलू बाजार में असंबद्ध ग्राहकों को विभिन्न मोटाई के और उत्सर्जन मानकों की संबद्ध वस्तुओं की {\*\*\*} सीबीएम की बिक्री की है। ऐसी सभी बिक्रियां घरेलू व्यापारियों/पुनःविक्रेताओं को सुपुर्दगी के आधार पर की जाती हैं तथा इसके भुगतान की शर्तें या तो टीटी (अग्रिम भुगतान) अथवा \*\*\*दिन के ऋण के साथ टीटी होती है। उत्पादक के उत्पादन की औसत लागत का निर्धारण सत्यापित लागत के आंकड़ों के आधार पर किया गया था और उत्पादक से मंगाई गई अतिरिक्त सूचना यू.एस. डालर {\*\*\*} /सीबीएम के रूप में है। इस निर्यातक ने प्रकटन पश्चात अपने निवेदनों में घरेलू बाजार में बेची गई ऑफ-स्पेक सामग्री को बाहर रखने में कुछ गलतियों का उल्लेख किया। निर्यातक ने स्वतः परिशिष्ट-1 में ऑफ-स्पेक सामग्री को पहले से ही अभिज्ञात कर लिया है। इसलिए केवल उन्हीं कारोबार को हटा लिया गया है और बाकी घरेलू बिक्रियों के कारोबार को उत्पादन की सत्यापित औसत लागत के आधार पर ओसीटी जांच के अध्यक्षीन रखा गया था। कंपनी के रिकार्ड के अनुसार घरेलू उद्योग की {\*\*\*} % बिक्रियों को लाभप्रद पाया गया है। तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ बहुत कम कीमत पर बेची गई ऑफ-स्पेक सामग्री को छोड़ कर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए समग्र घरेलू बिक्रियों पर विचार किया गया है। कंपनी ने परिवहन व्ययों, ऋण लागतों और उत्पादन करने वाले निर्यातक को संभार तंत्र और विपणन सेवाएं प्रदान के लिए मेसर्स एवरग्रीन, मलेशिया को अदा किए गए विपणन शुल्क के ब्यौरे प्रदान किए हैं। तदनुसार निबल औसत कार्य-गत सामान्य मूल्य का प्रस्तावित निर्धारण निम्नानुसार है :-

लाभप्रद बिक्रियों की मात्रा (एम 3)	समायोजित कारखाना-गत सामान्य मूल्य की राशि (यू.एस. डालर)	भारित औसत निबल मूल्य यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***

#### निर्यात कीमत

81. उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने {\*\*\*} के कारोबार की तुलना में भारत को विभिन्न मोटाई और उत्सर्जन मानकों की संबद्ध वस्तुओं के {\*\*\*} सीबीएम के निर्यात किए हैं। भारत को निर्यात बिक्रियां अंत प्रयोक्ताओं के साथ-साथ भारत में पुनःविक्रेताओं को की जाती हैं जो कि सीएफआर आधार पर अथवा भुगतान की शर्तों पर या तो एलसी या टीटी के साथ भिन्न ऋण अवधि पर होती हैं। निर्यातक ने समुद्री भाड़े, पैकिंग प्रभारों, कमीशन और बैंक प्रभारों, सीमा शुल्क प्रबंधन, क्लियरेंस और स्थानीय परिवहन लागत और ऋण के दिनों की संख्या के आधार पर ऋण लागत के समायोजन के लिए सूचना प्रदान की है। जांच के दौरान यह भी ध्यान में आया था कि भारत को निर्यातों और घरेलू बाजार के लिए प्रयुक्त पैकिंग भिन्न है। उत्पादन करने वाले इस निर्यातक ने निर्यातों के लिए भिन्न पैकिंग की लागत को निर्दिष्ट करने वाले ब्यौरे भी प्रदान किए हैं। तदनुसार उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के लिए औसत निबल कार्यगत निर्यात कीमत का पूर्वकालन निम्नानुसार है :-

मात्रा की राशि	निबल बीजक मूल्य की राशि (यू.एस. डालर) जिसमें से बेट निकाल दिया गया है	कारखाना-गत निर्यात कीमत की राशि (यू.एस. डालर)	निबल निर्यात कीमत यू.एस. डालर/सीबीएम
***	***	***	***

**पाटन मार्जिन**

82. इस प्रकार से निर्धारित किया गया भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना उसी स्तर पर भारत औसत निबल निर्यात कीमत से करने का प्रस्ताव है, ताकि पाटन मार्जिन का अक्कलन किया जा सके जो कि निम्नानुसार है :-

		अमरीकी डालर/सीबीएम
भारत औसत निबल मूल्य	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
भारत औसत निर्यात कीमत	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन %	%	5-15%

**(ग) इंडोनेशिया में सभी अन्य उत्पादक/निर्यातक**

83. इंडोनेशिया में सभी अन्य असहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण, उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किए जाने का प्रस्ताव है, जिसके लिए सहयोगी निर्यातक के आंकड़ों को ध्यान में रखा गया है, जो कि निम्नानुसार है :-

		अमरीकी डालर/सीबीएम
भारत औसत निबल मूल्य	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
भारत औसत निर्यात कीमत	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन	अमरीकी डालर/सीबीएम	***
पाटन मार्जिन %	%	55-65%

**पाटन मार्जिन तालिका**

84. उपरोक्त निर्धारण के आधार पर संबद्ध देशों से उत्पादकों और निर्यातकों के पाटन मार्जिन का पूर्वकलन निम्नानुसार है :-

उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य (यू.एस.\$)	निबल निर्यात कीमत (यू.एस.\$)	पाटन मार्जिन (यू.एस.\$)	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन % सीमा
विएतनाम						
मेसर्ज किम टिन एमडीएफ स्टॉक कंपनी	मेसर्ज किम टिन एमडीएफ स्टॉक कंपनी	***	***	***	***	0-10%
	मेसर्ज किम टिन ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	0-10%
मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाइट स्टॉक कंपनी,	मेसर्ज वीआरजी डोंगभा एमडीएफ ज्वाइट स्टॉक	***	***	***	***	5-15%

विएतनाम	कंपनी, विएतनाम					
मेसर्ज एमडीएफ वीआरजी क्युयांग ट्रि वुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी	मेसर्ज एमडीएफ वीआरजी क्युयांग ट्रि वुड ज्वाईट स्टॉक कंपनी	***	***	***	***	5-15%
उपरोक्त से कोई अन्य		***	***	***	***	40-50%
इंडोनेशिया						
मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबरबोर्ड, इंडोनेशिया	मेसर्ज पी.टी. सुमात्रा प्राईमा फाईबरबोर्ड, इंडोनेशिया	***	***	***	***	25-35%
मेसर्ज पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड	मेसर्ज पीटी हिजाऊ लेसटेरी राया फाईबर बोर्ड	***	***	***	***	5-15%
उपरोक्त से कोई अन्य		***	***	***	***	55-65%

85. उपरोक्त अनुसार निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक और विशिष्ट है। इसमें मेसर्ज किम टिन एमडीएफ ज्वाईट स्टॉक कंपनी शामिल नहीं है, जिसमें पाटन मार्जिन न्यूनतम पाया गया है।

## ज. घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण

### ज. 1 क्षति का संचयी मूल्यांकन

86. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध - II के पैरा (iii) में यह उपबंध है कि यदि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के हुए आयात के साथ-साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है, तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उस स्थिति में ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण करेंगे, जब वह यह निर्धारित करें कि :-

(क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात की मात्रा की तीन प्रतिशत से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयात के साथ सबसे अधिक बनता है; तथा

(ख) आयातित वस्तु एवं समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के मद्देनजर आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

87. घरेलू उद्योग ने अपने निवेदनों में यह तर्क दिया है कि एक से अधिक देशों से निर्यातक भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तुओं का पाटन कर रहे हैं और ऐसे प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित की गई सीमा से अधिक है। उपरोक्त प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा न्यूनतम सीमा से काफी अधिक है। इसलिए आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन किया जाना उपयुक्त है, चूंकि संबद्ध देशों से निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा पेश की जा रही समान वस्तुओं से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। किसी भी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने क्षति का संचयी मूल्यांकन करने के बारे में कोई निवेदन नहीं किया है।



88. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विप्लवनाम और इंडोनेशिया से संबद्ध वस्तुओं के आरोपित पाटन होने के खिलाफ यह जांच शुरू की गई थी। पिछले भाग में पाटन के मार्जिन के निर्धारण से यह पता चलता है कि उल्लिखित प्रत्येक देश से संबद्ध वस्तुओं के लिए पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमा से बहुत अधिक है। प्रत्येक अन्य देश से आयातों की मात्रा भी निर्धारित सीमा से अधिक है। सीआईएफ कीमत की सीमा और पट्टा मूल्य जिस पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात किए जाते हैं, से यह स्पष्ट पता चलता है कि भारतीय बाजार में इन स्रोतों से आयातों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा है। संबद्ध देशों से आयात, भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा पेश की जा रही समान वस्तुओं के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। घरेलू उत्पादक और संबद्ध देश के निर्यातक समान श्रेणी के ग्राहकों को समान उत्पाद बेच रहे हैं और दोनों एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। ग्राहकों द्वारा इन दोनों वस्तुओं का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह मानना है कि इस मामले में आयातों के प्रभावों का मूल्यांकन करना उपयुक्त है और तदनुसार क्षति और कारणात्मक संबंधों की जांच करने के लिए समस्त पाटित स्रोतों से पाटित आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन किया गया है।

## ज. 2 क्षति और कारणात्मक संबंधों के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए सामान्य मुद्दे

### (क) प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

89. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों ने अपने निवेदनों में घरेलू उद्योग के क्षति के दावों का खंडन किया है और अन्य बातों के साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- (1) घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि आयातों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग बढ़ गया है। अन्य घरेलू उत्पादकों के साथ परस्पर प्रस्पर्धा होने के कारण आवेदक घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्सा प्रभावित हुआ है। यह तर्क दिया गया है कि आवेदकों की कार्यनीतिगत निर्णयों के कारण उनकी क्षमता और उत्पादन में गिरावट आई है और न कि पाटित आयातों के कारण।
- (2) घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि मंगलम असहयोगी हो गया है और अकेला होने पर भी ग्रीनप्लाई को कोई क्षति नहीं हुई है।
- (3) कोई कीमत ह्रास और न्यूनीकरण नहीं हुआ है तथा प्राचलों की मात्रा से वृद्धि होने का पता चलता है। लाभप्रदता, नकदी प्रवाह और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ (आरओसीई) से संबंधित क्षति आवेदकों द्वारा उसी संयंत्र में असंबद्ध वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के सचेतन निर्णय लेने के कारण हुई है।
- (4) हालांकि एक घरेलू उत्पादक के लिए क्षति को प्रदर्शित करने के लिए सैद्धांतिक उत्पाद शुल्क लाभ देने पर विचार किया गया है, वास्तविक संख्या के आधार पर क्षति का विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है।
- (5) ग्रीनप्लाई ने एनएसआर से सैद्धांतिक आधार पर उत्पाद शुल्क को कम करने का दावा करके क्षति की बड़ी छवि चित्रित की है और साथ ही उसी समय कच्चे माल के लिए उत्पाद शुल्क का भुगतान भी किया है। इसलिए उत्पाद शुल्क लाभ के समायोजन को खारिज कर दिया जाना चाहिए जैसा कि विचाराधीन इसी उत्पाद से संबंधित विगत निर्णायक समीक्षा जांच के दौरान किया गया था।
- (6) मंगलम टिम्बर को अनुरक्षण के लिए उसके संयंत्र को बंद करने, कच्चे माल की कीमतों, विद्युत और ईंधन और परिवहन लागतों में वृद्धि होने, विद्युत आपूर्ति के मुद्दों, वुड आपूर्ति के मुद्दों और सीमांध्रा में राजनैतिक अस्थिरता के कारण किसी प्रकार की क्षति हुई है और न कि संबद्ध देशों से आरोपित पाटन के कारण। लागत में वृद्धि होने के भी अन्य कारण हैं।
- (7) उत्पादन में गिरावट वाणिज्यिक क्षेत्र में गंभीर मंदी होने के कारण हुई है, जैसा कि उसकी वार्षिक रिपोर्ट से सुस्पष्ट पता चलता है।
- (8) बिक्री कीमत पूर्णतया 100 से 121 के औसत (सूचीबद्ध) से भिन्न नहीं हो सकती है, जैसा कि वार्षिक रिपोर्ट में दर्शाया गया है। ग्रीनप्लाई पर कोई कीमत दबाव नहीं था। जांच अवधि के दौरान ग्रीनप्लाई की बिक्री वसूली और भारतीय उद्योग के बाजार के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है।
- (9) श्रेष्ठ प्राक्कलनों से ग्रीनप्लाई की लाभप्रदता में वृद्धि होने का पता चलता है। इसलिए प्रपत्र 4 - क में लाभप्रदता, वास्तविक स्थिति की सही छवि चित्रित नहीं करती है।
- (10) वर्ष 2013-14 को छोड़ कर क्षति अवधि में ग्रीनप्लाई के बिक्री राजस्व में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- (11) आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में एमडीएफ के नए संयंत्र के कारण कोई क्षति नहीं हुई है।
- (12) क्षति संबंधी निवेदनों के विपरीत रूशील की वार्षिक रिपोर्ट अत्यधिक लाभ दर्शाती है।

- (13) भारतीय उद्योग के बाजार के हिस्से में आधार वर्ष में 63% से बढ़ कर जांच अवधि में 72% हो जाने का पता चलता है, जबकि इसी अवधि के दौरान भारत में कुल आयात 37% से घट कर 28% रह गए हैं।
- (14) कोई कारणात्मक संबंध नहीं है, क्योंकि न्यूजीलैंड से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक हैं, मांग में गिरावट आई है, उत्पादकता में गिरावट आई है, अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा घरेलू उद्योग के हिस्से का अधिग्रहण किए जाने, आयातों के बाजार के हिस्से का कोई विश्लेषण नहीं है तथा घरेलू उद्योग की कीमतों में वृद्धि, लागत में हुई वृद्धि से अधिक है।

### (ख) घरेलू उद्योग के विचार

90. घरेलू उद्योग ने अपने निवेदनों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- (1) संबद्ध देशों से आयातों में पूर्णरूपेण और देश में कुल आयातों, भारत में उत्पादन और मांग के परिप्रेक्ष्य में पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है।
- (2) पाटित आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक सीमा में कटौती कर रहे हैं और साथ ही घरेलू उद्योग द्वारा कम कीमत पर वस्तुओं की बिक्री की जा रही है।
- (3) पहले घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ था और उसके बाद उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग के प्रसंग में उसमें गिरावट आ गई है। उसकी माल सूचियों में अत्यधिक सीमा तक वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग को निरंतर वित्तीय घाटे हो रहे हैं।
- (4) एक याचिकादाता कंपनी को उत्पाद शुल्क से छूट प्राप्त हुई है। चूंकि कंपनी को उत्पाद शुल्क का भुगतान करने से छूट प्राप्त है, इसलिए कंपनी द्वारा अदत्त उत्पाद शुल्क के लिए समायोजन करने के बाद उसकी बिक्री कीमत, लाभ/हानि, नकदी लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ, कीमत में कटौती और क्षति मार्जिन का निर्धारण किया जाना चाहिए। इसी कारणवश निर्दिष्ट प्राधिकारी उत्पाद शुल्क को ध्यान में रखे बिना समग्र निर्धारण करते हैं। इसके अतिरिक्त निर्दिष्ट प्राधिकारी आयातों पर सैद्धांतिक सीमा शुल्क को भी जोड़ देते हैं, इस तथ्य पर विचार किए बिना कि उसका भुगतान किया गया है अथवा नहीं। इसलिए यह न केवल आवश्यक है बल्कि उपयुक्त भी है कि वर्तमान प्रयोजनार्थ देय उत्पाद शुल्क को कम कर दिया जाए।
- (5) क्षति का विश्लेषण, वास्तविक संख्या के आधार पर किया जाता है, इस कारण मात्र से यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि उत्पाद शुल्क के लाभ को वर्जित किया जाना चाहिए। वास्तव में अन्य सभी जांच में प्राधिकारी, उत्पाद शुल्क को वर्जित करते हैं। यदि प्राधिकारी उन जांच में उत्पाद शुल्क को वर्जित कर सकते हैं और तब भी वह वास्तविक सूचना को अपनाने के समान होता है, तो इस तर्क का कोई औचित्य नहीं है कि उत्पाद शुल्क को वर्जित किया जाना वास्तविक सूचना को नहीं अपनाए जाने के समान होगा।
- (6) अकेले ग्रीनप्लाई को क्षति हुई है। यह ऐसा मामला नहीं हो सकता है कि यदि अन्य कारकों से घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, तो उसे पृथक कर दिया जाना चाहिए और यदि कुछ कारकों से घरेलू उद्योग का निष्पादन बेहतर होता है, तो उसे पृथक नहीं किया जाना चाहिए।
- (7) प्राधिकारी इस तथ्य की ओर ध्यान दिए बिना कि आयात निशुल्क थे अथवा शुल्क दत्त थे, आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण करने के लिए सीआईएफ आयात कीमत पर सीमा शुल्क को जोड़ रहे हैं। ऐसी निश्चित संभावना है कि आयात निशुल्क थे। तब भी चूंकि वर्तमान जांच का प्रयोजन संबद्ध देशों से पाटन के संबंध में घरेलू उद्योग की क्षति का निर्धारण करना है, यह सुस्पष्ट है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के लिए और घरेलू प्रचालनों के संबंध में तथा अन्य कारकों के प्रभावों को चाहे वे सकारात्मक अथवा नकारात्मक हैं, पृथक करने के बाद घरेलू उद्योग की क्षति की जांच करने की आवश्यकता है।
- (8) चूंकि मंगलम अब घरेलू उद्योग का एक भाग नहीं है और इसलिए इस चरण में इस कंपनी के निष्पादन का विश्लेषण करना प्रासंगिक नहीं है। इसके अतिरिक्त इनपुट की कीमत में वृद्धि होने जैसे कारक, क्या “आयातों से कीमत में वृद्धि होने की रोकथाम हो रही है” की श्रेणी में आते हैं और “अन्य कारकों” की श्रेणी में नहीं, जैसा कि हितवद्ध पक्षकारों द्वारा आरोप लगाया गया है।
- (9) ग्रीनप्लाई ने इस जांच के लगभग आधार वर्ष में अपना वाणिज्यिक प्रचालन करना शुरू कर दिया था और इसलिए उसके उत्पादन में वृद्धि, नए संयंत्र में उत्पादन शुरू होने के परिणाम स्वरूप हुई है। तथापि, तथ्य यह है कि देश में संबद्ध वस्तुओं के पाटन के कारण कंपनी को विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन रोकना और क्षमताओं को अन्य उत्पाद पर लगाना पड़ा था।

- (10) हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि उत्पादन में गिरावट गंभीर मंदी होने के कारण हो रही है, यह देखा जा सकता है कि ऐसी स्थिति में आयातों में वृद्धि स्थिति को और बदतर बना रही है। मांग में गिरावट आने और क्षति पर इसके प्रभाव पड़ने का मुद्दा, प्राधिकारी द्वारा की गई विभिन्न जांच में अब तक अच्छी तरह से सिद्ध हो चुका है।
- (11) ग्रीनप्लाई के घाटों में गिरावट एक प्राकृतिक परिणाम है क्योंकि कंपनी ने लगभग इस जांच के आधार वर्ष के दौरान उत्पादन करना शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त उत्पाद शुल्क के कारण लाभ को पृथक् कर दिए जाने की आवश्यकता है ताकि आयातों के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन का पता लगाया जा सके।
- (12) एमडीएफ के चित्तूर में नए संयंत्र के बारे में यह निवेदन किया जाता है कि इस संयंत्र का अत्यधिक कम उपयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त ग्रीनप्लाई की माल सूचियों में नाटकीय ढंग से वृद्धि हुई है।
- (13) रूशील के संयंत्र का अत्यधिक कम उपयोग किया जा रहा है और कंपनी की माल सूचियों में नाटकीय ढंग से वृद्धि हुई है।
- (14) घरेलू बाजार के बाजार के हिस्से की स्थिति पाटित आयातों के प्रतिकूल प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है।
- (15) घरेलू उद्योग को क्षति अन्य कारकों के कारण नहीं हुई है।

#### (ग) हितबद्ध पक्षकारों की प्रकटन पश्चात टिप्पणियां और उनकी जांच

91. हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन पश्चात निवेदनों में मुख्यतया अपने तर्कों को दोहराया है तथा क्षति और कारणात्मक संबंधों की जांच करने पर कुछ टिप्पणियां की हैं, जैसा कि प्रकटन विवरण में दिया गया है। उन मुद्दों की जांच की गई है तथा जितना प्रासंगिक और प्रामाणिक था, उनका निदान इस परिणाम में कर दिया गया है।

#### (1) प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

92. हितबद्ध पक्षकारों ने अपने प्रकटन पश्चात निवेदनों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- यह कि जब सकारात्मक कीमत कटौती के स्तर पर पाटित कीमतें, घरेलू बाजार में किसी प्रकार का कोई कीमत ह्रास अथवा कीमत न्यूनीकरण नहीं कर रही हैं, तब ऐसी स्थिति में पाटित आयात घरेलू उद्योग के निष्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल सकते हैं और ऐसे आयातों के कारण होने वाली कोई भी क्षति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है और कारणात्मक संबंध नहीं होना बहुत निश्चित है। इसके अतिरिक्त यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में अनेक वर्षों से सुधार हुआ है, जैसा कि उसकी केवल लाभप्रदता की स्थिति से देखा जा सकता है।
- यह कि क्षति का सदैव विश्लेषण वास्तविक आंकड़ों के आधार पर किया जाता है और न कि सैद्धांतिक समायोजन पर। इसलिए उत्पाद शुल्क लाभ के सैद्धांतिक आंकड़ों के कारण बिक्री कीमत में समायोजन पर क्षति के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ विचार नहीं किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी तर्क दिया गया है कि यह कानूनी रूप से तर्क संगत नहीं है, क्योंकि चाहे यह क्षति की संभावना अथवा वास्तविक क्षति का मामला है, विश्लेषण का आधार प्रभावित नहीं है।
- यह कि अनुबंध-2 के उपरोक्त पैरा (4) में प्रयुक्त किए गए शब्द "प्राकृतिक" और "संभावित" हैं। इनसे ऐसा पता चलता है कि क्षति का विश्लेषण, संबद्ध देशों से आरोपित पाटित आयातों के फलस्वरूप क्षति की जांच अवधि में उनमें "प्राकृतिक" और "संभावित" गिरावट आने के रूप में उपरोक्त क्षति के कारकों के लिए किया जाए लेकिन अन्यथा नहीं।
- यह कि घरेलू उद्योग को कोई मात्रात्मक क्षति नहीं हुई है, क्योंकि क्षति की जांच अवधि में उनकी बिक्रियां, उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग, बाजार के हिस्से सभी में अत्यधिक वृद्धि हुई है। कीमत प्रभाव के संबंध में यह तर्क दिया गया है कि इसे केवल उत्पाद शुल्क के लाभ को शामिल करने के बाद मेसर्स ग्रीनप्लाई के आधार पर ही देखा जाए। इससे यह पता चलेगा कि कीमत कारक के संबंध में कोई क्षति नहीं हुई है।

#### (2) घरेलू उद्योग के विचार

93. घरेलू उद्योग द्वारा क्षति और कारणात्मक संबंधों के बारे में अपने विचारों को दोहराए बिना प्रकटन पश्चात किए गए निवेदनों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :-

- (क) यह कि संबद्ध देशों से आयातों में पूर्णरूपेण के साथ-साथ देश में कुल आयातों, भारत में उत्पादन और मांग के संदर्भ में पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है। पाटित आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक सीमा तक कटौती कर रहे हैं और साथ ही घरेलू उद्योग द्वारा बेची गई वस्तुओं को कम कीमत पर भी बेचा जा रहा है।

- (ख) यह कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में पहले सुधार आया था और उसके बाद उत्पादन, विक्रियों और क्षमता उपयोग के रूप में उसमें गिरावट आई है। माल सूचियां अत्यधिक सीमा तक बढ़ गई हैं और घरेलू उद्योगको निरंतर वित्तीय घाटे हो रहे हैं।
- (ग) यह कि चूंकि एक याचिकादाता कंपनी को उत्पाद शुल्क से छूट प्राप्त है, इसलिए उसकी बिक्री कीमत, लाभ/घाटे, नकदी लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ, कीमत में कटौती और क्षति मार्जिन का निर्धारण, कंपनी द्वारा अदा नहीं किए गए उत्पाद शुल्क के लिए उसका समायोजन करने के बाद किया जाए। इसी कारण से निर्दिष्ट प्राधिकारी उत्पाद शुल्क पर विचार किए बिना समग्र निर्धारण करते हैं। इसके अतिरिक्त निर्दिष्ट प्राधिकारी इस पर ध्यान दिए बिना कि उत्पाद शुल्क का भुगतान किया है अथवा नहीं, आयातों पर सैद्धांतिक सीमा शुल्क जोड़ते हैं। इसलिए यह न केवल आवश्यक है बल्कि उपयुक्त भी है कि वर्तमान प्रयोजनार्थ देय उत्पाद शुल्क को कम किया जाए।
- (घ) यह कि क्षति का विश्लेषण, वास्तविक संख्या के आधार पर किया जाता है, इस कारण मात्र से यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि उत्पाद शुल्क के लाभ को वर्जित किया जाना चाहिए। वास्तव में अन्य सभी जांच में प्राधिकारी, उत्पाद शुल्क को वर्जित करते हैं। यदि प्राधिकारी उन जांच में उत्पाद शुल्क को वर्जित कर सकते हैं और तब भी वह वास्तविक सूचना को अपनाने के समान होता है, तो इस तर्क का कोई औचित्य नहीं है कि उत्पाद शुल्क को वर्जित किया जाना वास्तविक सूचना को नहीं अपनाए जाने के समान होगा।
- (ङ) यह कि अकेले ग्रीनप्लाई को क्षति हुई है। यह ऐसा मामला नहीं हो सकता है कि यदि अन्य कारकों से घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, तो उसे पृथक् कर दिया जाना चाहिए और यदि कुछ कारकों से घरेलू उद्योग का निष्पादन बेहतर होता है, तो उसे पृथक् नहीं किया जाना चाहिए।
- (च) यह कि प्राधिकारी इस तथ्य की ओर ध्यान दिए बिना कि आयात निशुल्क थे अथवा शुल्क दत्त थे, आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण करने के लिए सीआईएफ आयात कीमत पर सीमा शुल्क को जोड़ रहे हैं। ऐसी निश्चित संभावना है कि आयात निशुल्क थे। तब भी चूंकि वर्तमान जांच का प्रयोजन संबद्ध देशों से पाटन के संबंध में घरेलू उद्योग की क्षति का निर्धारण करना है, यह सुस्पष्ट है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के लिए और घरेलू प्रचालनों के संबंध में तथा अन्य कारकों के प्रभावों को चाहे वे सकारात्मक अथवा नकारात्मक हैं, पृथक् करने के बाद घरेलू उद्योग की क्षति की जांच करने की आवश्यकता है।
- (छ) यह कि चूंकि मंगलम अब घरेलू उद्योग का एक भाग नहीं है और इसलिए इस चरण में इस कंपनी के निष्पादन का विश्लेषण करना प्रासंगिक नहीं है। इसके अतिरिक्त इनपुट की कीमत में वृद्धि होने जैसे कारक, क्या “आयातों से कीमत में वृद्धि होने की रोकथाम हो रही है” की श्रेणी में आते हैं और “अन्य कारकों” की श्रेणी में नहीं, जैसा कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा आरोप लगाया गया है।
- (ज) यह कि प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत बहुत कम है और यह अत्यधिक अपर्याप्त है। विज्ञापन के व्यय के वर्जन का कोई कानूनी आधार नहीं है, क्योंकि अनुबंध-2 में उसके लिए प्रावधान नहीं है। किसी भी स्थिति में आयात की पहुंच कीमत और घरेलू उद्योग की एनआईपी की तुलना करते समय अनुबंध-3 और उचित तुलना करने के सिद्धांतों को चयनात्मक ढंग से लागू नहीं किया जा सकता है।
- (झ) यह कि प्राधिकारी को इस मामले में वास्तविक कच्चे माल और प्रयोज्यताओं की खपत पर विचार करना चाहिए। जब बुड विनिर्देशन स्वतः मानक नहीं है, तो उसकी खपत की तुलना, अनेक वर्षों से अथवा वर्ष के भीतर नहीं की जा सकती है। खपत में अंतर एक वैध अंतर है, जो कि बुड में नमी की मात्रा के कारण उत्पन्न होता है।
- (ञ) यह कि प्राधिकारी को उत्पादन की वास्तविक लागत का निर्धारण करना अपेक्षित होता है और न कि कीमत का निर्धारण करने के लिए उत्पादन की सैद्धांतिक कम लागत का, जिसकी तुलना आयात कीमत से की जा सकती है, ताकि क्षति मार्जिन का मूल्यांकन किया जा सके। उत्पादन में बदलाव आने के बाद क्षमता उपयोग में गिरावट आने का कारण पाटन है और न कि अन्य कारक।
- (ट) यह कि नए मामले में पाटित आयातों के वास्तविक और संभावित प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता होती है और इसलिए इस संबंध में प्राधिकारी की जांच उपयुक्त होती है। उत्पाद शुल्क की छूट की कमी की स्थिति में घरेलू उद्योग की संभावित वृद्धि अत्यधिक नकारात्मक होगी।
- (ठ) यह कि वर्तमान मामले में यूएस डालर में शुल्क के संयोजन रूप को लागू किया जाना चाहिए ताकि उस उद्देश्य की पूर्ति हो सके जिसके लिए पाटन-रोधी शुल्क लगाया जाता है और लगाया गया शुल्क एक निष्प्रभावी प्रक्रिया नहीं होनी चाहिए। इस रूप में शुल्क को लागू करने से गहन पाटन और व्यापारियों द्वारा कीमत के संभावित दुरुपयोग की समस्या का समाधान होगा।

आयात कीमतों की अत्यधिक बीजक बना कर, शुल्क के मानक रूप का सुगमता से दुरुपयोग किया जा सकता है। यह तर्क दिया गया है कि ऐसे कुछ अधिकार-क्षेत्रों में जहां शुल्क को मानक चिन्ह + पाटन मार्जिन अथवा क्षति जो भी कम है, के रूप में निर्धारित की गई आयात कीमत (पहुंच मूल्य) के संयोजन के रूप में लागू किया गया है, वहां शुल्क का यह रूप प्रचलित है। ऐसे अधिकार-क्षेत्रों में दिशानिर्देशों से ऐसा पता चलता है कि शुल्क का संयोजन, ऐसे मामलों में उपयुक्त है, जिनमें जटिल संबंधित पक्षकार कंपनी के ढांचे अथवा कीमत के दुरुपयोग होने के सिद्ध मामले के कारण कीमत का दुरुपयोग किए जाने की संभावना है। घरेलू उद्योग का यह तर्क है कि वर्तमान मामले में इस प्रकार के शुल्क का रूप उपयुक्त है।

#### (घ) प्राधिकारी द्वारा मुद्दों की जांच

94. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति और आकस्मिक संबंध संबंधी दावों के बारे में हितकर पक्षकारों के विभिन्न निवेदनों को नोट किया है। घरेलू उद्योग और अन्य हितकर पक्षकारों के द्वारा इस प्रकटन के प्रासंगिक भाग में नियमावली के प्रासंगिक प्रावधानों के बारे में प्रस्तुत की गई सूचना की जांच की गई है। तथापि, उठाए गए विशिष्ट कुछ मुद्दों का नीचे समाधान किया गया है।

95. एक मूल आवेदक अर्थात् मै. मंगलम टिम्बर के सम्मिलित न होने और रूशील के द्वारा प्रतिस्थापन करने के मुद्दे का जहां तक संबंध है इस मुद्दे के बारे में पहले सेक्शन में पहले से ही समाधान कर लिया गया है। ग्रीन प्लाई और रूशील को शामिल करते हुए घरेलू उद्योग के प्रासंगिक क्षति संबंधी मापदंड हितकर पक्षकारों को पहले ही उपलब्ध करा दिए गए हैं। अतः इस संबंध में किसी भी हितकर पक्षकार के लिए कोई क्षति नहीं पहुँचाई गई है।

96. जहां तक एक याचिकाकर्ता के उत्पाद शुल्क लाभ न देने के विषय का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि अगस्त, 2015 में निर्णायक समीक्षा जांच में निकले पूर्व निष्कर्ष में इस विषय की जांच की गई थी और इसको प्राधिकारी ने निम्नानुसार नोट किया था:

“घरेलू उद्योग के द्वारा यह मुद्दा उठाया गया है कि आवेदक घरेलू उद्योग ग्रीन प्लाई का विक्रय मूल्य देय उत्पाद शुल्क की मात्रा तक कम किया जाना चाहिए और उसके बाद लाभों का निर्धारण होना चाहिए। इस बारे में प्राधिकारी ने क्षति अवधि से संबंधित लेखा परीक्षा किए गए उनके लेखों यथा प्रदर्शित वास्तविक आधार पर घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और एन.एस.आर. की गणना की है। प्राधिकारी का यह भी मत है कि वास्तविक एन.एस.ए. और लाभ केवल प्रासंगिक होते हैं और न कि काल्पनिक, जैसा कि घरेलू उद्योग के द्वारा दावा किया है।”

97. तथापि, घरेलू उद्योग के द्वारा यह मुद्दा दुबारा उठाया गया है। यह दावा किया गया है कि एक सीमित अवधि के लिए उत्तराखंड में स्थित इकाई को स्थानिक हानि की वजह से ग्रीन प्लाई उत्पाद-शुल्क छूट के लिए पात्र थी और कंपनी के द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार यह वर्ष 2017 में समाप्त होनी थी। उत्पाद-शुल्क में छूट का असर यह है कि यह छूट प्राप्त उत्पाद-शुल्क की सीमा तक उत्पादक को मूल्य संबंधी सहारा उपलब्ध कराता है। यदि उत्पाद शुल्क देय होता तो बाजार में प्रतिस्पर्धा बनाए रखने की सीमा तक कीमत को कम कर दिया जाता। अतः घरेलू उद्योग का तर्क यह है कि कीमत की स्थिति और लाभप्रदता के बारे में उत्पाद शुल्क को इस प्रकार से समायोजित करते हुए काल्पनिक आधार पर जांच की जानी चाहिए मानो कि इसका क्षति की अवधि के दौरान भुगतान कर दिया गया है तथा बाद में यह देखना चाहिए कि यदि शुल्क वास्तव में देय था तो उद्योग को लाभ मिलेगा। यह इस तथ्य से उत्पन्न होता प्रतीत होता है कि शुल्क छूट अस्थायी है और जब उत्पाद-शुल्क छूट निकट भविष्य में समाप्त हो जाती है तो यह स्थिति प्रभावी ढंग से बदल जाएगी।

98. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जैसा कि ऊपर बताया गया है, प्राधिकारी का पूर्व निर्णय निर्णायक समीक्षा के संदर्भ में था जिसमें छूट वापस लेने के परिदृश्य में पाटित आयातों के संभावित प्रभाव की जांच की गई थी। यूनिट को दी गई छूट अस्थायी है और इसका बहुत जल्द अथवा बाद में समाप्त होना तय है। इसलिए ऐसी स्थिति में घरेलू उद्योग की दशाओं पर पाटित आयातों के संभावित प्रभाव की जांच किए जाने की आवश्यकता है। तदनुसार इस मामले के वास्तविक सांचे में इस क्षति जांच में वास्तविक और संभावित स्थिति दोनों की जांच की गई है।

99. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि क्षति का सदैव विश्लेषण, वास्तविक आंकड़ों के आधार पर किया जाता है और न कि सैद्धांतिक समायोजन पर। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आर्थिक क्षति का विश्लेषण करने का अधिदेश, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक प्राचलों पर पाटित आयातों के “वास्तविक” के साथ-साथ “संभावित” जांच करने का है। संभावित प्रभाव का विश्लेषण कुछ स्थितियों के आधार पर किया जा सकता है। केवल उस परिप्रेक्ष्य में जैसा कि इस समय विद्यमान है, घरेलू उद्योग की वर्तमान स्थिति के आधार पर क्षति का वास्तविक निर्धारण करने के साथ-साथ अप्रत्याशित पाटित आयातों के संभावित प्रभाव की जांच की गई है। पाटित आयातों के संभावित प्रभाव ऐसी संभावित स्थिति में उत्पन्न हो सकते हैं, जब अप्रत्याशित भविष्य में एक यूनिट को उपलब्ध उत्पाद शुल्क को वापस ले लिया जाता है। इसलिए इस संबंध में प्रतिवादी पक्षकारों के तर्क वैध नहीं हैं।

100. उत्पादन की लागत और क्षति रहित कीमत का निर्धारण करने के बारे में घरेलू उद्योग के तर्कों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्धारण, घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर तथा प्राधिकारी की सुसंगत पद्धति के अनुसार होता है।

101. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा शुल्क के रूप का खंडन करने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस विलंबित चरण में घरेलू उद्योग द्वारा बैंच मार्क शुल्क और नियत शुल्क के संयोजन के रूप में शुल्क के नए रूप का प्रस्ताव किया है। जबकि इस तर्क का महत्व हो सकता है क्योंकि शुल्क के इस रूप का उपयोग कुछ प्राधिकारियों द्वारा किया जा रहा है, इस प्राधिकारी को शुल्क के प्रस्तावित रूप पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों से कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त इस संबंध में कोई नीतिगत निर्णय लेने से पहले व्यापक जांच किए जाने की आवश्यकता है। इसलिए प्राधिकारी इस विलंबित चरण में इस संबंध में घरेलू उद्योग के तर्कों को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हैं।

102. विभिन्न क्षति प्राचलों के बारे में हितबद्ध पक्षकारों और घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दों का निदान, इस निर्णय के संबद्ध भागों में कर दिया गया है।

### ज. 3 क्षति और कारणात्मक संबंधों की जांच

103. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में प्रावधान है कि *संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में ऐसे सभी प्रासंगिक आर्थिक कारकों और अभिसूचकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा जिनका बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार शेयर, उत्पादकता, निवेशों पर लाभ अथवा क्षमता के उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक; पाटन के मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह; सामान सूचियों; रोजगार; मजदूरी; वृद्धि; पूंजी निवेश बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों को शामिल करना होगा।*

104. वर्तमान क्षति विश्लेषण के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं पर पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभावों के बारे में तथा पाटन और क्षति, यदि कोई हो, के बीच क्षति और कारक संबंधों के अस्तित्व की जांच करने के लिए कीमतों और लाभप्रदता पर इसके प्रभावों की जांच की है। प्राधिकारी ने मै. ग्रीन प्लाई इंडस्ट्रीज लि. और मै. रूशील डेकोर, जो नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग बनते हैं, उनसे संबंधित सूचना पर विचार करके घरेलू उद्योग की क्षति की जांच की है।

105. नियमावली के अनुसार ऊपर निर्दिष्ट किए अनुसार घरेलू उद्योग के प्रभावित करने वाले सभी आर्थिक मापदंडों की निम्नानुसार जांच की गई है:

#### (क) पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव

##### (1) पाटित आयातों के आयातों की मात्रा

106. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी के द्वारा यह जांच करनी होती है कि क्या पाटित आयातों की भारत में पूर्णतः अथवा उत्पादन या खपत के संदर्भ में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। जैसा कि पहले नोट किया गया है, डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों में दी गई सूचना के अनुसार सौदे-वार आयात आंकड़े का इस निर्धारण के लिए उपयोग किए जाने का प्रस्ताव है। इस आंकड़े के अनुसार क्षति जांच के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात संबंधी आंकड़े नीचे दिए अनुसार हैं:

आयातों की मात्रा	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि
इंडोनेशिया	सीबीएम	13,761	15,055	17,654	16,380
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	128	119
वियतनाम	सीबीएम	9,122	31,510	45,193	45,386
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	345	495	498
कुल संबद्ध देश	सीबीएम	22,883	46,564	62,847	61,766
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	203	275	270

एडीडी आकर्षित करने वाले देश	सीबीएम	59,382	52,432	35,802	12,536
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	60	21
अन्य देश	सीबीएम	10,866	17,455	28,497	36,342
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	161	262	334
<b>कुल आयात</b>	<b>सीबीएम</b>	<b>93,131</b>	<b>1,16,452</b>	<b>1,27,146</b>	<b>1,10,644</b>
<b>प्रवृत्ति</b>	<b>सूचीबद्ध</b>	<b>100</b>	<b>125</b>	<b>137</b>	<b>119</b>

\*पीओआई: अक्तूबर, 13- सितंबर, 14

107. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आयातों की कुल मात्रा में, यद्यपि, लगभग 19% की बढ़ोत्तरी हुई है, संबद्ध देशों से आयातों में लगभग 170% की बढ़ोत्तरी हुई है, और वियतनाम से आयातों के आधार वर्ष की तुलना में लगभग 400% की बढ़ोत्तरी हुई है। क्षति जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों में काफी अधिक बढ़ोत्तरी हुई है। आंकड़ों से ऐसा पता चलता है कि एक सेट के देशों पर पाटन-रोधी शुल्क लागू करने के बाद संबद्ध देशों से पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिससे उन देशों को पाटित आयातों से संरक्षण के लाभ निष्प्रभावी हो गए हैं।

## (2) पाटित आयातों का हिस्सा

108. कुल आयातों में पाटित आयातों का हिस्सा निम्नानुसार है:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
आयात मात्रा					
इंडोनेशिया	%	14.78	12.93	13.88	14.80
वियतनाम	%	9.80	27.06	35.54	41.02
कुल संबद्ध देश	%	24.57	39.99	49.43	55.82
वे देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	%	63.76	45.02	28.16	11.33
अन्य देश	%	11.67	14.99	22.41	32.85
<b>कुल आयात</b>	<b>%</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>

109. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पाटनरोधी शुल्क को पहले से ही आकर्षित कर रहे देशों के हिस्से को बदलते हुए क्षति जांच अवधि से संबद्ध देशों से पाटित आयातों का शेयर कुल आयातों के लगभग 25% से 55% तक पर्याप्त बढ़ोत्तरी हुई है। वियतनाम का शेयर कुल आयातों के 10% से 40% तक बढ़ गया है।

## (3) मांग का आकलन/प्रत्यक्ष खपत

110. भारत में उत्पाद मांग अथवा प्रत्यक्ष खपत के बारे में याचिकाकर्ताओं की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से आयातों के जोड़ के रूप में अनुमान लगाया गया है। इस प्रकार से अनुमानित मांग निम्नानुसार है:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
घरेलू उद्योग की बिक्री	सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	139	161	156
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94	162	180
कुल आयात	सीबीएम	93,131	1,16,452	1,27,146	1,10,644
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	125	137	119
<b>भारत में मांग</b>	<b>सीबीएम</b>	<b>2,38,240</b>	<b>2,89,769</b>	<b>3,61,172</b>	<b>3,52,118</b>
<b>प्रवृत्ति</b>	<b>सूचीबद्ध</b>	<b>100</b>	<b>122</b>	<b>152</b>	<b>148</b>

111. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि उत्पाद की मांग में अच्छी बढ़ोत्तरी हुई है जो क्षति जांच अवधि के दौरान सीमान्त रूप से गिरावट होने से पूर्व वर्ष 2013-14 तक लगभग 52% बढ़ी। यद्यपि, कुल आयातों में उस अनुपात में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है, परन्तु वृहद निर्यातक कुछ देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क की वजह से संबद्ध देशों से आयात परीक्षारूप से मांग में हुई वृद्धि से काफी अधिक है और क्षति जांच अवधि के दौरान इसमें लगभग 170% की बढ़ोत्तरी हुई है।

#### (4) बाजार हिस्सा

112. नीचे विश्लेषण किए अनुसार घरेलू बाजार में विभिन्न कंपनियों का बाजार हिस्सा यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा में वर्ष 2012-13 में काफी बढ़ोत्तरी हुई और उसके बाद उसमें गिरावट आई, जबकि संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा लगभग दुगुना हो गया है:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	%	***	***	***	***
कुल आयात	%	39.09	40.19	35.20	31.42
पाटित आयात (इंडोनेशिया)	%	5.78	5.20	4.89	4.65
पाटित आयात (वियतनाम)	%	3.83	10.87	12.51	12.89
कुल संबद्ध देश	%	9.61	16.07	17.40	17.54
एडीडी को आकर्षित करने वाले देश	%	24.93	18.09	9.91	3.56
अन्य देश	%	4.56	6.02	7.89	10.32
<b>भारत में मांग</b>	<b>%</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>

#### (ख) पाटित आयातों का कीमत प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

113. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में मनोनीत प्राधिकारी के द्वारा इस बारे में विचार करना होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमतों में काफी कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा एक यथेष्ट सीमा तक कीमतों को नियंत्रित करने अथवा कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिए हैं जो एक यथेष्ट सीमा तक हुई होगी।

114. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों के प्रस्ताव के बारे में कीमत में कटौती, कम दाम पर बेचने, कीमत रोकने और कीमत को नियंत्रित करने के संबंध में जांच किए जाने का प्रस्ताव है।

#### (5) पाटित आयातों का कीमत कटौती संबंधी प्रभाव

115. कीमत कटौती संबंधी विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) की संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य के साथ तुलना करनी अपेक्षित है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की गणना करते समय सभी करों, छूट, कटौतियों और कमीशनों की कटौती की जाती है और कारखानों से बाहर बिक्री प्राप्ति की संबद्ध देशों से पाटित आयातों के पहुँच मूल्य से तुलना करने के लिए निर्धारित किया जाता है:

116. जैसा पहले नोट किया है, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के बारे में तथा घरेलू उद्योग की लाभप्रदता के बारे में ग्रीन प्लाई के द्वारा अनिवार्य सैद्धांतिक उत्पाद शुल्क (लिए गए उत्पाद शुल्क छूट लाभ) को निवल बिक्री संबंधी प्राप्ति से समायोजित करना चाहिए। यह इस आधार पर स्पष्ट है कि यदि इस कंपनी के द्वारा देय उत्पाद शुल्क का भुगतान कर दिया गया होता तो निवल बिक्री संबंधी प्राप्ति देय उत्पाद शुल्क से कम रही होगी और उसका इसकी लाभप्रदता पर काफी प्रभाव होगा। तर्क यह है कि यह एक विशिष्ट स्कीम के तहत यूनिट को अस्थायी रूप से प्रदान की गई छूट होने की वजह से लाभ को उसकी लाभप्रदता आदि की गणना करने के लिए ध्यान में नहीं रखना चाहिए क्योंकि छूट एक बार वापस ले लेने पर यूनिट को खुले बाजार में प्रतिस्पर्धा करनी होती है।



117. निर्णायक समीक्षा के हाल ही के निष्कर्ष में प्राधिकारी ने लेखों की जांच करने का निर्णय लिया और चूंकि सैद्धांतिक उत्पाद-शुल्क के बारे में कंपनी के लेखों में प्रविष्टि नहीं की गई थी इसीलिए इसके समायोजन पर विचार नहीं किया गया था। तथापि, एक नई जांच में पाटित आयातों के वास्तविक और संभावित प्रभावों के बारे में विचार करना अपेक्षित है। इसीलिए छूट एक बार वापस ले लेने पर वास्तविक और संभावित प्रभाव को देखने के लिए वास्तविक एनएसआर और उत्पाद-शुल्क छूट को ध्यान में रखते हुए एनएसआर सहित कीमत प्रभाव दोनों की जांच करने का प्रस्ताव है।

#### वास्तविक कटौती

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
डीआई (उत्पाद-शुल्क छूट सहित) का विक्रय मूल्य	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
<b>इंडोनेशिया</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	14,519	16,910	16,355	16,572
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	20-30%	20-30%	20-30%	20-30%
<b>वियतनाम</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	13,362	15,750	16,468	16,683
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	25-35%	25-35%	20-30%	20-30%
<b>संबद्ध देश</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	14,058	16,125	16,436	16,654
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	25-35%	25-35%	20-30%	20-30%

#### संभावित कटौती

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
डीआई (उत्पाद-शुल्क छूट के बिना) का विक्रय मूल्य	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
<b>इंडोनेशिया</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	14,519	16,910	16,355	16,572
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	10-20%	10-20%	10-20%	10-20%
<b>वियतनाम</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	13,362	15,750	16,468	16,683
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	15-25%	15-25%	10-20%	10-20%
<b>संबद्ध देश</b>					
पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	14,058	16,125	16,436	16,654
कीमत कटौती	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	15-25%	15-25%	10-20%	10-20%

118. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि वर्तमान कीमतों पर पाटित आयातों से घरेलू बिक्री कीमतों में काफी कटौती हो रही है। एक बार ग्रीन प्लाई के लिए उत्पाद शुल्क वापस ले लिया जाता है तो घरेलू उद्योग की भारित औसत बिक्री प्राप्ति में घरेलू उद्योग बाजार में प्रतिस्पर्धा में बने

रहने के लिए देय उत्पाद-शुल्क की सीमा तक गिरावट आने की संभावना है और उस परिदृश्य में भी पाटित आयातों से भी घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती होगी।

### (6) कीमत दबाव/नियंत्रण

119. ऊपर नोट किए गए अनुसार पाटित आयातों का घरेलू कीमतों पर काफी दबाव/नियंत्रण हुआ है, यह देखने के लिए पाटित आयातों की कीमत दबाव/नियंत्रण प्रभावों की भी जांच की गई है। घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत दबाव प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की प्रवृत्ति के बारे में घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और पाटित आयातों और पहुँच मूल्य के साथ तुलना की गई है। इस जांच के लिए घरेलू उद्योग की वास्तविक बिक्री प्राप्ति की बिक्री की उसकी लागत और आयात के पहुँच मूल्य के साथ तुलना की गई है।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
बिक्री की लागत	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	96	96
विक्रय मूल्य	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	110	111
संबद्ध देशों की पहुँच कीमत	रुपए/सीबीएम	14,058	16,125	16,436	16,654
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	117	118

120. उपर्युक्त आंकड़े ये दर्शाते हैं कि बिक्री की लागतों में मामूली-सी गिरावट आई है तथा घरेलू बाजार में कीमतों में किसी प्रकार के दबाव अथवा नियंत्रण न होने को दर्शाते हुए क्षति अवधि के दौरान औसत विक्रय मूल्य और भारित औसत पहुँच मूल्य में बढ़ोत्तरी हुई है। तथापि, आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि वर्ष 2012-13 की तुलना में बिक्री की कीमत में 4 आधार बिन्दु की गिरावट आई है, जिससे यह पता चलता है कि कुछ देशों के खिलाफ शुल्क लागू किए जाने के बाद वर्ष 2012-13 में कीमत की स्थिति में जो सुधार हुआ था, वह नए स्रोतों से पाटन होने के कारण वर्ष 2013-14 से अपरदित हो गया है।

### (3) पाटित आयातों की कम कीमत पर बेचने संबंधी प्रभाव

121. कम कीमत पर बेचने संबंधी प्रभावों की जांच करने के लिए संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्यों के बारे में नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित मानदंडों के अनुसार जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग के क्षति रहित विक्रय मूल्य के साथ तुलना की गई है। पाटित आयातों के कम मूल्य पर बेचने संबंधी मार्जिन नीचे दिए अनुसार हैं:

विवरण	यूनिट	इंडोनेशिया	वियतनाम
क्षति रहित कीमत (एनआईपी)	रुपए प्रति सीबीएम	***	***
पहुँच कीमत	रुपए प्रति सीबीएम	16571.90	16683.15
कम कीमत पर बिक्री	रुपए प्रति सीबीएम	***	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***	***
कम कीमत पर बिक्री	% रेंज	15-25	15-25

122. आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू बाजार में पाटित आयातों को कम दामों पर बेचा जा रहा है और कम दाम पर बेचने संबंधी मार्जिन कम अधिक है।

**ज.4 घरेलू उद्योग संबंधी आर्थिक मापदंडों की जांच****(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री पर वास्तविक और संभावित प्रभाव**

123. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों/याचिकाकर्ताओं की क्षमताएं विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित नहीं होती हैं। याचिकाकर्ता उक्त संयंत्र में मोटे और पतले दोनों किस्म के एमडीएफ का उत्पादन करते हैं। इसलिए संयंत्रों की क्षमता और क्षमता उपयोग के बारे में जांच हेतु विचार किया गया है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्रियों के बारे में भी अलग से विचार किया गया है। घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री की मात्रा संबंधी सूचना नीचे दी गई सारणी में दी गई है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि मै. रूशील डेकोर ने जब 2012-13 में उत्पादन शुरू किया, तब से याचिकाकर्ताओं की कुल संयंत्र क्षमता और उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई है। तथापि, संयंत्र क्षमता वर्ष 2012-13 में लगभग 74% के स्तर पर पहुँचने के बाद लगभग 70% पर बहुत कम रही है। विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री में वर्ष 2013-14 तक लगभग 7 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होने के बाद गिरावट आई है जो यह दर्शाता है कि इस अवधि के दौरान मोटे एमडीएफ से पतले एमडीएफ तथा अन्य उत्पादों के उत्पादन में कुछ बदलाव हुआ है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि उद्योग पर उत्पादन के पीयूसी क्षेत्र में कीमत संबंधी दबाव होने के कारण उत्पादन बदलने के लिए दबाव दिया जाता है। जबकि इस अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में बढ़ोत्तरी हुई है और घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
क्षमता - संयंत्र	सीबीएम	1,80,000	2,31,000	2,70,000	2,70,000
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	128	150	150
उत्पादन - संयंत्र	सीबीएम	1,14,626	1,69,914	1,91,482	1,92,268
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	148	167	168
क्षमता उपयोग - संयंत्र	%	63.68	73.56	70.92	71.21
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	111	112
पीयूसी का उत्पादन	सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	148	160	153
पीयूसी की बिक्री	सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	139	161	156

**(ख) बाजार हिस्से पर वास्तविक/संभावित प्रभाव**

124. पूर्ववर्ती पैराग्राफ में विश्लेषण किए अनुसार घरेलू बाजार में विभिन्न कंपनियों का बाजार भाग यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग के बाजार भाग में वर्ष 2012-13 में काफी बढ़ोत्तरी हुई और उसके बाद में गिरावट आई जबकि संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा लगभग दुगुना हो गया है।

**(ग) लाभप्रदता, लाभ, निवेश पर लाभ और नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभाव**

125. क्षति जांच अवधि के दौरान कंपनी के वास्तविक लाभ और हानियों की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग के उत्पादन लागत और अन्य संबद्ध लागतों तथा घरेलू उद्योग के विक्रय मूल्यों की मानक लेखा पद्धतियों और लेखा पुस्तकों के अनुसार मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, घरेलू उद्योग के एक संघटक के द्वारा ली जा रही उत्पाद शुल्क छूट को ध्यान में रखते हुए, जिसके निकट भविष्य में समाप्त होना बताया गया है, लाभप्रदता पर पाटित आयातों के संभावित प्रभाव के बारे में जांच की गई है। तदनुसार, लाभप्रदता निवेश पर लाभ, और नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभावों के बारे में निम्नानुसार मूल्यांकन किए जाने का प्रस्ताव है:

**वास्तविक प्रभाव**

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
बिक्री की लागत	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	96	96
विक्रय मूल्य (उत्पाद-शुल्क छूट सहित)	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	110	111
लाभ/(हानि)	रुपए/सीबीएम	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	76	54	60
लाभ/(हानि)	रुपए लाख	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	106	86	93
नकद लाभ	रुपए लाख	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1,317	1,294	1,268
पीबीआईटी	रुपए लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	631	591	569
रोस	%	0-10%	5-15%	5-15%	5-15%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	471	441	477

126. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि संबद्ध वस्तुओं की लागत में मामूली-सी गिरावट आई है और वर्ष 2012-13 तक बढ़ोत्तरी होने के बाद विक्रय मूल्यों में क्षति जांच अवधि के दौरान दुबारा 4 आधार बिन्दुओं तक की गिरावट हुई है। तदनुसार, घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वर्ष 2012-13 तक सुधार हुआ और उसके बाद तेजी से गिरावट आई। तथापि, नियोजित पूंजी पर लाभ में सुधार हुआ है, जो आधार वर्ष में अत्यधिक कम था।

**संभावित प्रभाव**

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
बिक्री की लागत	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	96	96
विक्रय मूल्य (उत्पाद-शुल्क छूट सहित)	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	114	115
लाभ/(हानि)	रुपए/सीबीएम	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(27)	(21)	(15)
लाभ/(हानि)	रुपए लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(38)	(34)	(24)
नकद लाभ	रुपए लाख	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	7	25	32
पीबीआईटी	रुपए लाख	(***)	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(70)	(86)	(93)
रोस	%	(0-10)%	0-10%	0-10%	0-10%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	52	64	78

127. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यदि उत्पाद शुल्क छूट न होती, तो घरेलू उद्योग काफी हानियां हो रही होती तथा नियोजित पूंजी पर लाभ इतना कम होता कि उद्योग कायम न रहता। अतः यदि आयात कीमत क्षति की जांच अवधि में एक स्तर पर रहती और उत्पाद छूट वापस ले ली जाती, तो यह मानते हुए कि घरेलू उद्योग के लागतें समान स्तरों पर रहती हैं, तो संभावित घरेलू विक्रय मूल्यों से घरेलू उद्योग के लिए अधिक वित्तीय हानियां होंगी तथा निवेश पर लाभ, अलाभकर होगा।

**(घ) रोजगार और मजदूरियों पर वास्तविक और संभावित प्रभाव**

128. घरेलू उद्योग के रोजगार, उत्पादकता और मजदूरियों की प्रवृत्तियां निम्नानुसार हैं:

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	279	463	463
वेजेस	रुपए लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	155	263	252
वेजेस प्रति यूनिट	रुपए/सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	157	150

\*पीओआई: अक्तूबर, 13- सितंबर, 14

129. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि रूशील की नई यूनिट के द्वारा वर्ष 2012-13 में उत्पादन शुरू करने पर आधार वर्ष के उपरान्त रोजगार स्तरों में सुधार हुआ है और उसके बाद में समान स्तरों पर रहें। क्षति जांच अवधि के दौरान मजदूरियों में बढ़ोत्तरी हुई है क्योंकि इस अवधि के दौरान उत्पादन क्षमता और रोजगार में बढ़ोत्तरी हुई है। इस अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में गिरावट आई है।

**(ङ) विकास पर वास्तविक और संभावित प्रभाव**

130. पहले भाग में दिए आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में पूर्ववर्ती अवधियों में सकारात्मक वृद्धि होने के बाद क्षति जांच अवधि के दौरान मामूली-सी गिरावट आई है। लाभप्रदता की स्थिति भी इस तथ्य के बावजूद यही लाभ लेते हैं। अतः छूट समाप्त होने की स्थिति में घरेलू उद्योग की संभावित वृद्धि काफी नकारात्मक होगी।

**(च) सामान सूचियों पर वास्तविक और संभावित प्रभाव**

131. घरेलू उद्योग की सामान सूची की स्थिति यह दर्शाती है कि पाटित आयातों के कीमत संबंधी दबाव की वजह से प्रत्यक्ष तौर पर क्षति अवधि के दौरान देश में अच्छी मांग होने के बावजूद याचिकाकर्ताओं के औसत स्टॉक में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
औसत स्टॉक	सीबीएम	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	290	753	958

\*पीओआई: अक्तूबर, 13- सितंबर, 14

132. विरोधी हितकर पक्षकार ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन पर उसकी उत्पादकता में हुई कमी से प्रभाव पड़ा है। घरेलू उद्योग की उत्पादकता की निम्नानुसार जांच की गई है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि क्षति जांच अवधि के दौरान नई इकाई के बढ़ने की वजह से दैनिक उत्पादकता में सुधार हुआ है। तथापि, नई यूनिट, जो सेमी-ऑटोमैटिक है और उसमें अधिक श्रमिक नियोजित होते हैं, इसलिए इसमें रोजगार स्तर बढ़ने पर प्रति कर्मचारी उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हुई है।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	पीओआई
प्रतिदिन उत्पादकता	सीबीएम/दिन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	158	167	168
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	सीबीएम/सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	53	36	36

#### (ज) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

133. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के एक संघटक के द्वारा पर्याप्त निवेश किया गया है, जिससे क्षमता में बढ़ोत्तरी हुई है। एक अन्य घरेलू उत्पादक भी आंध्र प्रदेश में एक यूनिट की स्थापना कर रहा है, लेकिन प्रगति धीमी है। तथापि, संबद्ध वस्तुओं में उद्योग की वास्तविक और संभावित लाभप्रदता यह दर्शाती है कि संबंधित उत्पाद में और निवेश करने के लिए उद्योग की वर्तमान क्षमता काफी प्रभावित हुई है।

#### (i) पाटन और पाटन मार्जिन का स्तर

134. घरेलू उद्योग के लिए संभावित क्षति के एक सूचक के रूप में पाटन मार्जिन यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों/क्षेत्रों में से प्रत्येक का क्षति मार्जिन न्यूनतम से अधिक और पर्याप्त है, सिवाए विएतनाम से उत्पादन करने वाले एक निर्यातक को छोड़ कर, जैसा कि पहले दर्ज किया गया है।

#### ज. 5 क्षति के बारे में निष्कर्ष

135. उपर्युक्त जांच यह दर्शाती है कि संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर काफी मात्रा में भारतीय बाजार में आयात हो रहा है और क्षति की जांच अवधि के दौरान आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। आयातों की मात्रा और कीमतें, जिस पर संबद्ध देशों से इनका निर्यात किया जा रहा है, उनसे घरेलू उद्योग को उनकी कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री करने के प्रभाव से उसकी मात्रा और कीमत दोनों की क्षति हो रही है। विगत वर्ष तक उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि हुई थी और उसके बाद उनमें गिरावट आने की प्रवृत्ति दृष्टिगत हुई है। घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, निवेशों पर लाभ, नकद लाभ और सामान सूचियों के संदर्भ में गिरावट आई है। विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि उत्पाद शुल्क छूट के लाभ को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेंगे। अतः प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों पर वास्तविक और संभावित प्रभाव प्रतिकूल है और घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### ज. 6 क्षति मार्जिन

136. घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित की गई है। विभिन्न देशों से आयातों की पहुँच कीमतों की संबद्ध देशों से आयातित पाटित वस्तुओं के क्षति मार्जिनों का निर्धारण करने के लिए इस प्रकार निर्धारित क्षतिरहित कीमत से तुलना किए जाने का प्रस्ताव है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमतें घरेलू उद्योग के लिए परिकल्पित क्षति रहित कीमतों से काफी कम हैं। इस प्रकार निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:

उत्पादक	निर्यातक	एनआईपी यूएस\$/सीबीएम	पहुँच यूएस\$/सीबीएम	आईएम यूएस\$/सीबीएम	आईएम %
वियतनाम					
मैसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	मैसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	***	***	***	20-30%

	मैसर्स किम टिम ट्रेडिंग कं. लि.	***	***	***	30-40%
मैसर्स वीआरजी डोंगवाह एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी, वियतनाम	मैसर्स वीआरजी डोंगवाह एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी, वियतनाम	***	***	***	15-25%
एमडीएफ वीआरजी क्वांग ट्री वूड ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	एमडीएफ वीआरजी क्वांग ट्री वूड ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	***	***	***	10-20%
उपर्युक्त के अलावा कोई अन्य		***	***	***	35-45%
<b>इंडोनेशिया</b>					
मैसर्स पीटी सुमातेरा प्राइमा फाइबरबोर्ड, इंडोनेशिया	मैसर्स पीटी सुमातेरा प्राइमा फाइबरबोर्ड, इंडोनेशिया	***	***	***	15-25%
पीटी हिजॉ लेसतारी राया फाइबरबोर्ड	पीटी हिजॉ लेसतारी राया फाइबरबोर्ड	***	***	***	20-30%
उपर्युक्त के अलावा कोई अन्य		***	***	***	20-30%

#### झ. आकस्मिक संबंध और अधिकार रहित विश्लेषण

137. उपर्युक्त विश्लेषण यह दर्शाता है कि क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में ह्रास हुआ है तथा घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। तथापि, पहले रिकार्ड किए अनुसार, हितकर पक्षकारों ने जोरदार तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को यदि कोई क्षति हुई है, तो वह अन्य कारकों की वजह से हुई है। दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि विभिन्न स्रोतों से पाटित आयातों के कारण क्षति हुई है।

138. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि क्या अन्य कारकों के द्वारा पाटित आयातों को क्षति पहुँचाए बिना पाटित आयात अपनी मात्रा और कीमत प्रभावों से घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित कर रहे हैं। पूर्ववर्ती भाग की जांच यह दर्शाती है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग पर मात्रा संबंधी काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसलिए, पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को ही क्षति के बीच में सकारात्मक संबंध हैं। यह सुनिश्चित हो जाने पर कि प्राधिकारी ने अन्य अनिवार्य मापदंडों की यह देखने के लिए जांच की है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के अलावा अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति होती है, जैसा कि हितकर पक्षकारों के द्वारा तर्क दिया गया है। इस संदर्भ में हितकर पक्षकारों के द्वारा अपने निवेदनों में दर्शाए कारकों के साथ निम्नलिखित अनिवार्य कारकों की निम्नानुसार जांच की गई है:

#### (1) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

139. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन गणराज्य, मलेशिया, थाईलैंड, और श्रीलंका से संबद्ध वस्तुएं फिलहाल पाटनरोधी शुल्क को आकर्षित कर रहे हैं और इन देशों से आयात में काफी कमी आई है। एमडीएफ का काफी आयात करने वाला केवल अन्य देश न्यूजीलैंड है। लेकिन, जैसा पहले बताया गया है, न्यूजीलैंड से आयात अलग-अलग किस्म का होता है और आयात पाटित कीमतों पर नहीं होते हैं। इसलिए, अन्य स्रोतों से आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रभाव नहीं पड़ा है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के प्रभाव उत्पादक संबद्ध देशों सहित बहुत से देशों में हैं। इन कुछ देशों के उत्पादन करने वाले निर्यातक पर पहले कर लगाए गए थे। तथापि, इन देशों पर शुल्क लगाने के बाद इन देशों से निर्यातों में कमी आई है, जबकि संबद्ध देशों से उत्पादन करने वाले इस निर्यातक के निर्यात में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

#### (2) मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में बदलाव

140. घरेलू मांग और खपत संबंधी आंकड़े ये दर्शाते हैं कि क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के लिए मांग में अच्छी वृद्धि हुई है और क्षति जांच अवधि के दौरान मामूली-सी गिरावट आई है। किसी प्रकार का मुकाबला करने अथवा प्रतिस्थापित करने वाले उत्पादों के लिए उपभोक्ता की पसंद में किसी प्रकार कोई बदलाव दर्शाने के लिए किसी हितकर पक्षकार के द्वारा कोई सूचना नहीं दी गई है। वास्तव में मांग में

बढ़ोत्तरी इस उत्पाद के लिए उपभोक्ता की बढ़ती हुई पसंद को दर्शाती है। इसलिए उपभोक्ता की पसंद में बदलाव अथवा मांग घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक नहीं हैं।

### (3) विदेशी और घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबद्ध प्रथाएं और उनमें प्रतिस्पर्धा

141. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में कुछ अन्य घरेलू उत्पादक हैं और उन्होंने इस अवधि के दौरान अपने उत्पादन और बिक्री में बढ़ोत्तरी की है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति घरेलू उद्योग और अन्य उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि पाटन की वजह से कुछ घरेलू उत्पादकों ने हाल ही की विगत अवधि में उत्पादन बंद कर दिया है। नए संयंत्रों ने जो क्षति जांच अवधि के दौरान सामने आए हैं, उन्होंने अपने उत्पादन को गति प्रदान की है। लेकिन घरेलू उद्योग और इन उत्पादकों के बीच परस्पर कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उपलब्ध सूचना के अनुसार संबद्ध वस्तुओं के कुछ घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै. न्यूचेम लिमिटेड, बजाज ईको-टेक प्रोडक्ट्स लि. ने समान उत्पाद का उत्पादन बंद कर दिया है और शिरडी इंडस्ट्रीज लि. को बीआईएफआर के पास भेजा गया है। मंगलम और शिरडी इंडस्ट्रीजर्स व्यावहारिक रूप से रूग्ण हो गए हैं तथा उन्होंने उत्पादन बंद कर दिया है। अब केवल एक बड़ा उत्पादक बालाजी एक्शन बिल्डवैल है जिसने इस अवधि के दौरान अपने उत्पादन में वृद्धि की है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार के द्वारा यह दर्शाने के लिए कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित करने वाले इन उत्पादकों के बीच कोई महत्वपूर्ण स्पर्धा है। संबद्ध वस्तुओं के लिए कोई व्यापार प्रतिबंध नहीं है और वस्तुओं का घरेलू बाजार में स्वतंत्र रूप से आयात और व्यापार किया जा रहा है। इसीलिए भारत में व्यापार प्रतिबंध प्रथाओं और/अथवा अनुचित प्रतिस्पर्धा को घरेलू उद्योग के लिए क्षति का कारक नहीं ठहराया जा सकता है।

### (4) प्रौद्योगिकी में विकास

142. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विश्व में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन करने के लिए केवल दो प्रौद्योगिकी प्रदाता हैं और उत्पादों का उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है। घरेलू और विदेशी उत्पादकों के द्वारा इन प्रौद्योगिकियों में से एक का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए प्रौद्योगिकी में बदलाव घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है।

### (5) निर्यात निष्पादन

143. याचिका कर्ताओं ने विचाराधीन उत्पाद का निर्यात नहीं किया है और उनका उत्पादन घरेलू बाजार के लिए समर्पित है। इसीलिए निर्यात निष्पादन घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है।

144. ऐसा कोई अन्य कारक घरेलू उद्योग को प्रभावित नहीं कर सका है, जिसको किसी प्रतियोगी हितबद्ध पक्षकार के द्वारा प्राधिकारी की जानकारी में लाया गया है।

### (ज) आकस्मिक जांच स्थापित करने वाले कारक

145. उपरोक्त जांच यह दर्शाती है कि पहले रिकार्ड किए अनुसार कुछ देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों में कई तरह से बढ़ोत्तरी हुई है। पाटित आयातों से घरेलू मांग का एक बड़ा भाग शामिल हो गया है। यद्यपि, घरेलू उद्योग के एक संघटक के उत्पादन शुरू करने की वजह से घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में बढ़ोत्तरी हुई है, परन्तु संबद्ध देशों से आयातों के बढ़ने की वजह से क्षमता उपयोग बहुत कम रहता है। पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती है और कम दाम पर बिक्री हो रही है। इसके परिणामस्वरूप क्षति जांच अवधि में वास्तविक और संभावित लाभप्रदता तथा निवेश पर लाभ में गिरावट हुई। ऐसा कोई अन्य कारक नहीं जिसका घरेलू उद्योग के निष्पादन पर काफी प्रभाव पड़ सका। इसलिए प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

### (ट) भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

146. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है, ताकि भारतीय बाजार में खुली और स्पष्ट प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का फर्नीचर और निर्माण उद्योग में उपयोग किया जाता है। इसलिए, अर्थव्यवस्था का सामान्य विकास, उत्पाद के लिए बढ़ती हुई मांग और क्षेत्र की रोजगार संबंधी संभावना को ध्यान में रखते हुए एक स्वच्छ बाजार माहौल में एक घरेलू उत्पादक का बने रहना अनिवार्य है। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी प्रकार से सीमित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। इसलिए यदि इस उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाते हैं, तो प्रयोक्ता उद्योग और उपभोक्ताओं के हित काफी प्रभावित नहीं होंगे।



**(ठ) निष्कर्ष और सिफारिशें**

147. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के उपबंधों के अनुसार जांच शुरू की गई थी और सभी हितकर पक्षकारों के लिए अधिसूचित की गई थी तथा पाटन और क्षति की मात्रा और सीमा का निर्धारण करने के लिए पाटन, क्षति और आकस्मिक संबंध के विभिन्न पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना और प्रमाणनीय साक्ष्य उपलब्ध कराने हेतु निर्यातकों, आयातकर्ताओं तथा अन्य हितकर पक्षकारों को पर्याप्त अवसर दिया गया था। निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार जांच करने तथा यह सुनिश्चित करते हुए, कि संबद्ध देशों से पाटन हुआ है और पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, प्राधिकारी नीचे निर्धारित स्वरूप और तरीके से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर सुनिश्चित कर लगाने की सिफारिश जरूरी और उचित समझते हैं।

148. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी, इस जांच परिणाम में इस प्रकार से निर्धारित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन से कम मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके। तदनुसार केन्द्रीय सरकार द्वारा सम्बद्ध देशों/क्षेत्रों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के समस्त आयातों पर नीचे तालिका के कॉलम 8 में निर्दिष्ट राशि के बराबर पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है, जो कि केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना के द्वारा इस कर को लगाए जाने की तारीख से 5 वर्षों के अवधि के लिए होगा।

**शुल्क तालिका**

क्र. सं.	उप-शीर्षक अथवा टैरिफ मद	वस्तुओं का विवरण	मूल देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक (कों)	शुल्क राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	44111300 और 44111400	6 मि. मी. और उससे अधिक मोटाई वाले प्लेन मीडियम डेंसिटी फाइबर बोर्ड (एमडीएफ) जिनमें लेमिनेटिड बोर्ड शामिल नहीं हैं	वियतनाम	कोई	मैसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	मैसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	Nil	क्यूबिक मीटर	अम.डॉ.
2	-वही-	-वही-	वियतनाम	कोई	मैसर्स किम टिन एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	मैसर्स किम टिन ट्रेडिंग कं. लि.	Nil	-वही-	-वही-
3	-वही-	-वही-	वियतनाम	कोई	मैसर्स वीआरजी डोंगवाह एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी, वियतनाम	मैसर्स वीआरजी डोंगवाह एमडीएफ ज्वाइंट स्टॉक कंपनी, वियतनाम	15.95	-वही-	-वही-
4	-वही-	-वही-	वियतनाम	कोई	एमडीएफ वीआरजी क्वांग टिन वुड ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	एमडीएफ वीआरजी क्वांग टिन वुड ज्वाइंट स्टॉक कंपनी	14.84	-वही-	-वही-
5	-वही-	-वही-	वियतनाम	कोई	उपरोक्त के अलावा कोई अन्य		63.99	-वही-	-वही-
6	-वही-	-वही-	ऐसे देशों जिन पर	वियतनाम	कोई	कोई	63.99	-वही-	-वही-

			पाटन रोधी शुल्क लग रहा है के अलावा कोई अन्य देश						
7	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	कोई	मैसर्स पीटी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया	मैसर्स पीटी सुमातेरा प्राइमा फाइबर बोर्ड, इंडोनेशिया	42.38	-वहीं-	-वहीं-
8	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	कोई	पीटी हिजाऊ लेसतारी राया फाइबरबोर्ड	पीटी हिजाऊ लेसतारी राया फाइबरबोर्ड	14.71	-वहीं-	-वहीं-
9	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	कोई	उपरोक्त के अलावा कोई अन्य		64.35	-वहीं-	-वहीं-
10	-वही-	-वही-	ऐसे देशों जिन पर पाटन रोधी शुल्क लग रहा है के अलावा कोई अन्य देश	इंडोनेशिया	कोई	कोई	64.35	-वहीं-	-वहीं-

#### ड. आगे की प्रक्रिया

149. केन्द्र सरकार द्वारा इस सिफारिश पर आधारित आदेश के विरुद्ध कोई अपील, अधिनियम के प्रासंगिक उपबंधों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय प्राधिकरण (सीईएसटीएटी) के समक्ष दायर की जा सकेगी।

150. प्राधिकारी इस संबंध में समय-समय पर जारी किए गए अधिनियम के प्रासंगिक उपबंधों, नियमों और सार्वजनिक नोटिसों के अनुसार समय-समय पर इसमें की गई सिफारिश के अनुसार सुनिश्चित उपायों को जारी रखने, संशोधन अथवा समाप्त करने की जरूरत के बारे में समीक्षा कर सकते हैं। ऐसी समीक्षा करने के किसी अनुरोध को प्राधिकारी के द्वारा तब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक किसी हितकर पक्षकार के द्वारा इस प्रयोजन के लिए निर्धारित समय-सीमा के अनुसार नहीं कर दिया जाता है।

ए.के. भल्ला, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 5th May, 2016

**FINAL FINDING**

**Sub: Anti-dumping investigation concerning import of “Plain Medium Density Fibre Board (MDF) having thickness of 6mm and above” originating in or exported from Indonesia and Vietnam**

**F. NO. 14/23/2014-DGAD.**— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

1. Whereas M/s Greenply Industries Ltd and M/s Mangalam Timber Products Ltd, (applicants) had filed an application (also referred to as petition) before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) for initiation of an Antidumping duty investigation concerning imports of Plain Medium Density Fibre Board, having thickness of 6mm and above (hereinafter referred to as the subject goods or “MDF”), originating in or exported from Indonesia and Vietnam (hereinafter also referred to as the subject countries), in accordance with the Act Rules supra.
2. And Whereas, on the basis of sufficient *prima facie* evidence submitted by the applicants, the Authority issued a public notice dated 7<sup>th</sup> May, 2015, in accordance with the Rule 6(1) of the Rules, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating an Anti-Dumping investigations concerning import of the subject goods originating in or exported from the above countries, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping from the above named countries, and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry, if any.

**A. Procedure**

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation.
  - i. In terms of sub-Rule 5 of Rule 5, the Authority notified the Embassies of the subject countries in India about the receipt of the application from the domestic industry requesting for initiation of an antidumping investigation.
  - ii. The embassies of the subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of the investigations in accordance with Rules 6(2).
  - iii. The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 7<sup>th</sup> May, 2015 to the embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers and other interested parties, as per the information available with it. The domestic industry was also intimated about the initiation of the investigation. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within prescribed time limit. Copies of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter, were also sent to the Embassies of subject countries along with the list of known exporters/producers with a request to advise the exporters/producers from the subject countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.
  - iv. Copies of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry were made available to the known exporters and the embassies of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. The Authority made available non-confidential versions of the evidences presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

- v. At the request of some interested parties the Designated Authority extended the time period for submission of questionnaire responses for all interested parties up to 12<sup>th</sup> July, 2015, vide communication dated 22<sup>nd</sup> June, 2015.
- vi. Exporters' Questionnaires were sent to the following known exporters from the subject countries in accordance with the rule 6(4) to elicit relevant information.
- a) Andalan Karya Bersama. PT
  - b) La Mobila Pannelli PT
  - c) P.T. Sumatera Prima Fibre Board
  - d) Evergreen Fibre Board Berhad (EFB)
  - e) M/s PT Hijau Lestari Raya Fibreboard
  - f) Hong Duong Bamboo and Rattan Company Limited
  - g) Vietnam Wooden Board
  - h) Vitranexco Ltd. Company
  - i) VRG Dongwha MDF Ltd.
  - j) Kim Tin Group JSC Ltd
- vii. The following producers/exporters, exporting the subject goods originating in or exported from the subject countries have filed questionnaire responses:
- a) Kim Tin MDF Joint Stock Company, Vietnam
  - b) M/s Kim Tin Trading Co. Ltd, Vietnam
  - c) M/s PT Hijau Lestari Raya Fibreboard (PTH), Indonesia
  - d) M/s VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam
  - e) PT Sumatera Prima Fiberboard, Indonesia
  - f) M/s MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company, Vietnam
- viii. Questionnaires were sent to the following known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):
- a) Ply point, Kerala
  - b) Label Sales Corporation, Kerala
  - c) Srivari Traders, Tamil Nadu
  - d) Krishna Plywoods, Tamil Nadu
  - e) Thamarapally Brothers, Kerala
  - f) Jacsons Veneers and Panel P. Ltd, Kerala
  - g) Kalinga Importers & Exporters Pvt. Ltd, Kerala
  - h) Victory Plywood Distributors, Kerala
  - i) Mathewsons Export & Import P. Ltd, Kerala
  - j) Feroke Boards Ltd, Kerala
  - k) R.J. Metals, Kerala
  - l) CL Gupta Exports Ltd, India
  - m) Venugopala Slate Industries, Andhra Pradesh
  - n) Spacewood Furnishers Pvt. Ltd, Nagpur
  - o) Kutty Flushdoors and Furnitures Co. Pvt. Ltd.
  - p) Association of Furniture Manufacturers of India (AFMI)
  - q) Indian Moulded Panel Shutters Manufacturers Association, New Delhi
  - r) Balaji Impex, Maharashtra
  - s) Koteswari Slate Works, Andhra Pradesh,
  - t) Saikrupa Slate Works, Andhra Pradesh
  - u) Vishwamitra Slate Works

- ix. None of the importers/users of the subject goods has filed any questionnaire response. However, the following parties have filed brief objection to the initiation of the investigation without providing any questionnaire response or any meaningful information with regard to the case:
- a. Association of Furniture Manufacturers & Traders (India), Mumbai
  - b. M/s Sobha Ltd, Bangalore
- x. Association of Indian Panel Board Manufacturers, Ahmedabad, in its brief submissions, has supported the petition and the investigation being carried out by the Authority.
- xi. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India, has been worked out based on the information furnished by the petitioner and as per Generally Accepted Accounting Principles (GAAP), so as to ascertain whether Anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic industry;
- xii. The confidentiality claims of various interested parties, in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which are by nature confidential or which have been provided on a confidential basis by the interested parties, along with non- confidential summary thereof have been treated confidential. \*\*\* in this finding represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xiii. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 03.02.2016. The interested parties were requested to file written submissions of their views expressed orally. The submissions made by the interested parties during the course of the investigations and written submissions after the public hearings have been addressed in this finding to the extent they are relevant and backed by evidence;
- xiv. Verification of the information and data submitted by the participating domestic producers as well as the responding exporters were carried out to the extent deemed necessary and feasible;
- xv. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has treated such parties as non-cooperative and has used "best information available" for the determinations to the extent required;
- xvi. In terms of Rule 16 of the Rules the Authority disclosed the essential facts of the case through a disclosure statement issued on 26<sup>th</sup> April, 2016. The following parties have filed their comments on the disclosure statement and their comments have been considered to the extent they are relevant and not re-iteration of their earlier views on the subject:
- i. M/s TPM Consultants, on behalf of the domestic industry;
  - ii. M/s APJ SLG Law Associates, on behalf of M/s VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam;
  - iii. M/s Pothal and Associates, on behalf of M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company, Vietnam;
  - iv. M/s Pothal and Associates, on behalf of M/s Kim Tin Trading Co. Ltd, Vietnam;
  - v. M/s ANM Global Inc, on behalf of M/s PTH Hijau, Indonesia; and
  - vi. M/s ANM Global Inc, on behalf of M/s MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company, Vietnam
- xvii. Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> October 2013 to 30<sup>th</sup> September 2014 (12 months). However, the injury information period covered the periods April 2011 to March, 2012, April 2012 to March 2013, April 2013 to March 2014 and the period of investigation;
- xviii. For the purpose of conversion of the currencies in the countries of exports the daily exchange rates prevailing during the period of investigation as reported in the questionnaire responses of the cooperating exporters have been considered. For the conversion of Rupees average exchange rate of 1\$= Rs. 61.65 for the POI has been considered.

**B. Product Under Consideration and Like Article**

4. The product under consideration in the present investigation is “Plain Medium Density Fibre Board (MDF) having thickness of 6mm and above”. MDF is also known as Plain MDF Board, or Custom-wood, or Craft-wood in market parlance. Plain Medium Density Fibre board, or Plain MDF Board is a composite wood product made out of wood waste fibres glued together with urea formaldehyde resin or melamine resin under heat and pressure. It is widely used for partitions, modular furniture, cabinets etc. due to its smooth and uniform finish. The product is produced in two types, i.e. plain and laminated. MDF board is processed further, such as painted, laminated by veneer etc. to obtain laminated MDF Board. Product scope of the present petition does not include laminated MDF Board.
5. Plain Medium Density Fibre Board is normally produced and sold in standard sizes, and is used by cutting as per size and design requirement of the user. The standard thickness in which it is produced and sold are 1.2mm to 25mm and standard size is 8X4. The thickness can be modified to suit customer requirements. The product under consideration is of thickness of above 6mm only. In industry parlance, the boards are divided into “thick” and “thin”. The product under consideration is described as “thick” MDF.
6. The subject goods produced and sold by the applicant domestic industry and imported from the subject country are comparable in terms of essential product characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Consumers use the two interchangeably and are therefore, technically and commercially substitutable. Therefore, the domestic products and imported subject goods are like products within the meaning of the term under the Rules.
7. The opposing interested parties have not made any relevant submission with regard to the scope of the product under consideration and the like article. Therefore, the Authority confirms the scope of the product under consideration as “Plain Medium Density Fibre Board (MDF) having thickness of 6mm and above”.
8. The product under consideration falls under the Chapter 44 of the Customs Tariff Classification, that is “wood and articles of wood; wood charcoal” and more specifically under Heading 4411, “Fibre board of wood or other ligneous materials, whether or not bonded with resins or other organic substances.” The product under consideration is covered under ITC HS 44111300 and 44111400 at 8-digit level. Since the product does not have a dedicated classification the Customs classification above is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

**C. Domestic Industry and Standing**

9. The Authority notes that the application for initiation of this investigation was jointly filed by M/s Greenply Industries Limited and M/s Mangalam Timber Products Ltd., two of the major domestic producers of Plain Medium Density Fibre board in India accounting for about 40% of the total production of the subject goods in India as per the information filed by the petitioners. Apart from the applicant domestic producers as above, there are other producers of the subject goods in India namely, M/s Rushil Décor Limited, Shirdi Industries Limited, Nuchem Limited and Balaji Action Buildwell. M/s Rushil Décor Limited, which accounted for about 20% of total production, had supported the application/petition.
10. As per the information filed by the petitioners Nuchem Limited (manufacturing NUWUD MDF brand) shut down production in February 2011. Bajaj Eco-Tec Products Limited ceased producing the like product in 2009. Shirdi Industries Limited significantly reduced production for a long period and now has been referred to BIFR. Therefore, M/s Greenply Industries Limited and M/s Mangalam Timber Products Ltd., alongwith the supporting domestic producer, i.e., M/s Rushil Décor Limited accounted for about 60% of the domestic industry and the applicants were treated as the domestic industry at the time of initiation for the purpose of injury examination.
11. However, after initiation of the investigation the petitioners brought to the notice of the Authority that M/s Mangalam Timber Products Ltd., which was one of the petitioners, has expressed its inability to provide elaborate

supplementary information required by the Designated Authority for the purpose of injury and injury margin determinations because of significant financial losses and consequent administrative issues. It was also submitted that considering the above position this Company was earlier excluded from the scope of domestic industry in a recently concluded sunset review investigation. It was represented on behalf of the applicant domestic producers that the Authority may proceed with the investigation with M/s Greenply Industries Limited as the domestic industry as it in itself commanded a major proportion of the domestic production of the subject goods. However, if the Authority wanted to increase the participation by way of inclusion of other domestic producers, data with regard to the other producers can be submitted.

12. Notwithstanding the fact that M/s Greenply Industries alone, accounting for 33% of Total domestic production, commanded a major proportion of the domestic production of the subject goods and alongwith the supporters, i.e. M/s Rushil Décor Ltd. accounted for more than 50% of the domestic production, in order to make the injury analysis more representative this supporting domestic producer was asked to join the petition and provide its cost and injury related data. Accordingly, M/s Rushil Décor Ltd. submitted its cost and injury information and has been treated as a part of the domestic industry for the purpose of this investigation.
13. The opposing interest parties, in their various submissions, including their post disclosure comments, have argued that the applicant domestic industry has misled the Designated Authority as they were well aware of non-participation of M/s Mangalam Timber Products and this fact was suppressed from the Authority at the time of initiation. Had the authority known at the time of initiation itself that the domestic producers who have provided the verifiable information only accounted for 33% of the total domestic production, it might not have initiated the proceedings. This is irrespective of the fact that the authority has a right to initiate in case of more than 25% of the total domestic production. It has been further argued that M/s Rushil Décor may not be considered as part of domestic industry at such belated stage as M/s Rushil Décor's information was not the basis of initiation. It has been argued that determination of standing is a condition precedent to initiation of investigation as per Rule 5(3) and therefore, after non-cooperation by Mangalam there is no clarity on the constituents and/or purview of 'domestic industry' in the investigation and the application fails to meet the test of adequacy and accuracy as required under Rule 5(3).
14. The domestic industry, in its submissions, has counter the views of the opposing interested parties, and has *inter alia* argued as under:
  - i. That the argument of the interested parties that the petitioners alone should command 50% of Total domestic production as consistent practice is without any basis. In fact, share of the petitioning companies constituted over 39% at the stage of initiation, whereas the share of participating companies constitutes 55% at present showing increase in the share of petitioning companies over the period;
  - ii. That the power of defining the scope of the domestic industry is vested in the Designated Authority and the scope is determined by the Designated Authority at every stage of the investigation. The scope of domestic industry at the stage of initiation and the final finding can vary. By arguing, that M/s Rushil Décor cannot be included in the scope of the domestic industry at a later stage, the interested parties are attempting to argue that the scope of domestic industry is frozen at the stage of initiation, which is not the case.
  - iii. That merely because Rushil Décor has not stated anything with regards to imports made by them does not imply that they are ineligible domestic industry. The question of imports made by a domestic producer and its relationship with an exporter and an importer is a parameter which is relevant not only with petitioning companies, but also for supporting companies and all other domestic producers. The interested parties have wrongly assumed that the issue of the relationship is limited only to the petitioning companies. Thus if Rushil Décor has supported the petition at the stage of initiation and if their production was counted for the purpose of determining eligibility of the petitioner and the scope of domestic industry at the stage of initiation, the same was possible only after ascertaining that the domestic producers included for the purpose are all eligible domestic producers. Rule 2(b) and Rule 5(3) in this regard make it evident that the scope of the domestic industry is determined from amongst the eligible domestic producers. However, the relevant certificate from Rushil Décor has been separately provided for the public file.

15. In their post disclosure submissions some of the interested parties have argued that the constitution of the Domestic Industry should have been made known to the interested parties prior to hearing so that they could offer their comments effectively. However, it is for the first time that the structure of the Domestic Industry is being conveyed through the disclosure statement thereby affecting their right to comment on the subject effectively. On the other hand, the domestic industry has commented that the Authority has rightly held that M/s Greenply Industries and M/s Rushil Décor Ltd are eligible domestic industry in terms of Rule 2(b) of the Anti-Dumping Rules.
16. In this regard the Authority notes that the communications with regard to the changes in the composition of the domestic industry was placed in the public folder and was available to the interested parties on the basis of which the issue was argued extensively in the public hearing and it was adequately clarified that though the remaining domestic producer i.e., Green Ply commands the standing to continue as the domestic industry, in order to have more representative data the Authority has included the supporter i.e., Rushil within the scope of the domestic industry. Therefore, these arguments of the parties at this stage are not valid.
17. The Authority notes that Rule 2(b) of the AD Rules provides that “*domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped articles or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers.*”
18. As noted earlier the application was initially filed by M/s Greenply Industries and M/s Mangalam Timber together accounting for about 40% of domestic production and alongwith the supporter to the petition i.e. M/s Rushil Décor Ltd. commanded about 60% of domestic production. Even if, Mangalam was not a part of petition *ab initio* M/s Greenply Industries alone commanded more than 25% of domestic production and alongwith the supporter i.e., M/s Rushil accounted for more than 50% of domestic production. Therefore, the argument of the opposing interested parties that the initiation was vitiated is not valid.
19. The Authority further notes that notwithstanding the fact that M/s Greenply Industries, accounting for 33% of total domestic production, commanded a major proportion of the domestic production of the subject goods and alongwith the supporters, i.e. M/s Rushil Décor Ltd. accounted for more than 50% of the domestic production, in order to make the injury analysis more representative the supporting domestic producer was asked to join the petition and provide its cost and injury related data. Therefore, there is no infirmity with regard to the composition of the domestic industry and the interests of the other parties have not been compromised in any manner. Accordingly, the Authority hold that M/s Greenply Industries and M/s Rushil Décor Ltd. constitute the domestic industry for the purpose of this investigation.

#### **D. Countries Named, Volume of Imports and de minimis limits**

20. The domestic industry in its petition provided the import data as sourced from a private data source i.e. M/s IBIS. Subsequently, the Authority obtained transaction-wise import data from DGCI&S. This data has been analysed for determination of volume and import price of the subject goods from various sources. As per this data, apart from the subject countries, the import from Malaysia, Sri Lanka and New Zealand are above *de minimis*. However, the Authority notes that duties are in force against China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka. Only other countries having above *de minimis* exports are Indonesia (14.8%), Vietnam (41.0%) and New Zealand (11.4%).
21. The opposing interested parties, in their various submissions, including their post disclosure comments, have raised the issue of exclusion of New Zealand from the scope of investigation despite significant imports from that country. The petitioners have submitted that the export of MDF from New Zealand, though above *de minimis*, are of a different type, used for different end use segments not catered to by the products manufactured by the domestic industry and therefore, not affecting them. Hence the petition did not include New Zealand for investigation. The petitioners have further clarified that in the previous investigation, initially New Zealand was included in the investigation along with other countries but in the final findings the investigation against this country was dropped



on the request of the domestic industry on similar grounds. The Authority notes that the Final findings dated 26th August, 2009 addressed the issue as under:

*“The Authority has noted that the domestic industry has withdrawn their application in respect of New Zealand in view of the fact that imports from that country were primarily present in a market segment where the domestic industry was not offering the material in significant volumes. The Authority has noted that the domestic industry has admitted that imports from New Zealand were not causing injury to them while earlier they have argued that imports from New Zealand were also causing injury. M/s. APJ SLG Law Offices have failed to produce any evidence that injury was not caused by the imports from the subject countries. The Authority accordingly allows withdrawal of application in respect of New Zealand under Rule 14 of the Rules and after exclusion of New Zealand, restrict Anti-Dumping Investigations concerning imports of Plain Medium Density Fibre Board from 6MM thickness and above (hereinafter referred to as subject goods) from China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka...”*

22. The price level of imports from New Zealand, as per the data analyzed above, is about 5 to 10% higher than the prices from Indonesia and Vietnam respectively. The domestic industry has not brought any allegation of dumping against this country. Therefore, the Authority does not find any force in the arguments of the opposing interested parties with regards to exclusion of New Zealand from this investigation.

#### **E. Interested parties to this investigation**

23. On the basis of questionnaire responses and other submissions filed by the responding producers/exporters and importers listed in sub para vii in para-3 above, alongwith the Govt.s of the Countries named in this investigation and the domestic industry in India have been treated as interested parties to this investigation.

#### **F. Other issues raised by the interested parties**

##### **F.1. Confidentiality**

24. With regard to the confidentiality claims of the domestic industry, the opposing interested parties, in their submissions, have argued
- i. That excessive confidentiality has been claimed by the petitioners and original/raw transaction wise imports data obtained from IBIS has not been furnished. The soft copy in excel file of transaction wise sorted import data, raw/original import data and list of excluded transactions from IBIS has not been provided.
  - ii. That company wise capacity, production, sales volume, market share of domestic industry and other producers have been kept confidential.
  - iii. That item wise details of constructed normal value as well as normal value have been kept confidential.
  - iv. That the petitioners have not provided any evidence of the adjustments claimed.
  - v. That the profit/loss and ROCE in percentage terms and inventory has been kept confidential.
25. The domestic industry, in its submissions, has argued
- i. That the domestic industry has claimed only such information as confidential which is protected as such under the law.
  - ii. As regards IBIS data's confidentiality, there is no such requirement under any law or in the prescribed format. The data received by the petitioners is not a raw/original data but a processed data.

- iii. The company wise details' disclosure is not a prescribed requirement. Individual company specific information is a part of intermediate information which is required by the authority only for the purpose of verification of information which is the domain of the authority rather than the interested parties.
  - iv. The item wise details of constructed normal value and normal value are confidential and cannot be shared.
  - v. The details of adjustments are also confidential and cannot be shared. Further the petitioner has adopted reasonable estimates for some of the expenses, the details of which were readily available in the petition.
26. The issues raised by the interested parties with regards to confidentiality have been examined. The Authority notes that to the extent possible and practicable the confidentiality claims of various parties submitting the information have been examined and confidentiality claims admitted on the basis of nature of information provided by the parties. As far as the submissions of the exporters are concerned, the information provided by the exporters, to the extent they are not business sensitive to the party providing the same, have been placed in the public file. In view of the above the objections of all parties with respect to confidentiality claims of the opposing parties have been disposed off.

## **F.2. Other Issues raised by the parties**

27. The opposing interested parties, in their submissions, have raised the following issues with regard to this investigation:
- i. That the petitioners have provided misleading information with regard to the import volumes as incorrect weight has been considered for showing higher imports. For example, domestic industry has considered 650 kg/m<sup>3</sup> for 6mm MDF, but the actual weight is in excess of 700 kg/m<sup>3</sup>.
  - ii. That the correctness of sorted imported data cannot be verified as a proper copy or original as well as sorted data has not been furnished.
  - iii. The infirmities and delays in filing information from the side of the petitioners have vitiated the rights of opposing parties to offer appropriate and adequate rebuttals at the appropriate time.
28. The domestic industry, in its submissions, has refuted the arguments of the interested parties and has inter alia, submitted:
- i. That the domestic industry has provided information with regard to volume and value of imports and source of information has also been provided to the Designated Authority after best possible identification of imports product under consideration and there is complete disclosure of the transactions which have been included by the petitioners for assessment of volume and value of imports.
  - ii. That any consideration of higher weight shall only lead to lower import price. In any case the difference is not so significant as to cause a significant difference in the conclusion.
  - iii. That it is the prerogative of the authority and not the interested parties to verify the sorted import data.
  - iv. That relevant information was filed within reasonable time of the Designated Authority requiring the same.
29. The Authority notes the issues raised by the parties as above. The major producers/exporters of the subject goods in the subject countries have provided substantive information on the volume and value of exports from those countries. The Authority has also obtained transaction-wise import data from DGCI&S which has been analyzed along with the data submitted by the co- operative exporters from the subject countries taking into account the physical parameters provided therein. Therefore, the issues raised by the parties have been adequately addressed.
30. All other issues raised by the interested parties have been addressed in the respective sections in this finding to the extent they are relevant and supported by evidence.

**G. Assessment of dumping and dumping margin determination**

31. The Authority notes that the following producers and exporters of the subject goods from the subject countries have filed their questionnaire responses providing information for determination of their normal values, export prices and dumping margins:

**Vietnam**

- a) Kim Tin MDF Joint Stock Company, Vietnam along with M/s Kim Tin Trading Co. Ltd, Vietnam
- b) M/s VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam
- c) M/s MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company, Vietnam

**Indonesia**

- d) M/s PT Hijau Lestari Raya Fibreboard (PTH), Indonesia
- e) PT Sumatera Prima Fiberboard, Indonesia

32. The domestic industry, in its comments on the exporter questionnaire responses filed by the producers/exporters, has made the following submissions with regard to certain aspects of costs and prices reported by the responding exporters:

- a. That as per information gathered by them in respect of VRG Dongwha MDF Joint Stock company, Vietnam, the company has significantly increased its business operation in last three years up to the POI and about 15% of the company's operations are in export market, which shows significant export orientation of the company.
- b. That profitability of the company increased tremendously over the period which could have been possible only because of Government support to this industry. It is evident from the annual report that this company is selling the product under consideration at higher home market price as compared to the price at which goods have been exported to India.
- c. That by most conservative estimates, the ex-factory export price shall come to USD 200 per CBM. If exporters have earned 25% profits on sales, it implies that the exporters are claiming a cost of production of about USD 150-160 per CBM, or, alternatively, their export price to third countries or domestic prices are materially higher than their export price to India. Even if these exporters are getting good amount of Government support or subsidies, they cannot have a cost of production as low as USD 150 per CBM. This implies that the exporters are selling the product under consideration at much higher price in the home market as compared to exports in India. It is thus evident that the exporters are resorting to heavy dumping.
- d. That though, the company is producing other products as well, the fact remains that PUC forms a very substantial part of these companies' operations. Thus, the mere fact that the annual report of the company pertains to various operations per-se does not imply that the performance with regard to PUC shall be materially different from performance with regard to other products.
- e. That the calculations done by the petitioner shows that the company has incurred interest expenses of about 40 billion (local currency) on a borrowed fund of about 800 billion, which implies an interest cost of about 5%. This interest cost is far below the rate of interest prevalent in Indonesia. It is, thus evident that the exporter is getting some interest subsidy or has been given loans at significantly subsidized rates. The Authority may kindly investigate the facts further.
- f. That there is significant shareholder's equity in the company. Debt is only 0.60 times the equity, while, the current debt is only 0.37 times. The equity and long term debt is only 0.24 times the equity. This equity has come from the promoters. The Authority may kindly investigate whether the promoters have borrowed funds and advanced the same to the company as equity. If the equity participation by the promoters is out of borrowed funds, the Authority may kindly charge appropriate interest on such funds before determining cost of production.

- g. That the company is making its own glue. This fact does not appear to have been appropriately reported in questionnaire response. The Authority may kindly investigate.
  - h. That the company is making high, medium and low density fiber board and both plain and laminated. Further, the company is operating in pine wood, plywood, rubber wood and other woods. Operations of these products were not very different in terms of resultant profitability. Therefore, the performance reported in annual report is clearly indicative of the performance of the PUC.
  - i. That a number of exporters seem to have purchased raw material from related parties or have produced the same captively. Petitioner requests the authority to kindly check the valuation of these inputs.
33. Apart from the above the domestic industry has also pointed out certain deficiencies in the questionnaire responses of M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia on account of non-disclosure of incentive on export sale and channels of distribution and certain details about product description.
34. The responding producers/exporters and other interested parties, in their submissions have argued that Normal value, export price and dumping margin for the co-operating producers/exporter should be based on its actual cost/price data as submitted in their respective questionnaire responses.
35. The Authority notes that this being an antidumping investigation, subsidy, if any, by the Governments of the respective countries, is outside the scope of this investigation. As regard other issues it is noted that the questionnaire responses of the responding producers and exporters in the subject countries were examined and supplementary information were sought from these parties to the extent necessary. The information submitted by the above named producers and exporters were also verified to the extent possible through on spot verifications and issues raised by the parties as above have been examined to the extent relevant and feasible during the course of the investigation. The Normal Values, Export Prices and Dumping Margins of these producers/Exporters have been determined on the basis of the verified data/information.
36. Some of the producers/exporters participating in this investigation have submitted that though the Authority has not notified the Product Code Numbers for like to like comparison for determination of dumping and injury margins the comparisons should be carried out based on their individual product codes and such comparisons should be limited to the product types exported to India for the purpose of dumping margin determination. In this connection the Authority noted in the disclosure statement that the product is manufactured and sold in standard sizes but in various thicknesses. The emission standards, i.e., residual Formaldehyde content, are defined by the customers. During the verification of various producers in various countries the producers stated that there is certain cost variation between different thicknesses but such variation could not be demonstrated as none of the producers, including the domestic industry, maintain cost data thickness or product type-wise and only average cost of production is maintained. Therefore, conducting an OCT test for few product types on the basis of average cost of the product as a whole, which also includes excluded product types, may not be appropriate. The Authority further noted that there is no clear price trend which could indicate product type-wise price variation requiring type to type comparison. In fact examination of the data of the cooperating exporters indicates wide and random variation in prices between thicknesses/product types without any clear pattern or trend to correlate with product type differentiation. Therefore, majority of the other producers in the subject countries have not claimed determination of dumping margin on the basis of product type based comparison. In view of the above the Authority was of the view that weighted average to weighted average comparison method for the product as whole is more appropriate in the factual matrix of this case. Accordingly, the Authority proposed to determine the normal value and dumping margin for the product as a whole and not by limiting the comparison to exact product types only. It was also observed that the domestic sales of the co-operating exporters involved certain very low priced transactions indicating sale of off-spec/seconds materials sold in the domestic market. It was mentioned in the disclosure statement that those off-spec materials were proposed to be taken out of the domestic sales for the purpose of determination of normal value.
37. While the other producers/exporters from Vietnam and Indonesia have not opposed the above methodology proposed by the Authority, M/s VRG Dongwha, in its post disclosure submissions has argued that PCN to PCN comparison is the standard methodology to give effect to the provisions of Para 6 of Annexure I of the Anti-Dumping Rules and

Article 2.4 of the Anti-Dumping Agreement for “apple to apple” comparison. It has been argued that PCN to PCN methodology is adopted in all cases where there are different grades, types or models within the same Product under Consideration. The PCNs take into consideration the differences on account of various attributes which affect price comparability including differences in physical characteristics, etc. For example, if the exporter sells 18mm thickness in the export market, the price has to be necessarily compared only with the price of 18mm MDF sold in the domestic market. The thickness-wise comparison has to be further divided on the basis of emission level as both these factors affect price comparability. It has been argued that the PCN to PCN comparison is done in all cases where different grades/types/models are sold. Therefore, the proposed methodology completely disregards the provisions of Para 6 and Article 2.4.

38. It has been further submitted that it is the right of the exporter to claim PCN to PCN comparison as was held by the Appellate Body in the case of Argentina Ceramic Tiles case, where it was noted that:

*“Article 2.4 places the obligation on the investigating authority to make due allowance, in each case on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in physical characteristics. The last sentence of Article 2.4 provides that the authorities shall indicate to the parties in question what information is necessary to ensure a fair comparison. We believe that the requirement to make due allowance for such differences, in each case on its merits, means at a minimum that the authority has to evaluate identified differences in physical characteristics to see whether an adjustment is required to maintain price comparability and to ensure a fair comparison between normal value and export price under Article 2.4 of the AD Agreement, and to adjust where necessary.*

*...We do not agree with Argentina’s view that Article 2.4, through the qualifying language that due allowance shall be made ‘in each case’ ‘on its merits’, permits an investigating authority to adjust only for the most important of the physical differences that affect price comparability, even if making the remaining adjustments would have been, as the parties agree, complex. The DCD chose not to conduct a model-by-model comparison and it was then left to find other means to account for the remaining physical differences affecting price comparability. It did not do so. (paras 6.113 & 6.116)”*

39. Further it has been argued that in Egypt — Steel Rebar case the Panel read Article 2.4 as explicitly requiring a fact-based, case-by-case analysis of differences that affect price comparability which read as follows:

*“[W]e read Article 2.4 as explicitly requiring a fact-based, case-by-case analysis of differences that affect price comparability. In this regard, we take note in particular of the requirement in Article 2.4 that ‘[d]ue allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability’ (emphasis added). We note as well that in addition to an illustrative list of possible such differences, Article 2.4 also requires allowances for ‘any other differences which are also demonstrated to affect price comparability’ (emphasis added). Finally, we note the affirmative information-gathering burden on the investigating authority in this context, that it ‘shall indicate to the parties in question what information is necessary to ensure a fair comparison and shall not impose an unreasonable burden of proof on those parties’ (emphasis added). In short, where it is demonstrated by one or another party in a particular case, or by the data itself that a given difference affects price comparability, an adjustment must be made. In identifying to the parties the data that it considers would be necessary to make such a demonstration, the investigating authority is not to impose an unreasonable burden of proof on the parties. Thus, the process of determining what kind or types of adjustments need to be made to one or both sides of the dumping margin equation to ensure a fair comparison, is something of a dialogue between interested parties and the investigating authority, and must be done on a case by- case basis, grounded in factual evidence.” (para 7.352)”*

40. It has been further argued by this exporter that they have sold 44 PCNs in the domestic market while in India only 19 PCNs have been sold. The product-mix is entirely different. Moreover, there is significant variation in the quantities sold in the domestic and India market for a particular PCN. In such case, any comparison, not recognizing the PCN-wise comparison, will certainly give incorrect and skewed results.
41. The Domestic Industry, on the other hand has submitted that the Authority has rightly resorted to weighted average to weighted average comparison method for the product as a whole, which is more appropriate in the present case.

42. Dongwha, in its post disclosure submissions, has further argued that removal of off-spec material on the ground that the prices are lower is wholly arbitrary and without the authority of law. The only test that can be applied while accepting the individual transactions is the OCT test. If the OCT test is passed, the removal of low priced transactions would only lead to increase the normal value and the resultant dumping margin. It has been argued that there is no provision to ignore the off-spec material transactions as long as they are sold as MDF.
43. The issues raised by the interested parties with regard to the methodology adopted for determination of the dumping margins have been examined by the Authority. As regards the issue of comparison methodology adopted is concerned, the Authority notes that Article 2.4.2 of the Anti-Dumping Agreement, read with Annexure-I of the Anti-dumping Rules, provides that

*“Subject to the provisions governing fair comparison in paragraph 4, the existence of margins of dumping during the investigation phase shall normally be established on the basis of a comparison of a weighted average normal value with a weighted average of prices of all comparable export transactions or by a comparison of normal value and export prices on a transaction-to-transaction basis. A normal value established on a weighted average basis may be compared to prices of individual export transactions if the authorities find a pattern of export prices which differ significantly among different purchasers, regions or time periods, and if an explanation is provided as to why such differences cannot be taken into account appropriately by the use of a weighted average-to-weighted average or transaction-to-transaction comparison.”*

44. While the Authority notes that a ‘model to model’ or ‘apple to apple’ comparison methodology is the preferred methodology, provided the product can be clearly categorised into distinct models or product types having distinct physical and/or chemical differences having bearing on cost and prices thereby affecting price comparability. However, in the instant case that does not appear to be the case.
45. The subject goods are manufactured in different thicknesses and the cost of production increases as the thickness decreases because of higher wastages and more machine time required for manufacture of lower thicknesses. Though the product is sold in various thicknesses the cost is not captured or maintained by the producers on the basis of the thicknesses. None of the producers have maintained the costs thickness-wise or the product code-wise, even if they have product codification systems. On the price front also it was observed that the pricing of various thicknesses is random and do not follow any pattern though lower thicknesses should be fetching higher prices because of higher cost involved. Even within the same thicknesses there are wide variation in prices without any definite pattern or trend to indicate that the thickness or other characteristics claimed by the exporter actually affects the price comparability. The prices in the domestic market as well as export market of all producers in the subject countries indicate that the prices do not follow any particular pattern based on the thickness or the emission standards to substantiate that the prices are affected by the differences in thicknesses or emission standards to recognise them as distinct models or product types. In fact, the WTO decisions quoted above lay stress on the ‘differences that affect price comparability needs to be demonstrated’ by the party claiming such comparison.
46. Therefore, in a situation like this, where the prices do not appear to have been affected by the product differentiation, as claimed by the exporter, there is no case for a product type based comparison. In fact, the producers are treating the product as a very standard and uniform product. That is precisely the reason as to why PCN-wise analysis, by limiting the comparison only to comparable product types, where distinct PCNs do not exist, has not been found appropriate in the factual matrix of this case. Accordingly, the Authority confirms the methodology adopted in the disclosure statement and proceeds with weighted average to weighted average comparison of the Normal value and Export price for all cooperating exporters from the subject countries.
47. As regards the issue of off-spec materials are concerned, the Authority noted that during the production process certain quantities of defective or second grade products are generated which are sold at very low prices. Some of the producers in the subject countries have clearly identified such products as off-spec. This responding producer/exporters should have identified those transactions in the response filed by it. Though Dongwha has also sold certain quantities of such material in the domestic market at prices, even below 50% of its cost, which clearly establishes that these are off-spec material the Company has failed to identify them as off-spec product. The Authority notes that nowhere the off-spec/mill rejects or seconds are compared with the prime materials. Inclusion of such sales in determination of normal

value distorts the determination as they are not comparable transactions. Therefore, such transactions, involving very low price sales are required to be removed from the domestic sales transactions for the purpose of determination of normal values.

48. However certain corrections in the determinations, as pointed out by the producers/exporters in respect of their own data have been carried out, to the extent they were found correct and the determinations have been revised to that extent.
49. Domestic Industry, in its disclosure comments has argued that the Authority should disclose verification reports of the exporters. It has been argued that disclosure of the verification reports is important because firstly the present quantum of anti-dumping duty is inadequate. Secondly, exporters have not responded to the issues with regard to existence of dumping margin and thirdly, because claims of low dumping by exporters is suspicious and needs to be examined in detail. In this regard, the Authority notes that the verification report is a confidential document prepared by the Authority and contains business proprietary information's of the exporters. Therefore, as a consistent practice, it is never shared with other parties. The issues raised by the domestic industry with regard to the cost and price issues of the exporters have been adequately examined during the spot verification and have been addressed in the finding. Therefore, the arguments of the domestic industry in this regard stand disposed off.

### **G.1 Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins**

#### **Vietnam**

50. As per the import data analyzed 45,386 CBMs of the subject goods have been imported from Vietnam during the period under investigation. Three producing exporters from Vietnam have filed complete questionnaire responses and the information submitted by them have also been verified to the extent possible. Accordingly, dumping margins for the producers/exporters from Vietnam have been determined as follows:

#### **a) M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company (Producing Exporter) along with M/s Kim Tin Trading Co. Ltd. (Exporter)**

51. M/s KIM TIN MDF Joint Stock Company (JSC), a producer as well as exporter of the subject goods, has filed a questionnaire response along with its related trading company M/s KIM TIN Trading Co., Ltd. (KTT) as the exporter of the subject goods manufactured by the former, to India during the POI. JSC is the producer of the goods and sells goods to its Trading arm KTT which in turn sells the goods in the domestic market and also exports, mainly to India. JSC also directly sold a very small quantity in the domestic market to one of its actual user affiliates and also exported some quantities directly to India during the POI. Supplementary information was sought from these two Companies wherever required and the same has been provided. The data submitted by this producer-exporter combination was verified through an on-sight verification to the extent possible and the verified data has been used for this determination.

#### **Normal Value**

52. During the POI JSC sold [\*\*\*] CBM of the subject goods in domestic market through KIM TIN Trading out of which [\*\*\*] CBM were sold to independent unrelated customers and the rest i.e., [\*\*\*] CBM were sold to its related company KIM TIN Green Wood JSC, a manufacturer of furniture. In addition, JSC also sold [\*\*\*] CBMs to KIM TIN Green Wood JSC directly during the POI. [\*\*\*] % of the domestic transactions of JSC- KTT were to independent domestic buyers. The domestic sales are in sufficient volumes. The company produced and sold the subject goods in various thicknesses and emission standards. However, the company maintains the cost of production of the product as a whole. Average cost of productions of the producer and the SGA expenses of the trading company was determined based on the verified cost data and additional information called for from the producer as US\$[\*\*\*] / CBM.
53. Since the first transaction between JSC and KTT are related party transactions for the purpose of determination of the normal value the selling price of KTT to independent buyers has been considered. Small quantity of off-spec material supplied in the domestic market has been removed and the remaining domestic sales transactions of KTT were subjected to ordinary course of trade test. The producing exporters, in its post disclosure comments have pointed out

certain errors in the OCT test with regard to the treatment of notional transportation cost. The issue raised has been examined and considered for the final determination. Since the prices of KTT are delivered prices ordinary course trade test has been conducted on these domestic sale transactions on the basis of verified average cost of sales of the subject goods by KTT after adding the SGA expenses of KTT to the cost of production of JSC. [\*\*\*] % of domestic sales are found to be profitable. Accordingly, all domestic sales transactions of KTT have been considered for determination of normal value of this producer and exporter combination. The domestic transactions to independent buyers are on delivered basis. The exporter has claimed adjustment on account of inland transportation on notional basis as transportation has been carried out by the trading Company using its own trucks and this expense is not reflected in the books of account of the producer. Therefore, this adjustment has not been admitted. In its post disclosure comments the producing exporter has re-iterated its claim for adjustment towards inland freight on the ground that the related trading company has transported the goods using its own trucks and therefore, the notional adjustment as claimed should be allowed. However, the Authority does not find any merit in this argument as neither the producer nor the exporter has made any claim based on actual expense incurred on this account. No other expense has been claimed by the exporter on the domestic selling price of the trading Company. Accordingly, the weighted average normal value for the above producers/exporters works out as under:

		Exch. Rate	21036
<b>Profitable sales CBM</b>	<b>Sum of NET Invoice value VAT excluded</b>	<b>Ex-factory Price VND/CBM</b>	<b>Ex-factory NV US\$/CBM</b>
***	***	***	***

#### Export Price

54. M/s. Kim Tin JSC had exported [\*\*\*] CBMs of the subject goods produced by it directly and [\*\*\*] CBMs through the related trading company namely KIM TIN Trading Co., Ltd. The direct exports did not have any involvement of KIM TIN Trading Co., Ltd, except for transportation services for which payment has been made. However, all the exports by KIM TIN Trading Co., Ltd were that of subject goods produced by KIM TIN JSC. Exports sales to India by both these related companies are independent to each other.
55. The export sales of Kim Tim JSC and are on CFR/FOB/CNF basis and are on TT or LC at sight terms. For direct sales no commission has been paid and there is no difference in packing condition of domestic and export sales. The Company has provided information on expenses towards inland transportation and Ocean Freight, Port handling charges, credit expenses and bank charges, wherever applicable for adjustment to arrive at ex- factory export price.
56. As far as export sales of KIM TIN Trading Co is concerned, they are also on FOB/CNF basis and are on TT/ LC/LC at sight terms. The Company has provided information on expenses towards inland transportation and Ocean Freight, Port handling charges and bank charges, and credit expenses, wherever applicable for adjustment to arrive at ex- factory export price.
57. In its post disclosure comments, this producing exporter has argued that they had claimed inland freight adjustment on notional basis in both domestic as well as export sales. Therefore, the Authority should disregard inland transportation cost for export transactions also to ensure parity in treatment of inland freight qua domestic selling price and export price. In this regard the Authority notes that while all domestic sales are through the trading Company the exports are partly direct and partly through the trading company, i.e. KTT, for which JSC has paid for the transport cost up to the port to KTT. This actual payment made in case of exports sales transactions have been adjusted from the export price and therefore, there is no disparity in the determination methodology, as has been argued.
58. Accordingly, the export prices of this producer- exporter combination have been determined as follows:

	Sum of Quantity CBM	Sum of Net Value US\$	Weighted average EP US\$/CBM
KIM TIM JSC	***	***	***
KIM TIM Trading	***	***	***



**Dumping Margin**

59. The weighted average Normal Value, so determined has been compared with the weighted average net export prices at the same level to arrive at the dumping margins as follows:

Exporter	Weighted average Normal Value US\$/CBM	Weighted average Export price US\$/CBM	DM US\$/CBM	DM %
KIM TIM JSC	***	***	***	0-10%
KIM TIM Trading	***	***	***	0-10%

**(b) M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam**

60. M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, a Joint stock company between Dongwha Vina Co. Ltd., Hong Kong, Dongwha Hong Kong International Ltd and Vietnam Rubber Group (VRG), has filed its questionnaire response in this case. On the basis of the questionnaire response filed, the Company was asked to provide additional information, which was submitted. The company has a modern and automated plant which went into commercial production in May 2012 only with an annual capacity of [\*\*\*] CBMs. During the POI the Company sold [\*\*\*] CBMs of the subject goods out of which [\*\*\*] CBMs were sold in the domestic market and [\*\*\*] CBMs were exported to India. A small quantity of [\*\*\*] CBMs was also exported to other countries. The company directly sells the goods in the domestic as well as export markets. The data submitted by this producing exporter was verified through an on-spot verification to the extent possible. Accordingly, normal value and export price of this producing exporter has been determined based on the verified data as follows:

**Normal Value**

61. It was noted that the Company sold total quantity of [\*\*\*] CBMs of the subject goods in the domestic market during the POI covering various thicknesses. On the basis of the thicknesses and the emission standards the producing exporter has defined its product into different product types and [\*\*\*] product types have been sold in the domestic market whereas [\*\*\*] product types were exported to India. The exporter has argued that for the purpose of fair comparison the domestic sales transactions of the [\*\*\*] product types exported to India only should be considered and Normal value should be determined based on those sales transactions only. However, as noted earlier the Authority finds weighted average to weighted average comparison method more appropriate in this case.
62. Average cost of production of the subject goods manufactured by the producing exporter was determined based on the verified cost data and additional information called for from the producer as US\$[\*\*\*] / CBM. Small quantity of off-spec material sold in the domestic market at very low price has been removed and remaining domestic sales transactions were subjected to OCT test on the basis of the verified average cost of production as maintained by the company for the product as a whole. It was noted that [\*\*\*] % of the domestic sales are profitable sales. Therefore, for the purpose of determination of normal value all domestic sales, except the off-spec material sold at very low prices, have been considered for determination of normal value.
63. The domestic sales are to unaffiliated end users as well as local distributors/traders on door delivery basis and on various payment terms. Accordingly, the producer/exporter has claimed adjustments on account of domestic transportation, credit cost where credit period is involved and bank charges wherever, the payment is negotiated through the bank. Since there is no difference in packing for the domestic sales and export sales no packing cost adjustment is applicable. Accordingly, average ex-works normal value for this producing exporter works out as under:

Domestic sales Quantity CBM	Sum of Net Invoice Value US\$	Sum of Net Value Realised US\$	Weighted Average NV US\$/CBM
***	***	***	***

**Export Price**

64. During the POI the Company sold [\*\*\*] CBMs of the subject goods to India against [\*\*\*] transactions. The exports to India are to unaffiliated end users on FOB or CFR terms. The payment terms for exports to India were L/C with usance period/Sight LCs/TT payments. For all sales made to India on CFR basis, the expenses upto the CFR stage have been borne by the exporter and all expenses post-CFR are borne by the importer. Similarly, in case of FOB sales, all expenses upto the FOB stage are borne by the exporter and remaining expenses by the importer. The company has provided details of the expenses for adjustments on account of Inland Freight, Overseas Transportation, Commission, Packing Charges, Credit Cost and Bank Charges for adjustment to arrive at weighted average ex works export price. In its post disclosure submissions, the exporter has submitted that the verified interest rate as provided by them should have been used for the adjustments to the export price. This has been accepted and the credit cost has been corrected accordingly. The exporter has also disputed the bank charges adjusted from the export price. In this connection it is noted that the total bank charges paid by the Company has been adjusted only against the transactions negotiated through the bank and not against all transactions.

65. Accordingly average ex-works export price of this producing exporter works out as follows:

Row Labels	Sum of Quantity	Sum of Net Invoice Value (US\$)	Sum of Revised Ex-Factory Value US\$	Weighted average EP US\$/CBM
<b>Grand Total</b>	***	***	***	***

**Dumping Margin**

66. The weighted average Normal Value, so determined has been compared with the weighted average net export price at the same level to arrive at the dumping margins as follows:

	US\$/CBM
Weighted Average NV	***
Weighted Average EP	***
Dumping Margin	***
DM %	5-15%

**(c) MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company**

67. M/s MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company, a wholly owned Government of Vietnam Company, has filed the questionnaire response as a producer and exporter of the subject goods. Majority shareholding in the company is owned by Vietnam Rubber Group (\*\*\*%), a Govt of Vietnam Co. This company produces and sells the subject goods in the domestic market as well as in the export market and has filed a detailed questionnaire response. On the basis of the questionnaire response filed, this producing exporter was asked to provide additional information, which was submitted. The data submitted by them was also verified through an on-spot investigation carried out in Vietnam to the extent necessary and possible. Accordingly, normal value and export prices of this Company have been determined based on the verified data as follows:

**Normal Value**

68. The company sold [\*\*\*] CBMs of the subject goods of various thicknesses and emission standards during the period of investigation against [\*\*\*] transactions. The domestic sales are in sufficient volume. The sales are to unaffiliated traders and end users on ex-factory or delivered basis with payment terms as cash or credit of varying days. Average cost of production of the producer was determined based on the verified cost data and additional information called for from the producer as US\$[ \*\*\*] / CBM. The Authority notes that certain quantity of off-spec material has been sold in the domestic market. However, the exporter, in its post disclosure comments, has pointed out certain error in exclusion of off-spec material which has been taken into consideration and only those transactions identified as off-spec materials have been removed and remaining domestic sales transactions were subjected to ordinary course of trade test against

the above verified average cost of production as per the records of the Company. Only [\*\*\*] % of the domestic sales were found to be profitable. Accordingly, only the profitable domestic sale transactions have been considered for determination of the normal value of this producing exporter. The company has provided the details of expenses towards discounts, inland transportation and credit cost on the domestic sales transactions, wherever applicable, for adjustment to the export price to arrive at ex-works export price. Accordingly, net weighted average ex-works normal value works out as under:

Row Labels	Sum of Quantity (cbm)	Sum of Adjusted Ex-Factory Value USD	Weighted average NV US\$/CBM
Profitable sales	***	***	***

#### Export Price

69. During the POI this producing exporter exported [\*\*\*] CBMs of the subject goods to India against [\*\*\*] transactions. The export transactions to India are to unrelated traders on FOB/CFR basis and TT/LC terms. The company has provided information for adjustment to export transactions on account of ocean freight, wherever applicable, inland freight, customs handling & clearance charges, credit cost, commission and bank charges for adjusting the export price to ex-works level. The responding exporter has pointed out certain difference in the Commission amount in determination of the export price which has been corrected. On the basis of this information net weighted average ex-works export price of this producing exporter works out as under:

Quantity (CBM)	Net Invoice Value	Ex-Factory Value Realised US\$	Net EP US\$/CBM
***	***	***	***

#### Dumping Margin

70. The weighted average Normal Value, so determined has been compared with the net weighted average export price at the same level to arrive at the dumping margins as follows:

		US\$/CBM
Weighted Average NV	US\$/CBM	***
Weighted Average EP	US\$/CBM	***
DM	US\$/CBM	***
DM	%	5-15%

#### (d) All Other exporters in Vietnam

71. For all other non-cooperating producers and exporters in Vietnam the normal value, export price and dumping margin have been determined on facts available basis taking into account the data of the co-operating exporter as follows:

Weighted Average NV	US\$/CBM	***
Weighted Average EP	US\$/CBM	***
DM	US\$/CBM	***
DM %		30-40%

#### Indonesia

##### (a) M/s. PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia

72. M/s. PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia is a major manufacturer of the MDF and HDF in Indonesia. The company is a private limited foreign invested company incorporated under the Company laws of Indonesia. Majority of the shares of the Company are held by two foreign investment companies. During the POI this producing exporter sold [\*\*\*] CBMs of the subject goods out of which [\*\*\*] CBMs were sold in the domestic market, [\*\*\*] CBMs were

exported to India and [\*\*\*] CBMs were exported to other countries. This Company has filed its questionnaire response as a producing exporter of the subject goods in Indonesia. Supplementary information was sought from this Companies wherever required and the same has been provided. The data submitted by this producing exporter was verified through an on-sight verification to the extent possible and the verified data has been used for this determination.

### Normal Value

73. During the period of investigation, the Company sold [\*\*\*] CBM of the subject goods of various thicknesses and emission standards in the domestic market and the sales were to unrelated customers (end users as well as re-sellers) in Indonesia. All sales in domestic market were sold on delivered basis except only [\*\*\*] CBM which were sold at Ex-factory level. Average cost of production of the producer was determined based on the verified cost data and additional information called for from the producer as US\$[\*\*\*] / CBM. The Company has not sold any off-spec material in the domestic material. The domestic sales transactions were subjected to ordinary course of trade test against the above verified average cost of production as per the records of the Company. [\*\*\*] % of the domestic sales were found to be profitable. Accordingly, all domestic sales transactions have been considered for determination of normal value. The Company does not incur any other expense except the transport cost in the domestic sales. The sales are on cash basis with \*\*\* day's credit for which the Company has claimed credit cost adjustment. There is no difference in packing condition between domestic and export sales. Accordingly, average ex-works normal value for this producing exporter has been determined as follows:

Sum of profitable sales CBM	Sum of Net Invoice Value in IDR	Sum of Net Ex-works Value IDR	Ex-Works Price IDR/CBM	Weighted average NV US\$/CBM
***	***	***	***	***

### Export Price

74. During the POI the Company exported [\*\*\*] CBMs of the subject goods of various thicknesses and emission standards to India. Out of this [\*\*\*] CBMs were exported by them directly and rest was exported through 2 Singapore based trading Companies. [\*\*\*] CBMs were exported through M/s. Naolin Enterprise Pte Ltd., Singapore and [\*\*\*] CBMs were exported through M/s Itochu Singapore Pte Ltd., Singapore. These two Companies have filed their sales details with the Authority.
75. The export sales to India are to both end users and resellers and on CFR/CNF basis with payment terms as Sight LC/TT with \*\*\* day's credit. The company has provided information for adjustments towards inland transportation, ocean freight, Commission and bank charges. Accordingly, net weighted average ex-works export price of this producing exporter has been determined as follows:

Sum of Quantity	Sum of Net Invoice Value US\$	Sum of Total Adjustment US\$	Sum of Net Value US\$	Weighted average EP US\$/CBM
***	***	***	***	***

### Dumping Margin

76. The weighted average Normal Value, so determined has been compared with the weighted average net export price at the same level to arrive at the dumping margins as follows:

Weighted average NV	US\$/CBM	***
Weighted average EP	US\$/CBM	***
Dumping Margin	US\$/CBM	***
Dumping Margin %		20-30%

77. In its post disclosure submissions this exporter has argued that their credit period in domestic sales should have been taken as \*\*\* days and in case of export sales credit period should have been taken as \*\*\* days. In this connection it is noted that the credit period adjustments are based on verified data as already communicated in the verification report. As regards certain post sales claim expenses as submitted by them during the verification the Authority notes that these claims were not a part of their original claims and were presented during the verification only which could not be verified. Therefore, this claim has not been accepted. Accordingly, the Authority confirms the above determination.

**(b) PT Hijau Lestari Raya Fibreboard**

78. PT Hijau Lestari Raya Fibreboard is a foreign invested joint venture between M/s Evergreen Fibreboard Berhard from Malaysia and PT Hutrindo Jaya Fibreboard Mfg. Co. & PT Uforin Prajen Adhesive Industry from Indonesia and incorporated as a private limited company in Indonesia. Evergreen is a major producer of MDF in Malaysia and has related companies namely M/s Evergreen Fibreboard (Nilai) Sdn Bhd, Malaysia and M/s Siam Fibreboard Company Limited, Thailand, who also produce and export the subject goods from the respective countries. Exports of this Company from those countries are already attracting antidumping duty.
79. This producing exporter sold [\*\*\*] CBMs of subject goods in the POI out of which [\*\*\*] CBMs were sold in the domestic market, [\*\*\*] CBMs was exported to India and [\*\*\*] CBMs was exported to other countries. Supplementary information was sought from this Companies wherever required and the same has been provided. The data submitted by this producing exporter was verified through an on-sight verification to the extent possible and the verified data has been used for this determination.

**Normal Value**

80. The company had sold [\*\*\*] CBM s of the subject goods of various thicknesses and emission standards against [\*\*\*] transactions in the period of investigation to unrelated customers in the domestic market. All sales are to the domestic traders/resellers on delivered basis and the payment terms are either on TT (advance payment) or TT with \*\*\*days credit. Average cost of production of the producer was determined based on the verified cost data and additional information called for from the producer as US\$[\*\*\*] / CBM. In its post disclosure submissions this exporter has pointed out certain errors in exclusion of the off-spec material sold in the domestic market. The exporter has already identified the off-spec material in the appendix-1 itself. Therefore, only those transactions have been removed and the remaining domestic sales transactions were subjected to ordinary course of trade test against the above verified average cost of production as per the records of the Company [\*\*\*] % of the domestic sales were found to be profitable. Accordingly, all domestic sales, except the off-spec sales, have been considered for determination of normal value for this producing exporter. The Company has provided details of direct selling expenses towards transportation expenses, credit costs and marketing fee paid to M/s Evergreen, Malaysia for providing logistic and marketing services to the producing exporter. Accordingly, net average ex-works normal value has been determined as follows:

<b>Profitable sales Quantity (M3)</b>	<b>Sum of Adjusted Ex- factory Normal Value (USD)</b>	<b>Weighted average NV US\$/CBM</b>
***	***	***

**Export Price**

81. This producing exporter has exported [\*\*\*] CBMs of the subject goods of various thicknesses and emission standards to India against [\*\*\*] transactions. The export sales to India are to end users as well as resellers in India on CFR basis and the terms of payment are either LC or TT with different credit period. The exporter had provided information for adjustment for ocean freight, bank charges, Commission and bank charges, customs handling, clearance and local transportation cost and credit cost based on number of days of credit. During the verification, it was also noticed that the packing used for exports to India and for the domestic market is different. The details indicating the cost of differential packing for exports was also provided by the producing exporter. Accordingly, average net ex-works export price of this producing exporter has been determined as follows:

Sum of Quantity	Sum of Net Invoice Value (USD) VAT Excluded	Sum of Ex-factory Export Price (USD)	Net EP US\$/CBM
***	***	***	***

### Dumping Margin

82. The weighted average Normal Value, so determined has been compared with the weighted average net export price at the same level to arrive at the dumping margins as follows:

Weighted Average NV	US\$/CBM	***
Weighted Average EP	US\$/CBM	***
DM	US\$/CBM	***
DM %		<b>5-15%</b>

### (c) All other producers/exporters in Indonesia

83. For all other non-cooperating producers and exporters in Vietnam the normal value, export price and dumping margin have been determined on facts available basis taking into account the data of the cooperating exporter as follows:

Weighted Average NV	US\$/CBM	***
Weighted Average EP	US\$/CBM	***
DM	US\$/CBM	***
DM %		<b>60-70%</b>

### Dumping Margin Table

84. Based on the above determination the dumping margins of the producers and exporters from the subject countries work out as follows:

Country/Producer	Exporter	Normal Value (US\$)	Net Export Price (US\$)	Dumping Margin (US\$)	Dumping Margin %	Dumping Margin Range %
<b>Vietnam</b>						
M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	***	***	***	***	0-10%
	M/s Kim Tin Trading Co. Ltd.	***	***	***	***	0-10%

M/s. Dongwha Joint Company, Vietnam	VRG MDF Stock	M/s. Dongwha Joint Company, Vietnam	VRG MDF Stock	***	***	***	***	5-15%
MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company		MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company		***	***	***	***	5-15%
Any other than above				***	***	***	***	40-50%
<b>Indonesia</b>								
M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia		M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia		***	***	***	***	25-35%
PT Hijau Lestari Raya Fibreboard		PT Hijau Lestari Raya Fibreboard		***	***	***	***	5-15%
Any other than above				***	***	***	***	55-65%

85. The dumping margins determined as above are above *de minimis* level and significant except for M/s M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company where the dumping margin has been found to be *de minimis*.

## **H. Determination of Injury to the Domestic Industry**

### **H.1 Cumulative assessment of Injury**

86. Annexure II (iii) of the Anti-Dumping Rules provides that in case of imports of a product from more than one country being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, if it determines that:

(a) *The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;*

(b) *Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.*

87. The domestic industry, in its submissions, has argued that exporters from more than one country are dumping the subject goods in the Indian market and margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits

prescribed above. Quantum of imports from each of the above countries is more than *de-minimis* limits. Therefore, cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market. No other interested party has made any submission regarding the cumulative assessment of injury.

88. The Authority notes that this investigation has been initiated against alleged dumping of the subject goods from Vietnam and Indonesia. Determination of the margins of dumping in the previous section indicates that the margins of dumping for the subject goods from each of the countries mentioned herein above are more than the limits prescribed above. The volume of imports from each of the other subject countries is also more than the limits prescribed. CIF price range and the landed values at which the goods are being imported from the subject countries indicate a clear *inter se* competition between the imports from these sources in the Indian market. The imports from the subject countries are directly competing with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market. Domestic producer and exporters from the subject countries are selling the like product to the same category of customers and both are competing in the same market. Both are being used by the consumers interchangeably. In view of the above position the Authority holds that cumulative assessment of the effects of imports is appropriate in this case and accordingly, cumulative assessment of the effects of dumped imports from all dumped sources has been carried out to examine the injury and causal links.

## **H.2 General issues raised by the parties to the investigation with regard to Injury and Causal Links**

### **(a) Views of the opposing interested parties**

89. The opposing interested parties, in their various submissions have disputed the injury claims of the domestic industry and have *inter alia* argued as follows:
- i. That there is no injury to the domestic industry as there is no increase in imports. The capacity utilization has increased during injury period. The market share of the applicant domestic industry has been affected due to *inter se* competition with other domestic producers. It has been argued that the decline in capacity and production is because of strategic decisions of the applicants and not due to dumped imports;
  - ii. That there is no injury to domestic industry since Mangalam has become non-cooperative and there is no injury to Greenply on standalone basis;
  - iii. That there is no price depression and suppression and the volume parameters show increase in sales. The injury related to profitability, cash flow and ROCE is due to the conscious decision of the applicants to increase production of non subject goods in the same plant,
  - iv. That although notional excise duty benefit has been considered to demonstrate injury for one of the domestic producers, the injury analysis is required to be done based on actual numbers.
  - v. That Greenply shows inflated picture of injury by claiming reduction of excise duty on notional basis from NSR and at the same time keeping the excise duty paid on raw material in cost. Therefore, excise duty benefit adjustments should be rejected as was done during previous sunset review investigation relating to the same product under consideration.
  - vi. Any injury to Mangalam Timber is due to plant shut down for maintenance, increase in raw material prices, power and fuel and transportation costs, power supply issues, wood supply issues, and political unrest in Seemandhra and not due to alleged dumping from subject countries. The increase in cost is also due to other reasons.
  - vii. The decline in production is due to serious slowdown in commercial sector as is evident from the annual report;



- viii. The selling price cannot be completely different from average of 100 to 121 (indexed) as shown in annual report. There is no price pressure on Greenply. There is substantial increase in sales realization of Greenply and market share of Indian industry by period of investigation.
- ix. The best estimates show increase in profitability of Greenply. The growth has been outstanding. Therefore, the profitability in proforma IV A is not a true reflection of the actual scenario.
- x. There is significant growth in sales revenue of Greenply in injury period except in 2013-14.
- xi. There is no injury on account of new plant of MDF at Chittoor district of Andhra Pradesh.
- xii. The annual report of Rushil shows significant profits contrary to injury submissions.
- xiii. The market share of Indian industry shows an increase from 63% in the base year to 72% in the POI, while total imports in India have declined from 37% to 28% during the same period.
- xiv. There is no causal link as imports from New Zealand are above *de minimis*, there is decline in demand, decline in productivity, there is no analysis of taking over of share of domestic industry by other domestic producers and decline in market share of imports and the increase in prices of domestic industry is more than increase in cost.

**(b) Views of the Domestic Industry**

90. The domestic industry, in its submission has *inter alia* argued:

- i. That the imports from the subject countries have increased substantially in absolute terms as well as in relation to total imports into the country, production and demand in India.
- ii. That the dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry to a significant extent and also underselling the goods sold by the domestic industry.
- iii. Performance of the domestic industry first improved and then deteriorated in respect of production, sales and capacity utilization. Inventories have increased to a very significant extent and the domestic industry continues to suffer financial losses.
- iv. That one of the petitioner companies has exemption from excise duty. Since the company has exemption from payment of excise duty, selling price, profit/loss, cash profits, return on investment, price undercutting and injury margin should be determined after adjusting the same for the excise duty unpaid by the company. This is for the reason that the Designated Authority does entire determination without considering the excise duty. Further, the Designated Authority adds notional customs duty on the imports, regardless of whether or not the same was paid. Therefore, it would be not only necessary but also appropriate to reduce the excise duty payable for the present purpose.
- v. That merely because injury analysis is conducted on the basis of actual numbers does not imply that the excise duty benefit should be excluded. In fact, in all other investigations, the Authority excludes excise duty. If authority could exclude excise duty in those investigations and yet it is tantamount to adopting actual information, there is no justification to contend that exclusion of excise duty would tantamount to not adopting actual information.
- vi. That on standalone basis also Greenply suffers injury. It cannot be the case that if the performance of the domestic industry has been adverse on account of other factors, the same should be segregated and if the performance of domestic industry is better on account of some factors the same should not be segregated.

- vii. That the authority has been adding customs duty on CIF import price to determine landed price of imports- regardless of whether the imports were duty free or duty paid. There is quite a possibility that the imports were duty free. Yet, since the purpose of present investigation is to determine the injury to domestic industry in respect of dumping from subject countries, it is obvious that the Designated Authority is required to examine injury to the domestic industry for the product under consideration and in respect of domestic operations and after segregating effects of other factors- whether positive or negative.
- viii. That Mangalam is not a part of domestic industry anymore and therefore the analysis of the company performance is irrelevant at this stage. Further, the factors, such as input price increases, fall in the category of “whether the imports are preventing the price increases” and not in the category of “other factors” as is alleged by the interested parties.
- ix. That Greenply has commenced commercial production almost in the base year of this investigation and therefore, the increase in production is a consequence of new plant commencing production. The fact however is that the company had to curtail production of the product under consideration and divert the capacities to other product due to dumping of the subject goods into the Country.
- x. That with regard to the arguments of the interested parties that decline in production being due to serious slowdown it may be seen that increase in imports in such situations is aggravating the position. The issue of decline in demand and its impact on injury is by now well established in various investigations conducted by the authority;
- xi. That decline in losses of Greenply is a natural consequence as the company has commenced production almost in the base year of this investigation. Further, the profits due to excise duty need to be segregated in order to arrive at the performance of the domestic industry because of imports.
- xii. That as regards the new plant of MDF at Chittoor it is submitted that the plant is grossly underutilized. Further the inventories with Greenply have dramatically increased.
- xiii. That Rushil’s plant is grossly underutilized and inventories with the company have dramatically increased.
- xiv. That the situation of market share of the domestic industry reflects adverse impact of the dumped imports.
- xv. The injury to the domestic industry has not been caused by other factors.

**(c) Post disclosure comments of the interested parties and examination thereof**

91. The interested parties, in their post disclosure submissions, have essentially re-iterated most of their arguments and have made some observations on the injury and causal link examination as given in the disclosure statement. Those issues have been examined and addressed in this finding to the extent they are relevant and substantiated.

**(i) Views of the opposing interested parties**

92. In their post disclosure submissions, the interested parties have *inter alia* argued the following:

- That when the dumped prices, at positive price undercutting levels, have not been creating any price suppression or depression effect in the domestic market, dumped imports couldn’t have made any adverse impact on the performance of the domestic industry and any injury on account of such imports is unimaginable and failure of causal link is very imminent. It has been further argued that the performance of the Domestic Industry has improved over the years as can be seen from the profitability situation alone.
- That injury is always analyzed on actual data and not on notional adjustments. Therefore, adjustment in the selling price on account of the notional figure of the excise duty benefit should not be considered for the purpose of analyzing injury. It has been further argued that this is legally not tenable as the basis of analysis is not affected whether it is a case of likelihood or actual injury.

- That the words used in the above Para (iv) of the Annexure II are 'natural and potential'. It indicates that the injury analysis is to be undertaken for the aforesaid injury factors in terms of their natural and potential decline in the injury investigation period as a result of alleged dumped imports from the subject countries but not otherwise.
- That there is no volume injury to the domestic industry as their sales, production, capacity, capacity utilization, market share all have increased significantly over the injury investigation period. With regard to price effect, it has been argued that the same is to be seen only on the basis of M/s Greenply, after including the excise benefit. It will indicate that there is no injury with regard to price factor.

**(ii) Views of the Domestic industry**

93. Without repeating the views of the domestic industry, its post disclosure submissions with regard to injury and causal links, have been summarised as follows:

- a. That the imports from the subject countries have increased substantially in absolute terms as well as in relation to total imports into the country, production and demand in India. The dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry to a significant extent and also underselling the goods sold by the domestic industry.
- b. That the performance of the domestic industry first improved and then deteriorated in respect of production, sales and capacity utilization. Inventories have increased to a very significant extent and the domestic industry continues to suffer financial losses.
- c. That since one of the petitioner companies has exemption from excise duty its selling price, profit/loss, cash profits, return on investment, price undercutting and injury margin should be determined after adjusting the same for the excise duty unpaid by the company. This is for the reason that the Designated Authority does entire determination without considering the excise duty. Further, the Designated Authority adds notional customs duty on the imports, regardless of whether or not the same was paid. Therefore, it would be not only necessary but also appropriate to reduce the excise duty payable for the present purpose.
- d. That merely because injury analysis is conducted on the basis of actual numbers does not imply that the excise duty exemption benefit should be excluded. In fact, in all other investigations, the Authority excludes excise duty. If authority could exclude excise duty in those investigations and yet it is tantamount to adopting actual information, there is no justification to contend that exclusion of excise duty would tantamount to not adopting actual information.
- e. That on standalone basis also M/s Greenply suffered injury. It cannot be the case that if the performance of the domestic industry has been adverse on account of other factors, the same should be segregated and if the performance of domestic industry is better on account of some factors the same should not be segregated.
- f. That the authority has been adding customs duty on CIF import price to determine landed price of imports- regardless of whether the imports were duty free or duty paid. There is quite a possibility that the imports were duty free. Yet, since the purpose of present investigation is to determine the injury to domestic industry in respect of dumping from subject countries, it is obvious that the Designated Authority is required to examine injury to the domestic industry for the product under consideration and in respect of domestic operations and after segregating effects of other factors- whether positive or negative.
- g. That M/s Mangalam is not a part of domestic industry anymore and therefore, the analysis of the company performance is irrelevant at this stage. Further, the factors, such as input price increases, fall in the category of "whether the imports are preventing the price increases" and not in the category of "other factors" as is alleged by the interested parties.
- h. That the Non-Injurious price determined by the Authority is too low and grossly inadequate. There is no legal basis for exclusion of advertisement expenses as Annexure III does not provide for the same. Annexure III and

principles of fair comparison in any case cannot be selectively applied while comparing landed price of imports and NIP of the domestic industry.

- i. That the Authority must consider actual raw material and utilities consumption in this case. When wood specifications itself are not standard, it's consumption cannot be compared either over the years or within the year. The prices also vary as per water/moisture content in the wood. The difference in consumption is a bona fide difference arising out of moisture content in the wood.
- j. That the Authority is required to determine actual cost of production and not a notional lower cost of production for determining the price which can be compared with the import price in order to assess the injury margin. The decline in capacity utilization even after production shifting is due to dumping and not other factors.
- k. That in a fresh case actual and potential impacts of dumped imports are required to be considered and therefore, examination of the authority in this regard are appropriate. The potential growth of the domestic industry in the scenario of lapse of excise duty exemption would be significantly negative.
- l. That in the present case a combination form of duty in US\$ term should be applied to serve the purpose for which anti-dumping is imposed and to not render the duty imposed a futile exercise. Such a form of duty shall address the intensified dumping and likely manipulation of prices by traders. Benchmark form of duty can easily be abused in India by resorting to over invoicing of the import prices. It has been argued that this form of duty is in vogue in certain jurisdictions where the duty is imposed as a combination of the import price determined (Landed value) as the bench mark + the margin of dumping or injury whichever is lower. Guidelines in such jurisdictions indicates that a combination duty is suitable in case where there is a likelihood of price manipulation because of complex related party company structures or a proven case of price manipulation. The domestic industry argues that this form of duty is appropriate in the present case.

**(d) Examination of issues by the Authority**

94. The Authority has taken note of various submissions of the interested parties on the injury and causal link claims of the domestic industry. The information submitted by the domestic industry and other interested parties have been examined with regard to the relevant provisions of the Rules in relevant part in this disclosure. However, some of the specific issues raised have been addressed hereunder.
95. As regards the issue of non-participation of one of the original applicants i.e., M/s Mangalam Timber and substitution by Rushil the issue has already been addressed in the previous section. Relevant injury parameters of the domestic industry consisting of Greenply and Rushil have been made available to the interested parties. Therefore, no prejudice has been caused to any interested party in this regard.
96. As regards the issue of exclusion of excise duty benefit to one of the petitioners is concerned, the Authority notes that in the previous finding in Sunset review investigation concluded in August 2015 the issue was examined and it was noted by the Authority as follows:

*“As far as the issue raised by the domestic industry that the selling price of the applicant domestic industry Greenply should be reduced by quantum of excise duty payable and thereafter determine profits, the Authority has computed the NSR and profitability of the domestic industry on actual basis as reflected in their audited accounts relating to the POI. The Authority is further of the view that the actual NSR and profit are only relevant and not the notional one as contended by the domestic industry.”*

97. However, the issue has been raised by the domestic industry again. It has been contended that Greenply was eligible for excise duty exemption because of the locational disadvantage of the unit located in Uttarakhand for a limited period and the same is due for expiry in 2017 as per the information provided by the Company. The effect of the exemption of the excise duty is that it provides a price cushion to the producer to the extent of the excise duty exempted. Had the excise duty been payable the price would have been reduced by that extent to remain competitive in the market. Therefore, the argument of the domestic industry is that the price situation and profitability should be examined

notionally adjusting the excise duty as if it was paid during the period of investigation and then see whether the industry would be earning profit, if the duty was actually payable. This appears to be arising from the fact that the duty exemption is temporary and the situation would dramatically change when the excise duty exemption expires in the near future.

98. The Authority notes that earlier decision of the Authority as quoted above was in the context of a sunset review where the likely impact of the dumped imports in the scenario of withdrawal of the exemption was examined. The exemption granted to the unit is temporary in nature and is set to expire sooner or later. Therefore, there is a need to examine the potential impact of the dumped imports on the conditions of the domestic industry in such a situation. Accordingly, in the factual matrix of the case both actual and potential scenarios have been examined in this injury examination.
99. The opposing interested parties have argued that injury is always analyzed on actual data and not on notional adjustments. The Authority notes that the mandate in a material injury analysis is to examine the 'actual' as well as 'potential' impact of dumped imports on various economic parameters of the domestic industry. The potential impact can only be analyzed based on certain foreseeable situations. In that context only potential impact of the dumped imports has been examined alongside the actual determinations of injury based on the current state of the domestic industry as it exists today. The potential impact of dumped imports, that may arise from the likely scenario of the excise exemption available to one of the units being withdrawn in the foreseeable future, has also been examined. Therefore, the arguments of the opposing interested parties in this regard are not valid.
100. As regards the arguments of the domestic industry regarding the determination of cost of production and non-injurious price, the Authority notes that the determinations are based on the information filed by the domestic producers and as per the consistent practice of the Authority.
101. As far as the form of duty as contended by the domestic industry is concerned, the Authority notes that a new form of duty as a combination of bench mark duty and fixed duty has been proposed by the domestic industry at this late stage. While there may be merit in this argument as this form of duty is being used by certain Authorities, this Authority has not got the benefit of the comments of other interested parties on the proposed form of duty. Further, this requires a detail examination before a policy decision is taken in this regard. Therefore, the Authority is not in a position to accept the arguments of the domestic industry in this regard at this late stage.
102. Other issues raised by the interested parties and the domestic industry, with regard to various injury parameters, have been addressed in the relevant parts in this finding.

### H.3 Examination of Injury and Causal Links

103. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure II provides that *the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.*
104. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between dumping and injury, if any. The Authority has examined injury to the domestic industry by considering information relating to M/s Greenply Industries Limited and M/s Rushil Décor, who constitute the domestic industry under the Rules.
105. In accordance with the Rules all economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above have been examined as under

**(a) Volume effects of dumped imports and impact on domestic industry****i. Import Volumes of dumped imports**

106. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. As noted earlier transaction-wise import data as reported in DGCI&S data has been used for this determination. As per this data the imports of the subject goods during the injury investigation are as follows:

<b>Imports Volume</b>	<b>Unit</b>	<b>2011-12</b>	<b>2012-13</b>	<b>2013-14</b>	<b>POI</b>
Indonesia	CBM	13,761	15,055	17,654	16,380
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>128</i>	<i>119</i>
Vietnam	CBM	9,122	31,510	45,193	45,386
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>345</i>	<i>495</i>	<i>498</i>
Total Subject Countries	CBM	22,883	46,564	62,847	61,766
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>203</i>	<i>275</i>	<i>270</i>
Countries attracting ADD	CBM	59,382	52,432	35,802	12,536
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>88</i>	<i>60</i>	<i>21</i>
Other Countries	CBM	10,866	17,455	28,497	36,342
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>161</i>	<i>262</i>	<i>334</i>
<b>Total Imports</b>	<b>CBM</b>	<b>93,131</b>	<b>1,16,452</b>	<b>1,27,146</b>	<b>1,10,644</b>
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>125</i>	<i>137</i>	<i>119</i>

\*POI: Oct'13- Sept'14

107. The above data indicates that while total volume of imports have increased by about 19%, the imports from the subject countries have increased by about 170% and imports from Vietnam has increased by about 400% compared to the base year. The increase in volume of dumped imports is significantly high during the injury investigation period. The data indicates that after imposition of antidumping duties on one set of countries the dumped imports from the subject countries have increased significantly nullifying the benefit of protection from the dumped imports from those countries.

**ii. Share of dumped imports**

108. The share of dumped imports in total imports is as follows:

<b>Particulars</b>	<b>Unit</b>	<b>2011-12</b>	<b>2012-13</b>	<b>2013-14</b>	<b>POI</b>
Imports Volume					
Indonesia	%	14.78	12.93	13.88	14.80
Vietnam	%	9.80	27.06	35.54	41.02
Total Subject Countries	%	24.57	39.99	49.43	55.82
Countries attracting ADD	%	63.76	45.02	28.16	11.33
Other Country	%	11.67	14.99	22.41	32.85
<b>Total Imports</b>	<b>%</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>

109. The above data indicates that the share of the dumped imports from the subject countries has increased significantly from about 25% of total imports to over 55% in the POI replacing the share of the countries already attracting antidumping duty. The share of Vietnam has gone up from less than 10% to over 40% of total imports.

**iii. Assessment of Demand/Apparent Consumption**

110. Demand or apparent consumption of the product in India has been estimated as the sum of domestic sales of the petitioners and imports from all sources. The demand so assessed is as follows:

Particular	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Sales of Domestic Industry	CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>139</i>	<i>161</i>	<i>156</i>
Sales of Other Indian Producer	CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>94</i>	<i>162</i>	<i>180</i>
Total Imports	CBM	93,131	1,16,452	1,27,146	1,10,644
Trend	Indexed	100	125	137	119
<b>Demand in India</b>	<b>CBM</b>	<b>2,38,240</b>	<b>2,89,769</b>	<b>3,61,172</b>	<b>3,52,118</b>
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>122</i>	<i>152</i>	<i>148</i>

111. The above data indicates that there is a healthy growth in demand for the product which increased by about 52% till 2013-14 before marginally declining during the POI. Though total imports have not increased in that proportion, apparently because of the antidumping duty against some of the major exporting countries, the imports from the subject countries far exceed the demand growth and have increased by about 170% during the injury investigation period.

**iv. Market Share**

112. Market share of various players in the domestic market as analysed below shows that the market-share of the domestic industry increased significantly in 2012-13 and thereafter declined, whereas the share of the dumped imports from the subject countries have almost doubled.

Particular	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Sales of Domestic Industry	%	***	***	***	***
Sales of Other Indian Producer	%	***	***	***	***
Total Imports	%	39.09	40.19	35.20	31.42
Dumped imports (Indonesia)	%	5.78	5.20	4.89	4.65
Dumped imports (Vietnam)	%	3.83	10.87	12.51	12.89
Total Subject Countries	%	9.61	16.07	17.40	17.54
Countries attracting ADD	%	24.93	18.09	9.91	3.56
Other Country	%	4.56	6.02	7.89	10.32
<b>Demand in India</b>	<b>%</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>

**(b) Price effect of dumped imports and impact on domestic industry**

113. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred to a significant degree.
114. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports of the subject goods from the subject countries has been examined with reference to price undercutting, price underselling, price suppression and price depression.

**i. Price undercutting effects of dumped imports**

115. For the purpose of price undercutting analysis the net sales realization (NSR) of the domestic industry is required to be compared with landed value of imports from the subject countries. While computing the net sales realization of the domestic industry all taxes, rebates, discounts and commissions are deducted and sales realization at ex-works level is determined for comparison with the landed value of the dumped imports from the subject countries.

116. As noted earlier the domestic industry has argued that in order to analyse the price effect of dumped imports on the domestic prices and the profitability of the domestic industry the notional excise duty foregone (excise duty exemption benefit availed) by Greenply should be adjusted from the net sales realization. This is apparently on the premise that had the excise duty been payable by this company its net sales realization would have been less by the excise duty payable and that would have significantly affected its profitability. The argument is that this being a temporary exemption granted to the unit under a specific scheme the benefit should not be taken into account for working out its profitability etc. as the unit has to compete in the open market once the exemption is withdrawn.
117. In the recently concluded Sunset Review the Authority decided to go by the books of account and since the notional excise duty was not booked in the books of accounts of the Company it was not considered for adjustment. However, this being a fresh investigation, actual and potential impacts of the dumped imports has been examined as per the relevant provisions of the Rules. Therefore, both the scenarios, i.e., price impact with the actual NSR and NSR taking into account the excise exemption have been examined to see the actual and potential impact once the exemption is withdrawn.

### Actual Undercutting

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Selling price of DI (with excise exemption)	Rs./CBM	***	***	***	***
<b>Indonesia</b>					
Landed Value	Rs./CBM	14,519	16,910	16,355	16,572
Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	20-30%	20-30%	20-30%	20-30%
<b>Vietnam</b>					
Landed Value	Rs./CBM	13,362	15,750	16,468	16,683
Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	25-35%	25-35%	20-30%	20-30%
<b>Subject Countries</b>					
Landed Price	Rs./CBM	14,058	16,125	16,436	16,654
Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	25-35%	25-35%	20-30%	20-30%

### Potential Undercutting

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Selling price of DI (without excise exemption)	Rs./CBM	***	***	***	***
<b>Indonesia</b>					
Landed Price	Rs./CBM	14,519	16,910	16,355	16,572
Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	10-20%	10-20%	10-20%	10-20%
<b>Vietnam</b>					
Landed Price	Rs./CBM	13,362	15,750	16,468	16,683
Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	15-25%	15-25%	10-20%	10-20%
<b>Subject Countries</b>					
Landed Price	Rs./CBM	14,058	16,125	16,436	16,654



Price undercutting	Rs./CBM	***	***	***	***
Price undercutting	%	15-25%	15-25%	10-20%	10-20%

118. The above data shows that at the current prices the dumped imports are significantly undercutting the domestic selling prices. Once the excise exemption is withdrawn for Greenply weighted average sales realization of the domestic industry is likely to fall to the extent of excise duty payable on order to remain competitive in the domestic market and in that scenario also the dumped imports will be undercutting the prices of the domestic industry significantly.

## ii. Price suppression/depression

119. As noted above, price suppression/depression effects of the dumped imports have also been examined to see if the dumped imports have significantly suppressed or depressed the domestic prices. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices the trend of net sale realization of the domestic industry has been compared with the cost of production of the domestic industry and the landed price of the dumped imports. For this examination actual sales realization of the domestic industry has been compared with its cost of sales and landed value of imports as follows:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Cost of sales	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	99	96	96
Selling price	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	115	110	111
Landed Price of subject countries	Rs./CBM	14,058	16,125	16,436	16,654
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	115	117	118

120. The above data indicates that the cost of sales have declined marginally and the weighted average selling prices as well as weighted average landed values have increased during the injury period indicating no price suppression or depression in the domestic market. However, the data also shows a 4 basis point decline in the selling prices compared to the year 2012-13 indicating thereby that the improvement in price scenario achieved in 2012-13 after imposition of duty against certain countries have eroded since 2013-14 apparently due to dumping from the new sources.

## iii. Price underselling effects of dumped imports

121. For the purpose of examination of the price underselling effects the landed prices of imports from subject countries have been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the period of investigation (POI) in accordance with the norms prescribed in Annex-III to the Rules. Price underselling margins of dumped imports are as follows:

Particular	Unit	Indonesia	Vietnam
Non-Injurious Price (NIP)	Rs Per CBM	***	***
Landed Price	Rs Per CBM	16571.90	16683.15
Price Underselling	Rs Per CBM	***	***
Price Underselling	%	***	***
Price Underselling	% Range	15-25	15-25

122. The data indicates that the dumped imports are underselling in the domestic market and the underselling margins are significantly high.

## H.4 Examination of Economic parameters relating to the domestic industry

### (a) Actual and Potential Impact on Capacity, Production, Capacity utilization and Sales

123. The Authority notes that the capacities of the domestic producers/petitioners are not dedicated to the product under consideration. The petitioners produce both thick and thin MDF in the said plants. Therefore, the capacity and capacity

utilization of the plants have been considered for examination. However, production and sales of the product under consideration have also been examined separately. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volume of the domestic industry is given in the table below. The data indicates that total plant capacity and production of the petitioners increased since 2012-13 when M/s Rushil Décor came into production. However, plant utilization remains very low at about 70% after reaching a level of about 74% in 2012-13. The production and sales of the product under consideration has declined after increase up to 2013-14 by about 7% indicating thereby that there is some shift in production form the thick MDF to thin MDF and other products during this period. The domestic industry has argued that the industry is forced to shift production because of the price pressure in the PUC segment of the production. While the demand for the product under consideration increased the sales of the domestic industry declined during this period.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Capacity - Plant	CBM	1,80,000	2,31,000	2,70,000	2,70,000
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>128</i>	<i>150</i>	<i>150</i>
Production - Plant	CBM	1,14,626	1,69,914	1,91,482	1,92,268
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>148</i>	<i>167</i>	<i>168</i>
Capacity Utilization - Plant	%	63.68	73.56	70.92	71.21
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>111</i>	<i>112</i>
Production of the PUC	CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>148</i>	<i>160</i>	<i>153</i>
Sales of PUC	CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>139</i>	<i>161</i>	<i>156</i>

**(b) Actual potential impact on Market Share**

124. Market share of various players in the domestic market as analysed in the preceding paragraphs shows that the market-share of the domestic industry increased significantly in 2012-13 and thereafter declined whereas the share of the dumped imports from the subject countries have almost doubled.

**(c) Actual and Potential Impact on Profitability, Profits, return on investment and cash flow**

125. Cost of production and other associated costs, of the domestic industry as well as selling prices of the domestic industry have been assessed as per the standard accounting practices and the books of accounts of the company to examine the actual profit and losses of the Company during the injury investigation period. At the same time the potential impact of the dumped imports on the profitability has been examined taking into account the excise duty exemption being enjoyed by one of the constituents of domestic industry, which is stated to be due for expiry in the near future. Accordingly, actual and potential impacts on profitability, return on investment and cash-flow have been assessed as follows:

**Actual impact**

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Cost of sales	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>96</i>	<i>96</i>
Selling price (with excise exemption)	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>115</i>	<i>110</i>	<i>111</i>
Profit/( Loss)	Rs./CBM	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>(100)</i>	<i>76</i>	<i>54</i>	<i>60</i>
Profit/( Loss)	Rs.Lacs	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>(100)</i>	<i>106</i>	<i>86</i>	<i>93</i>
Cash Profit	Rs.Lacs	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>(100)</i>	<i>1,317</i>	<i>1,294</i>	<i>1,268</i>
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	631	591	569
ROCE	%	0-10%	5-15%	5-15%	5-15%
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	471	441	477

126. The above data indicates that the cost of subject goods has declined marginally and the selling prices after increasing till 2012-13 has again declined by 4 basis points in the POI. Accordingly, the profitability of the domestic industry improved till 2012-13 and thereafter declined sharply. However, the return on capital employed, which was extremely low in the base year, has improved.

#### Potential impact

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Cost of sales	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	99	96	96
Selling price (without excise exemption)	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	116	114	115
Profit/( Loss)	Rs./CBM	(***)	(***)	(***)	(***)
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	(100)	(27)	(21)	(15)
Profit/( Loss)	Rs.Lacs	(***)	(***)	(***)	(***)
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	(100)	(38)	(34)	(24)
Cash Profit	Rs.Lacs	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	(100)	7	25	32
PBIT	Rs.Lacs	(***)	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(70)	(86)	(93)
ROCE	%	(0-10)%	0-10%	0-10%	0-10%
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	(100)	52	64	78

127. The above data indicates that if the excise duty exemption was not available the domestic industry would have been in significant losses and the return on capital employed would have been too low to sustain the industry. Therefore, if the import price lines hold at the level in the POI and the excise exemption is withdrawn, assuming that the costs of the domestic industry remains at the similar levels, the likely domestic selling prices will lead to significant financial losses for the domestic industry and return on investment will be un-remunerative.

#### (d) Actual and potential impact on Employment and Wages

128. The trends of employment, productivity and wages of the domestic industry are as follows:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
No of Employees	Nos	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	279	463	463
Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	155	263	252
Wages per unit	Rs./CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	105	157	150

129. The above data indicates that the employment levels have improved after base year as the new unit of Rushil has come into production in 2012-13, and thereafter remained at same levels Wages have increased during the injury

investigation period as production capacity and employment has increased during this period. Per employee productivity has declined during this period.

**(e) Actual and potential impact on Growth:**

130. The data in the earlier section indicates that production and sales of the domestic industry has marginally declined during the POI after positive growth in the previous periods. Profitability also follows a similar trend, despite the fact that the major constituent of the domestic industry enjoys excise duty exemption. Therefore, the potential growth of the domestic industry in a scenario of lapse of exemption would be significantly negative.

**(f) Actual and potential impact on inventories**

131. The inventory position of the domestic industry indicates that in spite of healthy demand in the country the average stock of the petitioners has increased significantly throughout the injury period apparently due to the price pressure of dumped imports.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Average Stock	CBM	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	290	753	958

\*POI: Oct'13- Sept'14

**(g) Actual and potential impact on productivity.**

132. The opposing interested parties have argued that performance of the domestic industry is impacted by decline in its productivity. The productivity of the domestic industry has been examined as under. The data shows that the daily productivity has improved because of addition of new unit during the POI. However, per employee productivity because of increase in employment level in the new unit which is semi-automatic and engages more manual labour.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI
Productivity per day	CBM/Day	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	158	167	168
Productivity per employees	CBM/Nos	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	53	36	36

**(h) Actual and potential impact ability to raise capital investments**

133. The Authority notes that substantial investment has been made by one of the constituents of the domestic industry during the injury investigation period leading to capacity addition. Another domestic producer is also in the process of setting of a unit in Andhra Pradesh but the progress has been slow. However, actual and potential profitability of the industry in the subject goods indicates that in the present scenario ability of the industry to make further investment in the product concerned seems to have been significantly impacted.

**(i) Level of dumping & dumping margin**

134. The dumping margins as an indicator of potential injury to the domestic industry indicates that margins of injury from each of the subject countries are above *de minimis* and significant except one producing exporter from Vietnam as recorded earlier.

**H.5 Conclusion on injury**

135. The above examination indicates that the imports from the subject countries are entering the Indian market at significant volumes at dumped prices and the imports have increased significantly during the injury investigation

period. The volume of imports and the prices at which they are being exported from the subject countries are causing both volume and price impact on the domestic industry through their price undercutting and price underselling effects. The production and sales increased upto the previous year and thereafter shows significant declining trend. The performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profits, return on investments, cash profits and inventories have piled up. The analysis also shows that the potential impact of the dumped imports would be significantly adverse on the domestic industry once the excise duty exemption benefit is withdrawn. Therefore, the Authority concludes that actual and potential impact of the dumped imports on the domestic industry is adverse and the domestic industry has suffered material injury.

## H.6 Injury margins

136. The non-injurious price of the domestic industry has been determined as per the principles laid down in Annex-III to the Anti dumping Rules. Landed prices of imports from various countries have been compared with the non-injurious price so determined for determination of the injury margins of the dumped goods imported from the subject countries. The data indicates that the landed prices of imports from the subject countries are substantially below the non-injurious prices calculated for the domestic industry. The injury margins so determined are as follows:

Country/Producer	Exporter	NIP US\$/CBM	Landed Value US\$/CBM	IM US\$/CBM	IM %
<b>Vietnam</b>					
M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	***	***	***	20-30%
	M/s Kim Tin Trading Co. Ltd.	***	***	***	30-40%
M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam	M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam	***	***	***	15-25%
MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company	MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company	***	***	***	10-20%
Any other than above		***	***	***	35-45%
<b>Indonesia</b>					
M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia	M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia	***	***	***	15-25%
PT Hijau Lestari Raya Fibreboard	PT Hijau Lestari Raya Fibreboard	***	***	***	20-30%
Any other than above		***	***	***	20-30%

## I. Causal Link and Non-Attribution Analysis

137. The above analysis, as above, indicates that the performance of the domestic industry has deteriorated during the injury investigation period and the domestic industry has suffered material injury. However, as recorded earlier, the interested parties have strongly argued that the injury, if any, suffered by the domestic industry is on account of other factors. The domestic industry, on the other hand, has argued that the injury suffered is on account of dumped imports from various sources.

138. The Authority notes that it is important to establish whether the dumped imports, through their volume and price effects, are affecting the performance of the domestic industry, without attributing the injury caused by the other factors to the dumped imports. The examination in the previous section indicates that the dumped imports have significant adverse volume impact on the domestic industry. Therefore, there is a positive causal link between the dumped imports and the injury suffered by the domestic industry. Having established that, the Authority has examined other mandatory parameters to see if other factors, other than the dumped imports from the subject countries, are the cause of injury to the domestic industry as has been argued by the interested parties. In this context the following mandatory factors have been examined along with the factors brought out by the interested parties in their various submissions, as follows:

**i. Volume and prices of imports from other sources**

139. The Authority notes that imports of the subject goods from China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka are currently attracting anti-dumping duties and import from these countries have significantly reduced. The only other country having significant import of MDF is New Zealand. But as recorded earlier, imports from New Zealand are of different types and the imports and not at dumped prices. Therefore, imports from other sources have not impacted the domestic industry. The Authority notes that one of the major producers of the subject goods has presence in many countries, including the subject countries. Earlier duties were imposed on this producing exporter from some of these countries. However, after imposition of duties against these countries there has been reduction of exports from those countries whereas exports of the producing exporters from the subject countries have increased significantly.

**ii. Contraction in Demand and / or change in pattern of consumption**

140. The data on domestic demand and consumption indicates that there is a healthy growth in demand for the subject goods during the injury investigation period with a marginal dip in the POI. No information has been provided by any interested party to show any change in consumer preferences for any competing or substituting products. In fact, increase in demand indicates increasing consumer preference for this product. Therefore, demand or change in consumer preferences are not factors affecting the domestic industry.

**iii. Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

141. The Authority notes that there are few other domestic producers in the domestic market and they have increased their production and sales during this period. The interested parties have argued that the injury suffered by the domestic industry is on account of *inter se* competition between the domestic industry and the other producers. The domestic industry has argued that some of the domestic producers have gone out of production in the recent past due to dumping. The new plants that have come up during the injury investigation period have ramped up their production. But there is no *inter se* competition between the domestic industry and these producers. The Authority notes that as per the information available few domestic producers of the subject goods i.e., M/s Nuchem Limited, Bajaj Eco-Tec Products Limited have ceased producing the like product and Shirdi Industries Limited has been referred to BIFR. Mangalam and Shirdi Industries have practically become sick and gone out of production. Only major producer now is Balaji Action Buildwell, which has ramped up its production during this period. No information has been provided by any interested party to show that there is any significant competition between these producers to seriously affect the performance of the domestic industry. There is no trade restriction for the subject goods and goods are being freely imported and traded in the domestic market. Therefore, trade restrictive practices or unfair competition within India could not be held to be the cause of injury to the domestic industry.

**iv. Development in technology**

142. The Authority notes that there are only two technology providers for production of the subject goods in the world and technology for production of products has not undergone any major change. The domestic and foreign producers use one of these technologies. Therefore, the change in technology is not a factor affecting the domestic industry.

**v. Export Performance**

143. The petitioners have not exported the product under consideration and their production is dedicated to domestic market. Therefore, the export performance is not a factor affecting the performance of the domestic industry.

144.No other factor that could have affected the domestic industry has been brought to the notice of the Authority by any contesting interested party.

#### **J. Factors establishing causal link**

145.The above examination indicates that the dumped imports from the subject countries have increased manifold during the injury investigation period after imposition of antidumping duty against few countries as recorded earlier. The dumped imports have cornered a significant portion of the domestic demand. Though the production and sale of the domestic industry has increased due to coming into production of one of the constituents of the domestic industry, the capacity utilisation remains very low because of increased imports from the subject countries. The dumped imports are significantly undercutting and underselling the prices of the domestic industry resulting in decline in actual and potential profitability and return on investment over the injury investigation period. There is no other factor that could have significantly affected the performance of the domestic industry. Therefore, the Authority concludes that domestic industry has suffered material injury due to the volume and price effects of the dumped imports from the subject countries.

#### **K. Indian industry's interest & Other issues**

146.The Authority notes that. purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority further notes that the subject goods are used in the furniture and construction industry. Therefore, survival of the domestic producers, in a fair market environment, is essential, keeping in view the general growth of the economy, growing demand for the product and employment potential of the sector. Imposition of antidumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers. Therefore, the interests of the user industry and consumers will not be significantly affected if anti-dumping duties are imposed on this product.

#### **L. Conclusion and Recommendations**

147.The Authority notes that this investigation was initiated and notified to all interested parties in accordance with the provisions of the Antidumping Rules and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information and verifiable evidence on various aspects of dumping, injury and causal link for determination of degree and extent of dumping and injury. Having conducted the investigation as per the procedure prescribed and having established that dumping has taken place from the subject countries and the domestic industry has suffered material injury on account of the dumped imports, the Authority considers it necessary and appropriate to recommend imposition of definitive duties on imports of subject goods, from the subject countries, in the form and manner described hereunder:

148.Having regard to the lesser duty rules followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duties equal to lesser of margin of dumping and margin of injury so determined in this finding, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duties equal to the amount indicated in Col.8 of the duty table below is recommended to be imposed, for a period of five years from the date of its imposition, by a notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

**Duty Table**

SN	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Countries of Origin	Countries of Export	Producer	Exporter(s)	Duty Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	44111300 and 44111400	Plain Medium Density Fibre Board (MDF) having thickness of 6mm and	Vietnam	Any	M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	Nil	Cubic meter	US\$

		above, excluding laminated boards							
2	-Do-	-Do-	Vietnam	Any	M/s Kim Tin MDF Joint Stock Company	M/s Kim Tin Trading Co. Ltd.	Nil	-Do-	-Do-
3	-Do-	-Do-	Vietnam	Any	M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam	M/s. VRG Dongwha MDF Joint Stock Company, Vietnam	15.95	-Do-	-Do-
4	-Do-	-Do-	Vietnam	Any	MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company	MDF VRG Quang Tri Wood Joint Stock Company	14.84	-Do-	-Do-
5	-Do-	-Do-	Vietnam	Any	Any other than above		63.99	-Do-	-Do-
6	-Do-	-Do-	Any, other than the countries attracting antidumping duties	Vietnam	Any	Any	63.99		
7	-Do-	-Do-	Indonesia	Any	M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia	M/s PT Sumatera Prima Fibreboard, Indonesia	42.38	-Do-	-Do-
8	-Do-	-Do-	Indonesia	Any	PT Hijau Lestari Raya Fibreboard	PT Hijau Lestari Raya Fibreboard	14.71	-Do-	-Do-
9	-Do-	-Do-	Indonesia	Any	Any other than above		64.35	-Do-	-Do-
10	-Do-	-Do-	Any, other than the countries attracting antidumping duties	Indonesia	Any	Any	64.35	-Do-	-Do-

### M. Further Procedures

149. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal (CESTAT) in accordance with the relevant provisions of the Act.
150. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and the Rules and Public Notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

A. K. Bhalla, Addl. Secy. & Designated Authority